

---

56 वें 56<sup>th</sup>  
राष्ट्रीय फ़िल्म National Film  
पुरस्कार Awards  
**2008**

---



फ़िल्म समारोह निदेशालय  
Directorate of Film Festivals

## संपादक

भूपेंद्र कैथोला

Editor

Bhupendra Kainthola

## समन्वय

मंजु खन्ना

Coordination

Manju Khanna

## उत्पादन

ए. के. सिन्हा

Production

A.K. Sinha



फिल्म समारोह निदेशालय के लिए विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आकल्पित और प्रकाशित तथा ब्रजबासी आर्ट प्रेस लिमिटेड, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित

Produced by the Directorate of Advertising and Visual Publicity, Ministry of Information Broadcasting, Government of India, for the Directorate of Film Festivals, Printed at Brijbasi Art Press Ltd., New Delhi

No. : 2/20/2009 PP-I

1600 Copies

March 2010

**निर्णायक मंडल 1 JURY MEMBERS**

दादा साहेब फाल्के पुरस्कार 1 ABOUT DADASAHEB PHALKE AWARD

दादा साहेब फाल्के पुरस्कार विजेता-2008 4 Dadasaheb Phalke Award Winner 2008

पिछले वर्षों के दादा साहेब फाल्के पुरस्कार विजेता 6 Dadasaheb Phalke Award – Past Recipients

**कथाचित्र पुरस्कार 9 AWARDS FOR FEATURE FILMS**

सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार 14 Best Feature Film

निर्देशक के सर्वोत्तम प्रथम कथाचित्र के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार 16 Indira Gandhi Award for the Best First Film of a Director

स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वोत्तम लोकप्रिय फिल्म 18 Best Popular Film Providing Wholesome Entertainment

राष्ट्रीय एकता के लिए सर्वोत्तम कथाचित्र का नर्गिस दत्त पुरस्कार 20 Nargis Dutt Award for Best Film on National Integration

पारिवारिक मूल्यों पर सर्वोत्तम फिल्म 22 Best Film on Family Values

सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम फिल्म 24 Best Film on Social Issues

पर्यावरण संरक्षण/अनुरक्षण पर सर्वोत्तम फिल्म 26 Best Film on Environment Conservation/Preservation

सर्वोत्तम बाल फिल्म 28 Best Children's Film

सर्वोत्तम कार्टून फिल्म 30 Best Animation Film

सर्वोत्तम निर्देशन 32 Best Direction

सर्वोत्तम अभिनेता 34 Best Actor

सर्वोत्तम अभिनेत्री 36 Best Actress

सर्वोत्तम सह अभिनेता 38 Best Supporting Actor

सर्वोत्तम सह अभिनेत्री 40 Best Supporting Actress

सर्वोत्तम बाल कलाकार 42 Best Child Artist

सर्वोत्तम पार्श्व गायक 44 Best Male Playback Singer

सर्वोत्तम पार्श्व गायिका 46 Best Female Playback Singer

सर्वोत्तम छायांकन 48 Best Cinematography

सर्वोत्तम पटकथा 50 Best Screenplay

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन 52 Best Audiography

सर्वोत्तम संपादन 54 Best Editing

सर्वोत्तम कला निर्देशन 56 Best Art Direction

सर्वोत्तम वेशभूषा कलाकार 58 Best Costume Designer

सर्वोत्तम मेक-अप कलाकार 60 Best Make-up Artist

सर्वोत्तम संगीत निर्देशन 62 Best Music Direction

सर्वोत्तम गीत	64	Best Lyrics
निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार	66	Special Jury Award
सर्वोत्तम विशेष प्रभाव	68	Best Special Effects
सर्वोत्तम नृत्य निर्देशन	70	Best Choreography
सर्वोत्तम असमिया कथाचित्र	72	Best Assamese Film
सर्वोत्तम बांगला कथाचित्र	74	Best Bengali Film
सर्वोत्तम हिन्दी कथाचित्र	76	Best Hindi Film
सर्वोत्तम कन्नड कथाचित्र	78	Best Kannada Film
सर्वोत्तम मलयालम कथाचित्र	80	Best Malayalam Film
सर्वोत्तम मराठी कथाचित्र	82	Best Marathi Film
सर्वोत्तम तमिल कथाचित्र	84	Best Tamil Film
सर्वोत्तम तेलुगु कथाचित्र	86	Best Telugu Film
सर्वोत्तम अंग्रेजी कथाचित्र	88	Best English Film
सर्वोत्तम कोकबोरोक कथाचित्र	90	Best Kokborok Film
सर्वोत्तम तुलु कथाचित्र	92	Best Tulu Film
पुरस्कार जो नहीं दिए गए	94	Awards Not Given
<b>गैर कथाचित्र पुरस्कार</b>	<b>95</b>	<b>AWARDS FOR NON-FEATURE FILMS</b>
सर्वोत्तम गैर कथाचित्र	98	Best Non-Feature Film
निर्देशक का सर्वोत्तम प्रथम गैर कथाचित्र	100	Best First Non-Feature Film of a Director
सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय/मानवजातीय फिल्म	102	Best Anthropological/Ethnographic Film
सर्वोत्तम जीवनी फिल्म	104	Best Biographical /Historical/Reconstruction Film
सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फिल्म	106	Best Arts/Cultural Film
सर्वोत्तम वैज्ञानिक फिल्म	108	Best Scientific Film
सर्वोत्तम प्रोत्साहन फिल्म	110	Best Promotional Film
सर्वोत्तम कृषि फिल्म	112	Best Agriculture Film
सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम फिल्म	114	Best Film on Social Issues
सर्वोत्तम शैक्षिक/प्रेरक फिल्म	116	Best Educational/Motivational Film
सर्वोत्तम अन्वेषण/साहसिक फिल्म	118	Best Exploration/Adventure Film
सर्वोत्तम खोजी फिल्म	120	Best Investigative Film
सर्वोत्तम कार्टून फिल्म	122	Best Animation Film
निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार	124	Special Jury Award
सर्वोत्तम लघु कल्पित फिल्म	126	Best Short Fiction Film
परिवारिक मूल्यों पर सर्वोत्तम फिल्म	128	Best Film on Family Values

सर्वोत्तम निर्देशन	130	Best Direction
सर्वोत्तम छायांकन	132	Best Cinematography
सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन	134	Best Audiography
सर्वोत्तम संपादन	136	Best Editing
सर्वोत्तम संगीत निर्देशन	138	Best Music Direction
सर्वोत्तम प्रकथन/वायस ओवर	140	Best Narration/Voice Over
विशेष उल्लेख	142	Special Mention
<b>सिनेमा पर सर्वोत्तम लेखन पुरस्कार</b>	145	<b>AWARDS FOR BEST WRITING ON CINEMA</b>
सर्वोत्तम सिनेमा पुस्तक	148	Best Book on Cinema
विशेष उल्लेख	150	Special Mention
सर्वोत्तम फिल्म समीक्षक	152	Best Film Critic
<b>सारांश फीचर फिल्म</b>	154	<b>SYNOPSIS FEATURE FILMS</b>
आई कोट नाई	155	Aai Kot Nai
अंतहीन	156	Antaheen
बाईस्कोप	157	Bioscope
फैशन	158	Fashion
फिराक	159	Firaaq
गग्गरा	160	Gaggara
गंध	161	Gandha
गुब्बाघिगालु	162	Gubbachigalu
हरिशचंद्राची फैक्टरी	163	Harishchandrachi Factory
जिआंता भूत	164	Jainta Bhoota
जोध्या अकबर	165	Jodhaa Akbar
जोगवा	166	Jogva
लैंड गोल्ड वुमेन	167	Land Gold Women
लिटल जीजू	168	Little Zizou
मोन जई	169	Mon Jai
मुम्बई मेरी जान	170	Mumbai Meri Jaan
नान कडावुल	171	Naan Kadavul
1940 लूकाग्रामम	172	1940 Lookagramam
ओए लक्की! लक्की ओए!	173	Oye Lucky ! Lucky Oye
रोडसाइड रोमियो	174	Roadside Romeo
रॉक ऑन	175	Rock On

शोब चरित्रो काल्पोनिक	176	Shob Charitro Kalponik
थैंक्स मां	177	Thanks Maa
तिरक्कदा	178	Thirakkada
वारणम आयीरम	179	Veranam Airam
विमुक्ति	180	Vimukthi
ए वेडनेसडे	181	A Wednesday
यारवंग	182	Yarwng
<b>साराश गैर फीचर फिल्म</b>	<b>183</b>	<b>SYNOPOSES NON-FEATURE FILMS</b>
ए.एफ.एस.पी.ए 1958	184	AFSPA 1958
अप्पुविन नायगन -स्पॉटी (माई हीरो)	185	Appuvin Nayagan- Spotty (My Hero)
दि असेसिनेशन ऑफ राजीव गांधी-ए रिकस्ट्रक्शन	186	The Assassination Of Rajiv Gandhi – A Reconstruction
बोलीआए पिताएर सोहोकी सूतल	187	Boliay Pitaier Sohoki Sootal
बुरु गारा	188	Buru Gaara
बिल्डन आफ द पायर	189	Children Of The Pyre
डिस्टेंट रबलिग्स	190	Distant Rumbings
दि फीमेल न्यूड	191	The Female Nude
कर्ण मोचम	192	Karna Motcham
दि लैंड ऑफ रुपशुपास	193	The Land Of Rupshupas
लॉस्ट एंड फाऊंड	194	Lost And Found
नरमीन	195	Narmeen
पोलियो वर्सिस पोलियो विकटिम्स	196	Polio Vs. Polio Victims
द प्रिंस एंड दि क्रौन ऑफ स्टोन्स	197	The Prince And The Crown Of Stones
साना कीथेल	198	Sana Keithel
शिगनाबा	199	Shingnaba
स्टेशन्स	200	Stations
थ्री ऑफ अस	201	Three Of Us
ट्रिप	202	Trip
विट्ठल	203	Vitthal
वेन दिस मैन डाईज	204	When This Man Dies

निर्णायक मंडल

---

**Jury Members**



फीचर फिल्म : निर्णायक मंडल

JURY : FEATURE FILMS



शाजी एन करुण  
Shaji N. Karun



रोशन तनेजा  
Roshan Taneja



एच.एम रामचंद्र  
H.M. Ramachandra



नगमा  
Nagma



सत्यब्रत कालिता  
Satyabrata Kalita



नीलकांत  
Neelakanta



दिलीप घोष  
Dilip Ghosh



स्वप्न मलिक  
Swapan Mullick



सुदेश स्याल  
Sudesh Syal





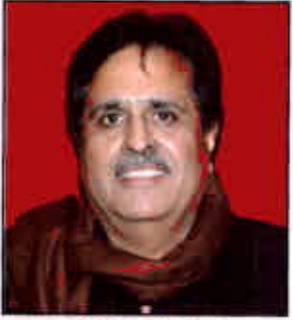
एस.के. श्रीवास्तव  
S.K. Srivastava



अर्चना  
Archana



बी. शशिकुमार  
B. Shashi Kumar



सुभाष सहगल  
Subhash Sehgal



संतोष देसाई  
Santosh Desai



श्रीलेखा मुखर्जी  
Sreelekha Mukherjee

निर्णायक मंडल : सिनेमा पर सर्वोत्तम लेखन

JURY : BEST WRITING FOR CINEMA



सुधीश पचौरी  
Sudhish Pachauri



सुनील गंगोपाध्याय (अध्यक्ष)  
Sunil Gangopadhyay



जिया-उस-सलाम  
Ziya-us Salam

गैर फीचर फिल्म : निर्णायक मंडल

JURY : NON-FEATURE FILMS



अरुणाराजे पाटिल (अध्यक्ष)  
Arunaraje Patil (Chairperson)



कृष्णेंदु बोस  
Krishnendu Bose



अनिरबन दत्ता  
Anirban Dutta



संदीप मारवाह  
Sandeep Marwah



रीना मोहन  
Reena Mohan



आर.वी रमानी  
R. V. Ramani



सरफराज सिद्दिकी  
Sarfaraz Siddiqui

दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार 2008

**Dadasaheb Phalke Award**





दुंदीराज गोविन्द फाल्के  
Dhundiraj Govind Phalke

## दादा साहेब फाल्के पुरस्कार

भारतीय सिनेमा का सर्वोत्तम पुरस्कार भारत में सिनेमा के जनक माने जाने वाले दुंदीराज गोविन्द फाल्के के नाम से सुशोभित है। 'राजा हरीश्चन्द्र' से फिल्मी जीवन का प्रारंभ करने वाले दादासाहेब फाल्के ने 1932 तक, 19 वर्षों में 95 फिल्मों तथा 26 लघु फिल्मों बनाई।

दादासाहेब फाल्के के सम्मानार्थ यह नामित पुरस्कार सन् 1969 में पहली बार प्रसिद्ध अभिनेत्री तथा स्टूडियो तंत्र की प्रतिपादक देविका रानी को प्रदान किया गया। प्रत्येक वर्ष भारतीय सिनेमा के उत्पादन और विकास के लिए आजीवन काम करने वाले व्यक्ति को इस पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

### ABOUT DADASAHEB PHALKE AWARD

The prestigious and top most award of Indian cinema is named after the father of Indian cinema, Dhundiraj Govind Phalke. He is credited with making the first ever Indian feature film in 1913. Beginning with *Raja Harishchandra*, Dadasaheb Phalke, as he was popularly called, went on to make 95 movies and 26 short films in a span of 19 years until 1932.

To honour this enterprising film personality, the Dadasaheb Phalke award was introduced in 1969. The award recognises the contribution of film personalities to the development of Indian cinema. The first award was presented to the renowned actress and pioneer of studio system in India, Devika Rani.



## वी.के मूर्ति

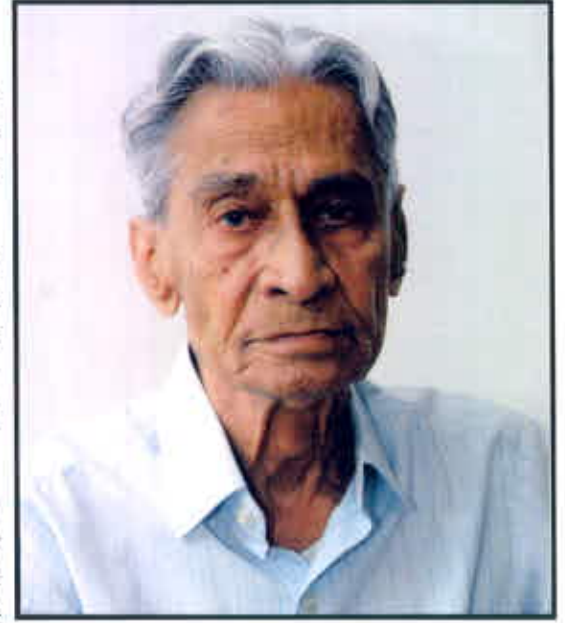
वी.के मूर्ति गुरुदत्त की कालजयी फिल्मों के जादूगर छायाकार के रूप में प्रसिद्ध रहे हैं। फिल्मों के छायांकन के क्षेत्र में उन्होंने अनेक प्रयोग किए और भारतीय सिनेमा के तकनीकी विकास में ऐतिहासिक भूमिका निभाई। भारतीय सिनेमा का यह सर्वोच्च सम्मान प्राप्त करने वाले वे पहले छायाकार हैं।

1923 में जन्में वी.के. मूर्ति ने 1946 में एस. जे पोलिटेक्निक से छायांकन में डिप्लोमा प्राप्त किया। वे इस संस्थान के पहले बैच के छात्र थे। छात्र जीवन में उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में भी भाग लिया और 1943 में वे जेल गए। उन्हें स्वतंत्रता सेनानी के रूप में पेंशन भी मिलती है। उन्हें बचपन से ही संगीत का शौक था। उन्होंने वायलिन बजाने की बाकायदा शिक्षा ली। शुरु में वे बच्चों को वायलिन सिखाकर ही अपना गुज़ारा करते थे।

वी.के मूर्ति वास्तव में फिल्मी हीरो बनने के लिए पहली बार बंगलौर से मुम्बई गए थे। कुछ दिन तक स्टुडियो के चक्कर लगाने के बाद भी उन्हें काम नहीं मिला तो वे पढ़ाई पूरी करने के लिए बंगलौर लौट गए। सिनेमाटोग्राफी का डिप्लोमा लेने के पश्चात् उन्होंने छायाकार का कैरियर अपनाने का निश्चय किया। 1948 में उन्हें

पहली बार जयंत देसाई की फिल्म महाराणा प्रताप में द्रोणाचार्य के सहायक छायाकार के रूप में काम करने का मौका मिला। इसके बाद चार-पांच साल तक उन्होंने फाली मिस्त्री के सहायक के तौर पर काम किया। उसी दौरान उनकी मुलाकात गुरुदत्त से हुई और उनका जीवन ही बदल गया। वी.के. मूर्ति *बाजी* फिल्म के सहायक छायाकार थे और मुख्य कैमरामैन गुरुदत्त की इच्छा के अनुसार एक कठिन शाट नहीं ले पा रहे थे। मूर्ति ने उनसे वह शाट शूट करने की अनुमति मांगी। उनके काम से गुरुदत्त बहुत प्रभावित हुए और उन्हें अपने साथ काम करने का अनुरोध किया। तब से उन्होंने गुरुदत्त की सभी फिल्मों का छायांकन किया और वे एक दूसरे के पूरक बन गए। इस जोड़ी ने हिंदी सिनेमा को *कागज के फूल*, *प्यासा*, *चौदहवीं का चांद*, *सी.आई.डी.*, *साहिब बीवी और गुलाम*, *आर-पार*, *जिंदी*, *जैसी अमर* फिल्में दीं। दोनों का आपसी रिश्ता इतना गहरा था कि जब तक गुरुदत्त जीवित रहे वी.के मूर्ति ने किसी अन्य निदेशक के लिए काम नहीं किया। *चौदहवीं का चांद हो या अफताब हो*, गीत का उनका फिल्मांकन काफी सराहा गया। *कागज के फूल* भारत की पहली सिनेमास्कोप फिल्म थी। बाद में रंगीन फिल्म टेक्नोलॉजी को नया रूप देने के लिए भी उन्होंने कई प्रयोग किए। उन्हें 1959 में *कागज के फूल* और 1962 में *साहिब बीवी और गुलाम* के लिए फिल्म फेयर पुरस्कार मिला।

वी.के मूर्ति ने कमाल अमरोही की अमर फिल्म *पाकीज़ा* (1971) और *रज़िया सुल्तान* (1983) का छायांकन किया। श्याम बेनेगल के प्रसिद्ध टी वी कार्यक्रम *भारत एक खोज* का छायांकन भी उन्होंने किया। 1993 में उन्होंने कन्नड फिल्म *हूवा हल्लु* के कैमरामैन के रूप में काम किया। 2005 में उन्हें एम्सटर्डम में आइफा के लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार से नवाजा गया। अपने फिल्मी कैरियर में उन्होंने छायांकन के नए मानदंड कायम किए। वी.के. मूर्ति छायाकारों की कई पीढ़ियों के प्रेरणा स्रोत रहे हैं और आगे भी बने रहेंगे। लगभग 5 दशकों तक मुम्बई में रहने के बाद 2001 में वे बंगलौर में बस गए। फिल्म जगत में इतनी ऊंचाइयां छूने और ख्याति प्राप्त करने के बाद भी वी.के. मूर्ति सचमुच विनम्रता की मूर्ति बने रहे। उनका मानना है कि यदि उन्हें गुरुदत्त के साथ काम करने का अवसर नहीं मिला होता तो वे कभी कैमरे के जादूगर नहीं बन पाते। यही कारण है कि उन्होंने दादा साहब फाल्के पुरस्कार भी गुरुदत्त को समर्पित किया है।



## V.K. Murthy

The hallmark of any great artist is that his work comes with a distinctly identifiable stamp, a signature style. No wonder you can spot a V.K. Murthy shot in any gallery of diverse images. Be it the Christ like framing of the poet Vijay in *Pyasa* (1957), the soft-focus close ups of Waheeda Rehman in *UDD* (1956) or that shaft of light entering the studio floor in the song *Wagt ne kiya kya haseen sitam* in *Kaagaz Ke Phool* (1959)—Murthy crafted the most breathtaking, iconic imagery in Indian cinema.

These sequences were beautiful, artistic compositions in their own right but signified something deeper. They were the carriers of the profound themes of the films, brought out the emotional intensity of the stories and the complexities of the characters and the situations they were caught in. It was Murthy's camera work that gave these films that special edge.

Murthy also helped revolutionise the filming technique and technology. He shot India's first cinemascope film, *Kaagaz Ke Phool*. His innovative camera techniques, his use of the play of light and shade are text book lessons for any budding cinematographer. At times he achieved stunning results with simple tools. Take the classic *Wagt ne kiya* shot. It is said that Murthy was inspired by a light boy who was reflecting light with a mirror, so he used a pair of ordinary mirrors to create that legendary parallel beam. It won him the Filmfare Best Cinematographer Award for 1959. He got the same award in 1962 for *Sahib Bivi Aur Ghulam*. The hunger to absorb the latest developments in the field of cinematography took him to London for a training stint in colour films. It was then that he worked with the crew of the famous Hollywood film, *The Guns of Navarone* (1961).

Murthy was born in Mysore in 1923. He got his Diploma in Cinematography from Sri Jayachamarajendra Polytechnic in Bangalore in 1946. He is best known as Guru Dutt's regular cameraman. Some of Murthy's best work is found in Guru Dutt's movies. Both brought out the best in each other and Murthy never worked with any other directors as long as Dutt was alive. Guru Dutt had the vision and Murthy had the ability to bring it alive on screen.

But few would know that Murthy got a break in Hindi films by doing a chance shot for Guru Dutt in *Baazi*. Murthy said in an interview: "I met Guru Dutt for the first time while working for the Famous Studios as an assistant cameraman. It all began when I suggested a difficult shot, which Guru Dutt said his cameraman would not be able to execute. I requested him to ask his cameraman to allow me to attempt the shot. Guru Dutt allowed me to make two or three attempts. But I managed the shot in the first take itself. After pack-up, he asked me to work for the film. I told him that it was not right to desert a cinematographer in the midst of a film and I would work with him on his next film."

After Guru Dutt passed away Murthy worked with Kamal Amrohi on his masterpieces, *Pakeezah* (1971) and *Razia Sultan* (1983) and with Pramod Chakravarthy and Govind Nihalani. He moved back to Bangalore from Mumbai in 2001 to lead a retired life. For his contribution to the Indian film industry he was awarded the IIFA Lifetime Achievement Award in Amsterdam in 2005.

Cinema is an audio-visual medium, it's all about sight and sound. It's about telling a story, evoking feelings and firing the audience's thoughts through a tapestry of images. No doubt then that one the most significant contributors in the making of a movie is the one who captures it with the camera on film. However, in a star-driven industry, cinematographers rarely get their due, they often don't get acknowledged as creative artistes but as nuts-and-bolts technicians. It was V.K. Murthy who got cinematography its rightful recognition as an art form and helped turn the cinematographer into as much a star of the show as the actors. He is a true magician of moving images.

पिछले वर्षों के दादा साहेब फाल्के पुरस्कार  
Dadasaheb Phalke Award – Past Recipients



Devika Rani Roerich



B. N. Sircar



Prithviraj Kapoor



Pankaj Mullick



Sulochana (Ruby Myers)



B.N. Reddy



Dhiren Ganguly



Kanan Devi



Nitin Bose



R. C. Boral



Sohrab Modi



P. Jairaj



Naushad Ali



L.V. Prasad



Durga Khote



Satyajit Ray





V. Shantaram



B. Nagi Reddy



Raj Kapoor



Ashok Kumar



Lata Mangeshkar



A. Nageswara Rao



B.G. Pendharkar



Dr Bhupen Hazarika



Majrooh Sultanpuri



Dilip Kumar



Dr Rajkumar



Shivaji Ganesan



Kavi Pradeep



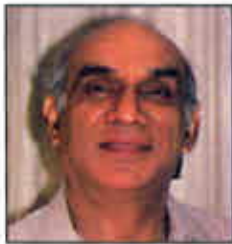
B.R. Chopra



Hrishikesh Mukherjee



Asha Bhosle



Yash Chopra



Dev Anand



Mrinal Sen



Adoor Gopalakrishnan



Shyam Benegal



Tapan Sinha



Manna Dey

फीचर फिल्म पुरस्कार

---

Awards for Feature Films



## CINEMA 2008 : AN OVERVIEW

– By Santosh Desai



Middle cinema, that unappetizing description of films that tell enjoyable stories with texture and nuance while making us reflect, is alive and well. Barring a few films on either margins which were either irredeemably superficial or unspeakably arcane, most films on display tried to strike deeper and more resonant chords. Not all films succeeded in doing so, of course, but at an aggregate level, there was a large body of meaningful and enjoyable work that came out in 2008.

The other re-assuring aspect of the body of work was the diversity of tonalities and voices. The fear that the hyper-stimulated representations of Hindi cinema might somehow have colonized other voices turned out to be false. India's national cinema reflected India in all its vivid contrasts and contradictions, as it spoke simultaneously in a riot of dialects and dictions and showed us landscapes rich with texture and emotion.

Thematically, a large range of subjects was covered, as one would expect. The individual's quest to make sense of a rapidly changing world was a subject that made its appearance in a variety of ways. As India moves to a new order of engagement with media and the market, its seismic footprint is creating tremors that can be felt both at the individual and collective level. Films like *Janta Bhoota*, *Oye Lucky ! Lucky Oye !*, *Gabricha Paus*, *Fashion*, *Aai Kot Nai & Mon Jai* explored different dimensions of this engagement from their own vantage points. The role of tradition, both dying and undying, in our lives is another common concern which expressed in both the individuals' struggle to express themselves when bound in a tradition they cannot comprehend (*Jogva*, 1940 *Lookgramam*) and the emotions that surround the demise of a once strong tradition (*Marmabandh*, *Gaggara*).

The other thing to note was the number of films which attempted to create a sense of history, something that has never been a strong feature of India's engagement with its own past. If *Firaaq* focused on the after effects of a recent tragedy, *Harishchandrachi Factory* gave us a stylized account of the birth of Indian cinema while *Rang Rasiya* reconstructed the life and times of Raja Ravi Varma

with broad brush strokes. Each of these accounts created their visions of what constitutes history, but were one in their concern with documenting an aspect of our past.

Strong female characters were a hallmark of the 2008 films—across the board, we saw women play pivotal characters that determined not only their own lives but often shaped those of others around them. In some ways the narrative of change and its impact on India was represented through its women as they alternated between strength, desire, vulnerability and self-assurance as they sought to weave in the changes in the macro context into their own everyday lives.

Overall, as an account of an India that is enjoying, battling, subverting, wheedling with and smarting under change, the 2008 repertoire of films did more than adequate justice. In its choice of subjects, range of characters, diversity of landscapes and variety of tones and textures, it showed us India in all its magnificent and bewildering complexity.

*Ad-guru, columnist and writer, Santosh Desai is a Member of Jury (Feature Films) 56th National Film Awards 2008.*

*The views expressed in this article are not necessarily subscribed to by other Members of the Jury or by Directorate of Film Festivals.*





## सर्वोत्तम फीचर फिल्म

### अंतहीन (बांगला)

निर्माता स्क्रीनप्ले फिल्म्स प्रा० लि० और जीत बैनर्जी को स्वर्ण कमल और 2,50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक अनिरुद्ध राय चौधरी को स्वर्ण कमल और 2,50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

शहरी जीवन में बदलते मानवीय संबंधों के चित्रण में तकनीकी उपायों की संतुलित और संगीतमय प्रस्तुति के लिए

## BEST FEATURE FILM

### ANTAHEEN (Bengali)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs 2,50,000/- to Producers **Screenplay Films Pvt Ltd & Jeet Banerjee**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs 2,50,000/- to Director **Aniruddha Roy Chowdhury**

## CITATION

*For lyrical blend of technical devices in the right proportion to depict shifting human relationships in an urban scenario.*



## स्क्रीनप्ले फिल्मस प्रा0 लि0

स्क्रीनप्ले फिल्मस प्रा0 लि0 ओपस कम्युनिकेशन एंड गेमप्लान कम्पनी की सहायक कम्पनी है। इस समय यह फिल्मों के साथ-साथ टेलीविजन कार्यक्रम भी तैयार कर रही है। इस कम्पनी की पहली फीचर फिल्म *अनुरनन* 2006 में आई जिसका निर्देशन अनिरुद्ध राय चौधरी ने किया। *अंतहीन* स्क्रीनप्ले फिल्मस का दूसरा कथाचित्र है।

## जीत बैनर्जी

जीत बैनर्जी स्क्रीनप्ले फिल्मस प्रा0 लि0 के संस्थापकों में से हैं। वे खेलों और खेल संबंधी कार्यक्रमों का आयोजन करने वाली संस्था गेमप्लान के निदेशक भी हैं। उन्हें विभिन्न विषयों की फिल्मों के निर्माण का 18 वर्ष का अनुभव है। उन्होंने दूरदर्शन तथा उपग्रह चैनलों के लिए धारावाहिकों, वृत्तचित्रों और धारावाहिकों का निर्माण भी किया है।

## अनिरुद्ध राय चौधरी

अनिरुद्ध राय चौधरी 1987 से फिल्म निर्माण से जुड़े रहे हैं। अपने कैरियर की शुरुआत उन्होंने टेलीविजन कार्यक्रम बनाने से की। बाद में वे टेलीविजन के लिये विज्ञापन फिल्मों का निर्माण और निर्देशन करने लगे। *अनुरनन* निर्देशक के रूप में उनकी पहली फीचर फिल्म थी जिसे 1907 में सर्वोत्तम बंगला कथाचित्र का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। उसी साल उसे निर्देशक की पहली फिल्म के लिए अरविंदन पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। सांताक्रुज फिल्म समारोह 2007 में वे उदीयमान निर्देशक के पुरस्कार से सम्मानित हुए।



## Screenplay Films

Screenplay Films Private Limited, a film production house, is an associate company of Opus Communications and Gameplan. Screenplay is currently producing feature films and software for television. Screenplay Films made its debut in feature films with the critically acclaimed, *Anuranaan - A Resonance* (2006), directed by Aniruddha Roy Chowdhury, starring Rahul Bose, Rituparna Sengupta, Raima Sen and Rajat Kapoor. *Antaheen - The Endless Wait* (2008) is Screenplay's second project.

## Jeet Banerjee

Jeet Banerjee is the director of Gameplan, an organization that deals exclusively with sports and sports related events and he is the co-founder of Screenplay Films Pvt Ltd. He has over 18 years experience in designing and producing TV commercials, product films, brand Films, corporate films, dealer films, HRD films, issue films for leading national and multinational brands, documentaries for the Govt. of India, serials, documentaries, and docu-serials for Doordarshan and other satellite channels.

## Aniruddha Roy Chowdhury

Aniruddha Roy Chowdhury has been involved in filmmaking since 1987. He began by directing and designing TV software and moved on to producing and directing TV commercials. He made his directorial debut in feature films with *Anuranaan* which won the national award for best Bengali film for 2007, the Aravindan Puruskaram for best debutant director 2007 and the best emerging director award at Santa Cruz film festival, 2007.

## निर्देशक की पहली सर्वोत्तम फिल्म का इंदिरा गांधी पुरस्कार

### ए वेडनसडे (हिंदी)

निर्माता यू.टी.वी मोशन पिक्चर्स को स्वर्ण कमल तथा 1,25,000/-रूपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक नीरज पांडेय को स्वर्ण कमल तथा 1,25,000/-रूपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

*मुंबई में सामान्य जनजीवन की सतह के नीचे पनप रहे तनाव और आम आदमी के क्षोभ की कुशल और यथार्थ अभिव्यक्ति के लिए*

## Screenplay Films

### INDIRA GANDHI AWARD FOR BEST FIRST FILM OF A DIRECTOR

#### A WEDNESDAY (Hindi)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs 1,25,000/- to Producer **UTV Motion Pictures**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs 1,25,000/- to Director **Neeraj Pandey**

#### CITATION

*For slick and searing exposure of the tension below the normal rhythm of life and the angst of the common man in Mumbai.*

## यू.टी.वी मोशन पिक्चर्स

यू.टी.वी मोशन पिक्चर्स, यूटीवी कम्पनी के कई विभागों में से एक है जो हिन्दी फिल्म उद्योग के सबसे बड़े स्टूडियो में गिना जाता है। इसने कई पुरस्कार विजेता फिल्मों का निर्माण, विपणन और वितरण विश्व स्तर पर किया है। इस कम्पनी ने नई फिल्मों के निर्माण में ही नहीं, नए ढंग की कहानियों पर भारत में फिल्म निर्माण की नई शैली भी विकसित की है। इससे देश में फिल्म उद्योग में सकारात्मक परिवर्तन आया है। यूटीवी मोशन पिक्चर्स के व्यापार के दायरे में निर्माण, विश्व स्तर पर विपणन, वितरण और अन्य फिल्म निर्माताओं से सहयोग जैसी गतिविधियां शामिल हैं। यह हिन्दी फिल्मों के साथ-साथ क्षेत्रीय फिल्मों, कार्टून फिल्मों का निर्माण भी करती है। इसने वॉल्ट डिस्नी कम्पनी के साथ फिल्मों के वितरण का विशेष समझौता भी किया हुआ है।

## नीरज पांडेय

कोलकाता में जन्मे नीरज पांडेय ने दिल्ली विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में स्नातक की डिग्री हासिल करने के बाद टेलीविजन में काम करना शुरू किया। उन्होंने विभिन्न टी वी चैनलों के लिए अनेक टेली- फिल्मों और वृत्तचित्रों का लेखन और निर्देशन किया है। *ए वेडनेसडे* उनकी पहली फीचर फिल्म है।



## UTV Motion Pictures

UTV Motion Pictures, one of UTV's many divisions, is among the largest studios of the Indian film industry with an impressive line-up of award-winning film titles that are produced, marketed and distributed worldwide. They claim to have pioneered not just newer films and story ideas, but also the very manner in which films are made in India. From novel plots and stories that one would think can never work in mainstream cinema, to pioneering the studio model in movie production, UTV claims to have led positive change in the Indian motion picture industry. UTV's Motion Pictures business spans the integrated model of creative development, production, marketing, distribution, merchandising and syndication worldwide. UTV's portfolio includes Hindi movies, regional movies, animation, international productions and co productions, besides an exclusive distribution arrangement for India with The Walt Disney Company.

## Neeraj Pandey

Born in Kolkata, Neeraj Pandey graduated in English from Delhi University and joined television. He has written and directed telefilms and documentaries for various channels. *A Wednesday* is his debut directorial venture.

लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वोत्तम फिल्म

**ओए लक्की! लक्की ओए! (हिन्दी)**

निर्माता यू.टी.वी मोशन पिक्चर्स को स्वर्ण कमल और 2,00,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक दिबाकर बैनर्जी को स्वर्ण कमल और 2,00,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

**प्रशस्ति**

*एक शुष्क विषय के विवेकपूर्ण चित्रण के लिए जो उसे मनोरंजनप्रधान स्वरूप के भीतर रहते हुए भी एकदम अलग छवि प्रदान कर देता है*

**BEST POPULAR FILM PROVIDING WHOLESOME ENTERTAINMENT**

**OYE LUCKY ! LUCKY OYE!**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs Rs 2,00,000/- to Producer **UTV Motion Pictures**

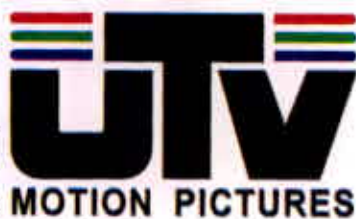
Swarna Kamal and a cash prize of Rs 2,00,000/- to Director **Dibakar Banerjee**

**CITATION**

*For its intelligent treatment of an off-beat subject that makes it different within the popular format.*

## यू.टी.वी. मोशन पिक्चर्स दिबाकर बैनर्जी

दिबाकर ने 1992 में विज्ञापन के क्षेत्र में प्रवेश किया। कई विज्ञापन एजेंसियों में काम करने के बाद उन्होंने अपनी अलग कम्पनी बनायी, जिसमें उन्होंने कई पुरस्कार विजेता विज्ञापन फिल्मों और म्यूजिक वीडियो तैयार किये। उनकी पहली फीचर फिल्म *खोसला का घोसला* बहुत लोकप्रिय हुई और आलोचकों द्वारा सराही गयी। इसे सर्वोत्तम फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार सहित अनेक पुरस्कार मिले। *ओए लक्की लक्की ओए* उनकी दूसरी फीचर फिल्म है और इसे वे पहली फिल्म की अगली कड़ी मानते हैं। इस फिल्म में दिबाकर ने दिल्ली के मध्यम वर्ग का रोचक चित्रण किया है। इन दिनों वे अपनी नई फिल्म, *लव सैंक्स एंड धोखा* पर काम कर रहे हैं। वह एक निर्माता कम्पनी चलाने के अतिरिक्त लिखते हैं, स्क्रीनिंग करते हैं और दिन में स्वप्न देखते हैं। उन्हें अगली फिल्म के लिए वित्तीय सहायता न मिलने और देर से घर पहुंचने की चिंता भी सताती है।



## UTV Motion Pictures

(For company profile, see page 17)

### Dibakar Banerjee

Since childhood Dibakar had been dreaming of making films. He joined professional advertising soon after being expelled from National Institute of Design, Ahmedabad in 1992. He worked as a copywriter and visualiser in various advertising agencies and later moved on to found his own production house, directing many award-winning commercials and music videos. His debut feature *Khosla Ka Ghosla*, managing to find a release after two years struggle, became a commercial and critical success. Today it is considered a trendsetter in the Indie film movement of India that has brought about a paradigm shift in the way movies are made and marketed in the country. The film won many awards including the National Award for Best Hindi Feature Film. *Oye Lucky Lucky Oye*, his second film was hailed as a step forward from his first, while finding a completely new cinematic style and audience. Repeating the commercial success of his first film, it has also swept the popular, technical and critics' awards of the country. Dibakar has brought his middle class upbringing in West Delhi to his films that are marked by a quirky humour, intimately observed characters peculiar to the Capital and commonplace lingo. Based in Mumbai, he divides his time between running a production house, directing commercials and features, writing, composing, sketching and daydreaming.

## राष्ट्रीय एकता संबंधी सर्वोत्तम कथाचित्र के लिए नरगिस दत्त पुरस्कार

### आई कोट नाई (असमिया)

निर्माता राजेन बोरा और मंजु बोरा को रजत कमल और 1,50,000/- रूपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक मंजु बोरा को रजत कमल और 1,50,000/- रूपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

*पूर्वोत्तर भारत की एक ज्वलंत समस्या को प्रामाणिक दृष्टि से देखने, बनावटी सीमाओं को तोड़ने और उसे एक मानवीय तथा सौंदर्यशास्त्रीय रूप देने के लिए*

## **NARGIS DUTT AWARD FOR BEST FEATURE FILM ON NATIONAL INTEGRATION**

### **AAI KOT NAI (Assamese)**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,50,000/- to Producers **Rajen Bora & Manju Borah**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,50,000/- to Director **Manju Borah**

### **CITATION**

*For its honest look at a burning problem in Northeast India, its attempt to break down artificial boundaries and giving it a human and aesthetic appeal*

## राजेन बोरा

1960 में जन्में राजेन बोरा फिल्मों में आने से पहले खेल प्रबंधन में सक्रिय रहे। उन्होंने 2000 में थाईलैंड में सीसाकेत में भारतीय महिला वॉलीबाल टीम के प्रबंधन के रूप में काम किया। 2001 में वे विएतनाम के हो-ची-मिन सिटी में आयोजित वॉलीबाल प्रतियोगिता में भी भारत की महिला वॉलीबाल टीम के चीफ आफ द मिशन रहे। *आई कोट नाई* निर्माता के रूप में उनकी पहली फिल्म है।

## मंजु बोरा

मंजु बोरा ने गुवाहाटी विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र में एम.ए किया। निर्देशक के रूप में उनकी पहली असमिया फिल्म *वैभव* 1999 में आई। उनकी अन्य फिल्में हैं, *अन्य एक यात्रा*, *आकाशीतोरार कथारे*, *लाज़* और *जॉयमति*। उन्होंने कई वृत्तचित्रों, टेलीफिल्मों और टीवी कार्यक्रमों का निर्देशन किया है। उनकी लगभग सभी फिल्मों को पुरस्कार मिले हैं। मंजू 2007 के भारत के अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह के लिये भारतीय पेनोरमा वर्ग की ज्यूरी की सदस्य थीं। वे कई अन्य फिल्म समारोहों के निर्णायक मंडल में शामिल हो चुकी हैं। वे पूर्वोत्तर क्षेत्र की अनेक सामाजिक और सांस्कृतिक संस्थाओं से जुड़ी हुई हैं। उनका एक कहानी संग्रह *बिबोक्षण मैन* 2001 में प्रकाशित हुआ।



## Rajen Bora

Born in 1960 Rajen Bora worked as manager of Indian women's volleyball team at Sisaket, Thailand in 2000. He has been the chief of the mission of Indian team at the junior women's volleyball championship at Ho-Chi-Minh City, Vietnam in 2001. *Aai Kot Nai* is his first film as a producer.

## Manju Borah

A masters in philosophy from Guwahati University, Manju Borah directed her first Assamese feature film *Baibhab* in 1999. Her other films include *Anya Ek Yatra*, *Aakashitaraar Kathare*, *Laaz* and *Joymati*. She has also directed several documentaries, tele-films and TV programmes. *Baibhab* bagged a special jury mention at the national film awards 2000. *Aakashitaraar Kathare* got the best Assamese film award and best female playback singer award at the national film awards 2004. Manju Borah has been on the jury for selection of the Indian panorama for IFFI (International Film Festival of India), 2007 and on the international jury for 10th MAMI (Mumbai Academy of the Moving Image) International Film Festival, 2008. She was on the jury for 3rd Eye 7th Asian Film Festival, Mumbai 2008 and was a member of the feature films jury for 55th national film awards, 2007. She writes short stories and articles on diverse cultural ethos and social customs of small ethnic groups in the North-East and is also involved with various socio-cultural activities related with various ethnic and indigenous tribes of the North-East. Her collection of short stories *Biboxana man* was published in December, 2001.



## पारिवारिक मूल्यों पर सर्वोत्तम फिल्म

लिटल जीजू (अंग्रेज़ी, गुजराती)

निर्माता स्टूडियो 18 और जिगरी दोस्त प्रोडक्शन्स को रजत कमल और 1,50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक सूनी तारापोरवाला को रजत कमल और 1,50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

*पारसी समुदाय के तनावों व विश्वासों को हास्य का पुट देते हुए सूझबूझ के साथ चित्रित करने के लिए*

## BEST FILM ON FAMILY VALUES

**LITTLE ZIZOU** (English, Gujarati)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,50,000/- to Producers **Studio 18** and **Jigri Dost Productions**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,50,000/- to Director **Sooni Taraporevala**

### CITATION

*For its witty and intelligent handling of the conflicts and convictions confronting the Parsi community.*



## स्टूडियो 18

स्टूडियो 18 बायाकाम 18 कम्पनी का हिस्सा है। यह भारत में कथाचित्रों की एक आदर्श आधुनिक फिल्म कम्पनी है जो विदेशों से फिल्में आयात करने, फिल्म निर्माण, अन्य कम्पनियों से सहयोग, विपणन और विश्व स्तर पर फिल्म वितरण जैसी गतिविधियां चलाती है। यह अति आधुनिक फिल्म कम्पनी है जिसका विश्वास भारतीय फिल्म व्यापार में लगातार वृद्धि करना है। समाचार प्रसारण और इंटरनेट क्षेत्र में भी यह सक्रिय है।

## जिगरी दोस्त प्रोडक्शन्स

जिगरी दोस्त प्रोडक्शन्स की स्थापना सूनी तारापोरवाला और दिनाज स्टेफोर्ड ने मीरा नायर और अनिल तेजानी जैसे अन्य सहयोगियों के साथ मिलकर की। ये सभी लोग 1986 में *सलाम बॉम्बे* फिल्म के निर्माण के दौरान एक साथ आये थे। *लिटल ज़िजू* इस कम्पनी द्वारा निर्मित पहली फिल्म है।

## सूनी तारापोरवाला

सूनी तारापोरवाला का जन्म 1957 में मुम्बई में हुआ। उन्होंने हार्वर्ड विश्वविद्यालय में अंग्रेजी साहित्य, फिल्म कला और फोटोग्राफी की शिक्षा प्राप्त की। इसके बाद उन्होंने न्यूयार्क विश्वविद्यालय में सिनेमा का अध्ययन किया। भारत लौटकर वे स्वतंत्र छायाकार के रूप में काम करने लगीं। भारत, अमरीका, फ्रांस और ब्रिटेन में उनके चित्रों की प्रदर्शनियां लग चुकी हैं। 1986 में उन्होंने *सलाम बॉम्बे* फिल्म की पटकथा लिखी, जिसके लिये उन्हें अनेक पुरस्कार मिले। मीरा नायर की अगली फिल्म *मिस्सीसिपी मसाला* की पटकथा भी उन्होंने लिखी। उन्होंने मीरा नायर की *नेमसेक* सहित कई अन्य फिल्मों की पटकथाएं भी लिखी। निर्देशक के रूप में *लिटल ज़िजू* उनकी पहली फिल्म है।

## Studio 18



JIGRI DOST  
PRODUCTIONS



## Studio 18

Studio 18, a part of Viacom18 (a Viacom & Network18 Joint Venture), is the first studio model based motion picture business in India, with an operation that involves acquisition, production, syndication, marketing and world wide distribution of full-length feature films. Studio 18 is a new age motion picture company that believes in the growth potential of the Indian motion picture business. One of the key strengths of the company is its highly experienced team and that it is a part of a successful media conglomerate which already has leadership position in the news broadcasting and internet arena.

## Jigri Dost Productions

Jigri Dost Productions is a film company created in 2007 by Sooni Taraporevala and Dinaz Stafford along with honorary members Mira Nair and Anil Tejani who came together in 1986 during the making of *Salaam Bombay*. Old friends who started with *Salaam Bombay* and new friends who joined the Jigri Dost family 22 years later, came together to make *Little Zizou*.

## Sooni Taraporevala

After 20 years of being an award-winning screenwriter and still photographer, *Little Zizou* is Sooni Taraporevala's directorial debut. Sooni Taraporevala was born in 1957 in Mumbai, India and studied English Literature, Film and Photography at Harvard after which she enrolled in the Cinema Studies Department at New York University. She returned to India to work as a freelance still photographer.

In 1986 she wrote her first screenplay, *Salaam Bombay!*, for director/producer Mira Nair. *Salaam Bombay!* won 25 awards worldwide, was nominated for an Oscar, and earned Taraporevala the Lillian Gish Award from Women in Film. She also wrote *Mississippi Masala* for Mira Nair. Her other produced writing credits include the films *Such a Long Journey*, *My Own Country*, based on the book by Dr. Abraham Verghese and directed by Mira Nair and the film *Dr Babasaheb Ambedkar* directed by Dr. Jabbar Patel. Recently, she adapted Jhumpa Lahiri's novel *The Namesake* for Mira Nair.

मद्यनिषेध, महिला एवं बाल कल्याण, दहेज विरोधी, नशीले पदार्थों के सेवन से होने वाली हानियां, विकलांग कल्याण आदि सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम फिल्म

**जोगवा (मराठी)**

निर्माता आई ड्रीम प्रोडक्शन प्रा० लि० को रजत कमल और 1,50,000/- रूपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक राजीव पाटिल को रजत कमल और 1,50,000/-रूपये का नकद पुरस्कार

**प्रशस्ति**

*सदियों पुराने रीति-रिवाजों से पिस रहे लोगों पर सशक्त टिप्पणी के लिए*

**BEST FILM ON SOCIAL ISSUES SUCH AS PROHIBITION, WOMEN AND CHILD WELFARE, ANTI-DOWRY, DRUG ABUSE, WELFARE OF THE HANDICAPPED ETC.**

**JOGVA (Marathi)**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,50,000/- to Producer **IDream Production Pvt Ltd**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,50,000/- to Director **Rajeev Patil**

**CITATION**

*For hard hitting comment on the victims of age old social customs.*

## आई ड्रीम प्रोडक्शन प्रा० लि०

आई ड्रीम प्रोडक्शन प्रा० लि० एक फिल्म निर्माण और वितरण कम्पनी है। इसका उद्देश्य भारत और विदेशों में प्रबुद्ध दर्शकों के लिए फिल्में बनाना और वितरित करना है। अब तक इस कम्पनी द्वारा निर्मित फिल्मों में *जजंतरम ममंतरम*, *16 दिसम्बर*, *अग्निवर्षा*, *नयना*, *तहान* और *स्ट्रेट* शामिल हैं। कम्पनी की अगली फिल्म *फायर्ड* एक मनोवैज्ञानिक हारर फिल्म है। अन्तर्राष्ट्रीय विपणन के लिए इसने एक अलग सेल एजेंसी बनायी है जिसके कार्यालय मुम्बई और लंदन में हैं। यह कम्पनी आधुनिक किस्म के स्टुडियो में भी पूंजी लगाती है।

## राजीव पाटिल

राजीव पाटिल को नाटक, टेलीविजन और सिनेमा क्षेत्रों में काम करने का व्यापक अनुभव है। उन्होंने कई नाटकों का निर्देशन किया है और वे रंगमंच के विभिन्न पहलुओं पर प्रयोग करने वाली संस्था प्रयोग परिवार के सदस्य हैं। मराठी फिल्म *अनाहत* में वे अमोल पालेकर और भेट में चंद्रकांत कुलकर्णी के सहायक रहे हैं। उन्होंने अनेक मराठी फिल्मों की पटकथा लिखी है और इनका निर्देशन किया है। *जोगवा* को अब तक 36 पुरस्कार मिले हैं और 60 के लिए इसका नामांकन हुआ है।



## IDream Production Pvt Ltd

IDream Production is a film production and distribution company, promoted by Shripal Morakhia, a pioneer in institutional and retail stock broking, and headed by Ashish Bhatnagar, a former investment banker and media analyst. It aims at creating and distributing distinctive content for discerning audiences, both in India and abroad. Its films include *Jajantaram Mamantaram*, *16 December*, *Agnivarsha*, *Naina*, *Tahaan* and *Straight*. A psychological horror film, *Fired*, is coming up next. IDream has set up a dedicated sales agency with offices in London and Mumbai to tap into the international market. It is also investing in state-of-the-art studio facilities in and around Mumbai.

## Rajeev Patil

Rajeev Patil has wide-ranging experience in the fields of theatre, TV and cinema. He has directed many plays and was a founding member of Prayog Parivaar, a forum for experimentation in different aspects of theatre. He has been an assistant director to Amol Palekar in *Anahat* and Chandrakant Kulkarni in *Bhet*. He has written and directed films like *Savarkhed Ek Gaon*, *Blind Game*, *Athara*, *Bhuja Saptashrungimata*, *Oxygen*, *Sanai Choughade* and *Pangira*. His much celebrated *Jogva* has already won 60 nominations and 36 awards.



## सर्वोत्तम पर्यावरण फिल्म

### जिआंता भूत (ओड़िया)

निर्माता अक्षय कुमार परीजा को रजत कमल और 1,50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक प्रशांत नंदा को रजत कमल और 1,50,000/-रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

*विकास के नाम पर मासूम लोगों के शोषण के संवेदनापूर्ण चित्रण के लिए*

## BEST FILM ON ENVIRONMENT CONSERVATION/PRESERVATION

### JIAN TA BHOOTA (Oriya)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,50,000/- to Producer **Akshay Kumar Parija**

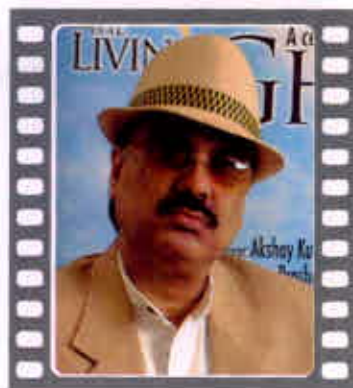
Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,50,000/- to Director **Prashanta Nanda**

### CITATION

*For sensitive portrayal of exploitation of innocence in the name of development.*

## अक्षय कुमार परीजा

अक्षय कुमार परीजा ने अपने कैरियर की शुरुआत 1978 में बैंक अधिकारी के रूप में की और उन्होंने कुवैत और मस्कट में बैंकिंग क्षेत्र में काम किया। वे ओड़ीसा सरकार के कला और संस्कृति विभाग में भी सक्रिय रहे हैं। निर्माता के रूप में *जिआंता भूत* उनकी पहली फिल्म है।



## Akshay Kumar Parija

Akshay Kumar Parija started off as a banker in 1978 and went on to work in the banking sector in Kuwait and Muscat. He has been involved with Orissa government for promoting art and culture of the state. *Jianta Bhoota* is his first film as a producer.

## प्रशांत नंदा

प्रशांत नंदा ने फ़िल्मी जीवन की शुरुआत ओड़िया फिल्म, *दस्यु रत्नाकर* में बाल कलाकार के रूप में की। बाद में उन्होंने *मतीरा मनीशा* और *अदिन मेघ* फिल्मों में अभिनय के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किये। 1976 में उन्होंने पटकथा लेखन और फिल्म निर्देशन के क्षेत्र में पदार्पण किया और उन्होंने न केवल ओड़िया बल्कि हिंदी, बंगला और भोजपुरी फिल्मों का भी निर्देशन किया है। उनकी फिल्मों को अनेक राज्य स्तर के, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं।



## Prashanta Nanda

Prashanta Nanda started off as a child artist in the Oriya film, *Dasyu Ratnakar* and went on to win national awards for his acting in *Matira Manisha* and *Adina Megha*. In 1976 he took to screenplay and direction and has since made films not only in Oriya but Hindi, Bengali and Bhojpuri as well. His films have won several state, national and international awards.

## सर्वोत्तम बाल फिल्म

### गुब्बाचिगालु (कन्नड़)

निर्माता मीडिया हाऊस स्टुडियो को स्वर्ण कमल और 1,50,000/-रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक अभय सिम्हा को स्वर्ण कमल और 1,50,000/-रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

*बच्चों के मन में पनपते मायावी संसार के सुंदर और कल्पनाशील चित्रण के लिए*

## BEST CHILDREN'S FILM

### GUBBACHIGALU (Kannada)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs 1,50,000/- to Producer **Media House Studio**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs 1,50,000/- to Director **Abhaya Simha**

### CITATION

*For imaginative portrayal of a magic world that exists in the minds of children.*

## मीडिया हाऊस स्टुडियो

मीडिया हाऊस स्टुडियो की स्थापना बी. सुरेश और शैलजा नाग ने की। *गुब्बाचिगालु* उनकी पहली फिल्म है। बी. सुरेश को नाटक और सिनेमा के क्षेत्र में 20 वर्ष काम करने का अनुभव है। उन्होंने कन्नड़ फिल्म *अर्थ* का निर्देशन किया है और कई सफल टेलीविजन कार्यक्रमों का निर्माण किया है। शैलजा नाग ने *अर्थ* फिल्म का सह-निर्माण किया और टेलीविजन के लिए अनेक धारावाहिकों का निर्माण और वितरण किया है।

## MEDIA HOUSE STUDIO Media House Studio

Media House Studio was set up by B Suresha and Shylaja Nag, who have a vast experience as writers and film directors. *Gubbachigalu* is their first production. B. Suresha has over 20 years of experience in theatre and cinema. He directed the Kannada film *Artha* and has produced several successful television programmes. Shylaja Nag has produced and marketed several serials for television. She has previously co-produced *Artha* with B Suresha.

## अभय सिम्हा

अभय सिम्हा ने मंगलौर के एलोइसियस कालेज से पत्रकारिता, अंग्रेजी और कन्नड़ साहित्य विषयों के साथ स्नातक की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान, पुणे में भी प्रशिक्षण लिया। वे अनेक वृत्तचित्रों, लघु फिल्मों और म्युजिक वीडियो का निर्माण कर चुके हैं। निर्देशक के रूप में यह उनकी पहली फिल्म है।



## Abhaya Simha

Born and brought up in Mangalore, Abhaya Simha graduated from St Aloysius College, Mangalore in journalism, English and Kannada literature. A graduate from the Film and Television Institute of India, Pune, he has produced several documentaries, short features and music videos. *Gubbachigalu* is Abhaya Simha's debut film as a director.

## सर्वोत्तम कार्टून फ़िल्म

### रोडसाइड रोमियो (हिंदी)

निर्माता आदित्य चोपड़ा को स्वर्ण कमल और 1,00,000/-रूपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक जुगल हंसराज को स्वर्ण कमल और 1,00,000/-रूपये का नकद पुरस्कार

एनीमैटर टाटा एलेक्सी लि० को स्वर्ण कमल और 1,00,000/- रूपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

*मुख्यधारा के दर्शकों के लिए कार्टून कला को बेहतर बनाने में तकनीकी उच्चता हासिल करने के लिए*

## BEST ANIMATION FILM

### ROADSIDE ROMEO (Hindi)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000/- to Producer **Aditya Chopra**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000/- to Director **Jugal Hansraj**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000/- to Animator **Tata Elxsi Ltd**

### CITATION

*For its technical achievements to further the craft of animation for mainstream audience.*



## आदित्य चोपड़ा

यश चोपड़ा के बेटे आदित्य चोपड़ा का नई पीढ़ी के फिल्म निर्माताओं में अग्रणी स्थान है। उनकी अनूठी प्रतिभा *दिल वाले दुल्हनियां ले जाएंगे*, फिल्म में दिखाई दी जो उन्होंने 23 वर्ष की उम्र में बनाई। वो भारत के फिल्मी इतिहास की सबसे अधिक सफल फिल्मों में थी और उसे लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वोत्तम फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला था। 10 वर्ष पहले बनी यह फिल्म देश की सबसे लंबे समय तक चलने वाली फिल्म है। 2005 में उन्होंने निर्माता के रूप में *हम तुम* तथा *धूम* फिल्में बनाई और तब से वे *बदली और बंटी*, *चक दे इंडिया* और *न्यूयार्क* जैसी सफल फिल्मों का निर्माण कर चुके हैं। इस प्रक्रिया में उन्होंने अनेक नए निर्देशकों को अवसर दिया और सृजनात्मक तथा तकनीकी लोगों का एक समूह तैयार कर लिया है।

## जुगल हंसराज

जुगल हंसराज ने अपना फिल्मी कैरियर अभिनेता के रूप में शुरू किया और *रोडसाइड रोमियो* के साथ वे निर्देशक बन गये। उनकी दूसरी फिल्म *प्यार इम्पॉसिबल* इसी साल रिलीज हुई है।

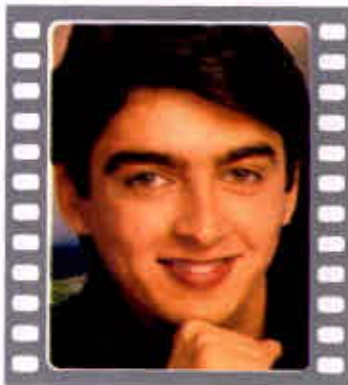
## टाटा एलेक्सी लि0

टाटा एलेक्सी लि0 भारत की प्रमुख वी.एफ.एक्स और एनिमेशन कम्पनी है। इसमें बॉलीवुड की अनेक फिल्मों के लिए दृश्य प्रभाव तैयार किये हैं, जिनमें, *ख ने बना दी जोड़ी*, *न्यूयार्क*, *द्रोण*, *बचना ए हसीनों*, *तारे जमीं पर*, *जोधा अकबर*, *रंग दे बसंती* जैसी फिल्में शामिल हैं। इसने डिस्नी, सोनी इमेज वर्क्स, आई.एल.एम. जैसी कई विदेशी कम्पनियों की परियोजनाओं पर भी काम किया है। *रोडसाइड रोमियो* भारत की थ्री-डी कार्टून कला की मुख्यधारा की पहली फीचर फिल्म है। इसका निर्माण यशराज फिल्म्स ने वाल्ट डिस्नी पिक्चर्स के सहयोग से किया है।



## Aditya Chopra

Yash Chopra's eldest son, Aditya Chopra, has been the torchbearer of the young generation of filmmakers in India. His redoubtable flair reflected in *Dilwale Dulhania Le Jaayenge* that he made at 23. The film was one of the biggest box office hits in the Indian film history and won the national award for providing wholesome entertainment. With more than 10 year run behind it, *DDLJ* is the longest running film in the history of Indian cinema. Chopra wrote screenplay and dialogues for *Dil To Pagal Hai* and co-produced and wrote *Veer Zaara*. He directed *Mohabbatein* and last year came up with his third film as a director, *Rab Ne Bana Di Jodi*. In 2005, Chopra donned the mantle of producer with *Hum Tum* and *Dhoom* and has since produced several successful films like *Bunty Aur Babli*, *Chak De! India* and *New York*. As the vice chairman of YRF, he has launched several young directors and built a pool of creative and technical talent.



## Jugal Hansraj

Jugal Hasraj started his career as an actor and turned director with *Roadside Romeo*. His second film, *Pyaar Impossible*, released earlier this year.

## Tata Elxsi Ltd

Tata Elxsi is India's pre-eminent VFX and animation studios employing around 250 VFX artists and animators. It has created visual effects for several Bollywood films like *Rab Ne Bana Di Jodi*, *New York*, *Drona*, *Bachna Ae Haseeno*, *Jodhaa Akbar*, *Taare Zameen Par*, *Tara Rum Pum*, *Kabhi Alvida Na Kehna*, *Dhoom 2*, *Rang De Basanti* etc. Its clients include Yash Raj Films, UTV, Dharma Productions, Aamir Khan Productions, Ashutosh Gowariker Productions Pvt Ltd. *Roadside Romeo* is India's first 3 D animated mainstream Bollywood feature film, co-produced by YRF with Walt Disney Pictures.



## सर्वोत्तम निर्देशन

बाला को नान कडावुल (तमिल) के लिए

निर्देशक बाला को स्वर्ण कमल और 2,50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

*हाशिए पर रह रहे चरित्रों पर गहरी आस्था के साथ ध्यान देने जैसे असाधारण विषय को सशक्त ढंग से प्रस्तुत करने के लिए*

## BEST DIRECTION

**BALA** for **NAAN KADAVUL** (Tamil)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs 2,50,000/- to the Director **Bala**

### CITATION

*For its powerful handling of an extraordinary subject that focuses on marginal characters with great conviction.*

## बाला

तमिलनाडु में मदुरै के निकट एक गांव में जन्मे बाला ने मदुरै के अमेरिकन कालेज से तमिल साहित्य में बी.ए. किया। उन्होंने बालू महेंद्रा के सहायक के रूप में कुछ समय काम करने के बाद 1999 में अपने निर्देशन में पहली फिल्म *सेतु* बनायी जिसकी काफी सराहना हुई और उसे सर्वोत्तम तमिल कथाचित्र का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। इस फिल्म से तमिल फिल्म उद्योग में उनका सिक्का जम गया और फिल्म के अभिनेता विक्रम स्टार बन गए। बाला की फिल्म *पितामगन* में विक्रम को सर्वोत्तम अभिनेता का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। बाला जटिल विषयों को लेकर फिल्में बनाने के लिए प्रसिद्ध हैं। वे गंभीर मसलों को मनोरंजक ढंग से प्रस्तुत करते हैं।



## BALA

Born in a small village near Madurai, Bala is a graduate in Tamil literature from American College, Madurai. After training as an assistant director with Balu Mahendra, he broke into the Tamil film industry with *Sethu* in 1999, which won critical acclaim and bagged the national award for the best Tamil film. Bala got recognition as an original cinematic voice and the film catapulted Vikram into superstardom. Bala's film *Pithamagan* got Vikram the national award for best actor. Bala's films are known for featuring complex themes in seemingly simple plots. He handles serious issues while retaining the element of entertainment.

## सर्वोत्तम अभिनेता

उपेंद्र लिमये को जोगवा (मराठी) के लिए

अभिनेता उपेंद्र लिमये को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

## प्रशस्ति

*एक जटिल भूमिका को संयत और सशक्त ढंग से निभाने के लिए*

## **BEST ACTOR**

**UPENDRA LIMAYE** for **JOGVA** (Marathi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Actor **Upendra Limaye**

## **CITATION**

*For his restrained yet powerful depiction of a complex character.*

## उपेंद्र लिमये

उपेन्द्र लिमये मराठी, हिन्दी और तमिल फिल्मों में 25 वर्ष से अधिक समय से अभिनेता के रूप काम कर रहे हैं। उन्होंने जब्बार पटेल की *मुक्त*, अमोल पालेकर की *बांगरवाड़ी* और *कैरी* तथा मधुर भंडारकर की *चांदनी बार*, *पेज थ्री* और *ट्रेफिक सिग्नल* जैसी पुरस्कार विजेता फिल्मों में काम किया है। वे 1987-88 से प्रयोगवादी रंगमंच से जुड़े रहे हैं। वे पुणे की थिएटर अकादमी और जर्मनी के ग्रिप्स थिएटर में सक्रिय हैं। उन्होंने पन्द्रह वर्षों तक मराठी नाटकों में अभिनेता, निर्देशक और प्रबंधक के रूप में काम किया है।



## UPENDRA LIMAYE

Upendra Limaye has worked as an actor in more than 25 films in Marathi, Hindi and Tamil. His films include several award winning efforts like Dr Jabbar Patel's *Mukta*, Amol Palekar's *Bangarwadi* and *Kairee* and Madhur Bhandarkar's *Chandni Bar*, *Page 3* and *Traffic Signal*. He did B.A. in Dramatics and M.A. in Communications from Pune University. He has been associated with experimental theatre since 1987-88, is a member of Theatre Academy, Pune and is also associated with Grips Theatre, Germany. He has worked as an actor, director and backstage artiste in Marathi theatre for 15 years.

## सर्वोत्तम अभिनेत्री

प्रियंका चोपड़ा को फ़ैशन (हिंदी) के लिए

अभिनेत्री प्रियंका चोपड़ा को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

*एक ही चरित्र के भीतर कई तरह की भावनाओं को पूर्ण विश्वास के साथ अभिव्यक्त करने के लिए*

## **BEST ACTRESS**

**PRIYANKA CHOPRA** for **FASHION** (Hindi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Actress **Priyanka Chopra**

### **CITATION**

*For convincing portrayal of a whole range of emotions within a single character.*

## प्रियंका चोपड़ा

1982 में जन्मी प्रियंका चोपड़ा को 2000 में विश्व सुंदरी का खिताब मिला। उन्होंने फिल्म अभिनय की शुरुआत 2002 में तमिल फिल्म *तमिशन* से की। उनकी पहली हिंदी फिल्म अनिल शर्मा द्वारा निर्देशित *द हीरो : लव स्टोरी आफ ए स्पाई* थी जिसमें उन्होंने सह अभिनेत्री के रूप में काम किया। इसके बाद उन्होंने राज कंवर की फिल्म *अंदाज़* में अक्षय कुमार के साथ नायिका के रूप में काम किया। यह फिल्म काफी सफल रही और प्रियंका को सर्वोत्तम नवोदित अभिनेत्री का फिल्म फेयर पुरस्कार मिला। इसके बाद उनकी फिल्में *मुझ से शादी करोगी* और *एतराज़* आई। *एतराज़* में नकारात्मक भूमिका के लिए उन्हें फिल्मफेयर पुरस्कार मिला। *कृश*, *डॉन*, *दोस्ताना* और *कमीने* उनकी अन्य उल्लेखनीय फिल्में हैं।



## Priyanka Chopra

Born in 1982, Priyanka Chopra comes from an Army family. She was crowned Miss World in 2000. Chopra made her debut in the 2002 Tamil film *Thamizhan*. In 2003 she appeared in her first Bollywood film, *Hero: Love Story of a Spy* directed by Anil Sharma, in a supporting role. Later that year she appeared in Raj Kanwar's *Andaaz* opposite Akshay Kumar. The film turned out to be a box office success and got her a Filmfare Best Female Debut Award. Her next big films were David Dhawan's romantic comedy *Mujhse Shaadi Karogi* and a film in a negative role, *Aitraaz*, that won her Filmfare Best Villain Award. Her other successful films include *Krrish*, *Don - The Chase Begins Again*, *Dostana* and *Kaminey*.

## सर्वोत्तम सह अभिनेता

अर्जुन रामपाल को रॉक ऑन (हिंदी) के लिए

सह अभिनेता अर्जुन रामपाल को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

*निजी कष्टों से ऊपर उठने की कोशिश करने वाले संगीतकार की मार्मिक भूमिका निभाने के लिए*

## **BEST SUPPORTING ACTOR**

**ARJUN RAMPAL** for **ROCK ON !** (Hindi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Supporting Actor **Arjun Rampal**

**CITATION**

*For his moving performance as a musician trying to rise above personal tragedy.*



## अर्जुन रामपाल

मॉडल से अभिनेता बने अर्जुन रामपाल ने अपने अभिनय जीवन की शुरुआत 2000 में *मोक्ष* फिल्म से की। उसके बाद उन्होंने *आंखें*, *दिल है तुम्हारा* और *एक अजनबी* जैसी फिल्मों में काम किया। 2006 में उन्होंने *कभी अलविदा न कहना* में अतिथि अभिनेता के रूप में और *डॉन* में सह अभिनेता के रूप में काम किया, जिससे उन्हें प्रसिद्धि मिलनी शुरू हुई। उन्होंने *आई सी यू* फिल्म का निर्माण भी किया। 2007 में फराह खान की फिल्म *ओम शांति ओम* में खलनायक के रूप में उनका काम काफी सराहा गया। अगले वर्ष 2008 में अर्जुन रामपाल अंग्रेजी फिल्म *द लास्ट लीयर* में अमिताभ बच्चन के साथ दिखायी दिए। इस फिल्म का प्रीमियर टोरंटो अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में हुआ।



## Arjun Rampal

A former model, Arjun Rampal, made his debut with *Moksha* in 2000. Since his debut, he has worked steadily in films such as *Aankhen*, *Dil Hai Tumhaara* and *Ek Ajnabee*. Things took a turn and he got noticed in 2006 in a guest appearance in the multi-starrer *Kabhi Alvida Naa Kehna* and the supporting role in *Don*, a remake of the 1978 Amitabh Bachchan starrer. Rampal donned the role of Jasjit who was played by Pran in the original version. He then decided to produce as well as act in the film *I See You*. His wife, Mehr Jesia, was the co-producer. He received positive reviews for his villainous role in Farah Khan's *Om Shanti Om* (2007), which is also his biggest hit till date. In 2008 Arjun starred in Rituparno Ghosh's English language arthouse film *The Last Lear*, alongside Amitabh Bachchan and Preity Zinta. The film premiered at the Toronto International Film Festival.

## सर्वोत्तम सह अभिनेत्री

कंगना रानाउत को फ़ैशन (हिंदी) के लिए

सह अभिनेत्री कंगना रानाउत को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

एक बिदास सुपर माडल के चरित्र के प्रभावपूर्ण चित्रण के लिए जो फिल्म के प्रभाव को कई गुना बढ़ा देता है

## **BEST SUPPORTING ACTRESS**

**KANGNA RANAUT** for **FASHION** (Hindi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Supporting Actress **Kangna Ranaut**

### **CITATION**

*For compelling portrayal of a down-and-out super model that enriches the impact of the film.*

## कंगना रानाउत

कंगना रानाउत ने 18 वर्ष की आयु में फिल्म *गैंगस्टर* के साथ हिंदी फिल्म जगत में प्रवेश किया। इस भूमिका के लिए उन्हें उदीयमान अभिनेत्री का फिल्मफेयर पुरस्कार मिला। हिमाचल प्रदेश की रहने वाली कंगना ने अभिनय जीवन की शुरुआत दिल्ली में रंगमंच से की। इन्होंने अरविंद गौड़, मधुर भंडाकर, अनुराग बसु मोहित सूरी एवं मिलिंद लूथरिया जैसे निर्देशकों के साथ काम किया है। उनकी अगली फिल्म *दि काइट्स* है, जिसमें वे एक नर्तकी की भूमिका निभा रही हैं।



## KANGNA RANAUT

A stylish and consummate performer, Kangana Ranaut made a grand entry into Hindi films at the age of 18 in *Gangster* which won her the best debut and fresh face awards at Filmfare. Hailing from Bhambla in Himachal Pradesh Kangna began her tryst with acting with theatre in Delhi under Arvind Gaur and has gone on to work with the likes of Madhur Bhandarkar, Anurag Basu, Mohit Suri and Milind Luthria. Known for her intense performances, she is now also experimenting with romantic comedies and pure comedies. Coming up next is an international production *The Kites* where Kangna plays a salsa dancer.

## सर्वोत्तम बाल कलाकार

शम्स पटेल को थैंक्स मां (हिंदी) के लिए

बाल कलाकार शम्स पटेल को रजत कमल और 50,000/-रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

*असाधारण हालात के शिकार बने एक बेघर लड़के के चरित्र को सहज ढंग से निभाने के लिए*

## BEST CHILD ARTIST

**SHAMS PATEL** for **THANKS MAA** (Hindi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Child Artist **Shams Patel**

### CITATION

*For his very natural depiction of a street child thrown into an unusual situation.*

## शम्स पटेल

तेरह वर्ष का शम्स पटेल मुम्बई के उत्पल संघवी स्कूल का छात्र है। वह फुटबॉल और क्रिकेट का खिलाड़ी है। यह उनकी पहली फिल्म है।



## SHAMS PATEL

13-year old Shams Patel is a student of Mumbai's Utpal Sanghvi School. He is an avid football and cricker player and this is his first film.



## सर्वोत्तम पार्श्व गायक

हरिहरन को जोगवा (मराठी) के लिए

पार्श्व गायक हरिहरन को रजत कमल और 50,000/-रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

*अधूरी रह गई कामनाओं की पीड़ा की मार्मिक और लयात्मक अभिव्यक्ति के लिए*

## BEST MALE PLAYBACK SINGER

**HARIHARAN** for the song “ **Jeev Dangla Gunpla Rangla**” of **JOGVA** (Marathi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Male Playback Singer **Hariharan**

### CITATION

*For his soulful rendition reflecting the agony of unfulfilled emotions.*

## हरिहरन

हिंदी के अलावा तमिल, मलयालम, कन्नड़ और तेलुगु फिल्मों के लिए पार्श्व गायन करने वाले हरिहरन एक सिद्धहस्त गज़ल गायक भी हैं। वे फ्यूजन म्यूजिक के सूत्रधारों में गिने जाते हैं। हरिहरन ने संगीत की शिक्षा कर्नाटक संगीत की जानी-मानी गायिका श्रीमती अलामेलु से प्राप्त की। युवावस्था में उन्हें मेहदी हसन से प्रेरणा मिली और उन्हें गज़लों से लगाव हो गया। उन्होंने उस्ताद गुलाम मुस्तफा खान से हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की शिक्षा ली। उन्होंने भाषा में मिटास लाने के लिए उर्दू भी सीखी। 1977 में उन्होंने अखिल भारतीय सुर सिंगार प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। हिन्दी फिल्मों में उन्होंने संगीत निर्देशक जयदेव की फिल्म *गमन* के लिए गीत गाकर गायन का शुभारंभ किया। 1992 में मणिरत्नम की तमिल फिल्म *रोज़ा* से उन्होंने तमिल पार्श्व गायन शुरू किया। 1998 में उन्हें *बार्डर* फिल्म के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार और 2004 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया।



## HARIHARAN

An established ghazal singer and a versatile playback singer of Hindi, Tamil, Malayalam, Kannada and Telugu movies, Hariharan is one of the pioneers of Indian fusion music. The son of renowned Carnatic vocalists Shrimati Alamelu and the late has Mani, Hariharan started learning music from his mother. In his teens he got inspired by Mehdi Hassan and developed a passion for ghazals. He started training in Hindustani Classical music under Ustad Ghulam Mustafa Khan. He also studied Urdu to perfect his diction. In 1977 he won the All India Sur Singaar competition and was signed on by the late music director Jaidev to sing for Hindi film *Gaman*. He entered the Tamil film industry in 1992 with Mani Ratnam's *Roja*. He won the national award in 1998 for *Border* and was awarded the Padma Shree in 2004. Hariharan has cut several successful ghazal albums. He formed a band called Colonial Cousins with Leslie Lewis which won the MTV Indian Viewer's Choice Award in New York. He has also collaborated with pop star Daler Mehndi, tabla maestro Zakir Hussain and the popular Pakistani band Strings.

## सर्वोत्तम पार्श्व गायिका

श्रेया घोषाल को अंतहीन (बांगला) और जोगवा (मराठी) के लिए पार्श्व गायिका श्रेया घोषाल को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

*मानवीय भावनाओं की मधुर एवं गहन अभिव्यक्ति के लिए*

## **BEST FEMALE PLAYBACK SINGER**

**SHREYA GHOSHAL** for the songs “**Pherari Mon.....**” of **ANTAHEEN** (Bengali) and “**Jeev Dangla Gungla Rangla** ” of **JOGVA** (Marathi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Female Playback Singer **Shreya Ghoshal**

### **CITATION**

*For her wide ranging rendition of human emotions.*



## श्रेया घोषाल

12 मार्च 1984 को जन्मी श्रेया घोषाल ने 4 वर्ष की उम्र से ही संगीत, विशेषकर बंगला गीत सीखना शुरू कर दिया। 6 वर्ष की उम्र में वे हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में औपचारिक प्रशिक्षण लेने लगीं। श्रेया ने राकेश शर्मा, जयवर्धन भटनागर तथा महेशचन्द्र शर्मा से संगीत सीखा। जनवरी 1995 में उन्होंने दिल्ली में अखिल भारतीय सुगम संगीत प्रतियोगिता में पुरस्कार जीता। श्रेया ने सा-रे-गा-मा कार्यक्रम की बाल विशेष श्रृंखला में पहला स्थान प्राप्त किया। मार्च 1999 में निर्देशक संजय लीला भंसाली और संगीत निर्देशक इस्माइल दरबार ने उनसे *देवदास* में गीत गवाया, जो श्रेया की पहली फिल्म थी। तब से वे लगातार गा रही हैं और कई संगीत निर्देशकों के साथ काम कर चुकी हैं। श्रेया हिंदी के अलावा तमिल, तेलुगु, कन्नड़, बंगला, नेपाली, भोजपुरी, असमिया, ओड़िया आदि भाषाओं में भी गा चुकी हैं। उनके कई गीत हिट रहे हैं और पुरस्कृत हुए हैं।



## Shreya Ghoshal

Born on March 12, 1984, Shreya Ghoshal started learning music, mainly Bengali songs, at the age of 4 from her first guru, her mother. At the age of 6, she started getting formal training in Hindustani Classical. She learnt from Rakesh Sharmaji, Shri Jayawardhan Bhatnagar and thereafter, from Mahesh Chandra Sharmaji of Kota. She received training in playback singing from Padmashree Kalyanji bhai. She is continuing her training from Ms Mukta Bhide. In January 1995 she won the All India Light Vocal music competition in Delhi. She won the children's special of Sa Re Ga Ma. In March 1999 director Sanjay Leela Bhansali and music director Ismail Darbar picked her up for playback singing in *Devdas*, her debut film. Since then she has been working continuously and recorded with several music directors. She has rendered songs, not just in Hindi but also in Tamil, Telegu, Kannada, Bengali, Nepali, Bhojpuri, Assamese, Oriya and has many hits and awards to her credit.

## सर्वोत्तम छायांकन

### अविक मुखोपाध्याय को अंतहीन (बांगला) के लिए

छायाकार अविक मुखोपाध्याय को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

लैबोरेटरी फिल्म लैब. (इंडिया) को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

*फिल्म के मूल भाव को गति देने के उद्देश्य से प्रकाश तथा छाया का सशक्त उपयोग करके दृश्यों के काव्यात्मक सृजन के लिए*

## BEST CINEMATOGRAPHY

### AVIK MUKHOPADHYAY for ANTAHEEN (Bengali)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Cinematographer **Avik Mukhopadhyay**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the laboratory **Filmlab (India)**

### CITATION

*For the poetically captured visuals with inspired use of light and shades to enhance the mood of the film.*

## अविक मुखोपाध्याय

अविक मुखोपाध्याय ने भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे से छायांकन में डिप्लोमा प्राप्त किया है। वे 18 फिल्मों के साथ-साथ अनेक विज्ञापन फिल्मों का भी छायांकन कर चुके हैं। उन्हें 2003 में *पाताल घर* और 2004 में *माले थेको* फिल्मों के लिए लगातार राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। इन दिनों वे हिंदी फिल्म *भूमि* और बंगला फिल्म *एकती तारास खोजे* पर काम कर रहे हैं।



## AVIK MUKHOPADHYAY

Avik Mukhopadhyay holds a diploma in cinematography from the Film and Television Institute of India, Pune. He has shot several commercials and about 18 films including *Antarmahal*, *Bunty Aur Babli*, *Chokher Bali*, *Dosar*, *Utsav* among others. He won national awards consecutively for *Patal Ghar* (2003) and *Bhulo Theko* (2004). He is working on the post-production of a Hindi feature film, *Bhoomi*, and a Bengali film, *Ekti Tarar Khonje*.

## Filmlab

Filmlab is a fully owned division of PID Group and spearheaded by Mr. Sanjay Patel, whose family have been the pioneers in the business of photography services and supplies since 1930s and were the first to set up a colour motion picture processing laboratory in India, Film Centre, in the year 1953.



## फिल्म लैब (इंडिया)

फिल्म लैब अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की फिल्मों से संबंधित सब तरह की सेवाएं प्रदान करने वाली प्रयोगशाला है। यहां 35 एम.एम और 16 एम.एम फिल्मों की प्रोसेसिंग, डिजिटल इंटरमीडिएट सेवाएं और प्रिंट रिलीज करने की सेवाएं उपलब्ध हैं। इसकी स्थापना 2001 में की गयी। पीआईडी ग्रुप के एक विभाग के रूप में चलने वाली फिल्म लैब का नेतृत्व श्री संजय पटेल के हाथों में है। जिनका परिवार 1930 के दशक से फोटोग्राफी के व्यापार में कार्यरत है। इस ग्रुप ने 1953 में रंगीन फिल्मों की प्रोसेसिंग प्रयोगशाला फिल्म सेंटर की स्थापना की थी।

Filmlab established in the year 2001, has one of the largest, most modern eco-friendly facilities in India. Filmlab has entered into a marketing and technical strategic alliance with Deluxe Laboratories Inc., USA and has upgraded and expanded its film processing services to match those of Deluxe Laboratories, USA. Filmlab is the first laboratory in India to procure the Cinevator, Cinevation's Real Time Film Recorder / Printer. It also has a post production facility and offers services for the creation of digital intermediates, digital cinema deliveries and the restoration of old film archives.

The company aims to expand rapidly to be a leading player in the services sector of the film industry – in both, the traditional “film” segment, as well as in the emerging “digital” domain – in the Indian and global film industry.

## सर्वोत्तम पटकथा

सचिन कुंदालकर को गंध (मराठी) के लिए

पटकथा लेखक सचिन कुंदालकर को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

मानवीय संबंधों के चित्रण में सूंघने की शक्ति को माध्यम बनाते हुए तीन अलग-अलग कहानियों को अद्भुत ढंग से जोड़कर प्रस्तुत करने के लिए

## BEST SCREENPLAY

**SACHIN KUNDALKAR** for **GANDHA** (Marathi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Screenplaywriter **Sachin Kundalkar**

### CITATION

*For its remarkable integration of three different plots using the sense of smell as a liet motif to focus sensitively on human relationships.*

## सचिन कुंदालकर

सचिन कुंदालकर मराठी के जानेमाने कथाकार, नाटककार और फिल्म निर्माता हैं। फिल्मकार के रूप में उनकी पहली फिल्म रेस्टोरेंट 2006 में आई। उनकी दूसरी फिल्म *निरोप* को 2007 का सर्वोत्तम मराठी फिल्म का पुरस्कार मिला। उनके छह नाटक, एक उपन्यास और चार कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।



## Sachin Kundalkar

Sachin Kundalkar is a filmmaker, playwright and novelist from Maharashtra. He made his debut as a filmmaker with *Restaurant* in 2006. His second film *Nirop* won the national award for best Marathi film for 2007. He has written six plays and a Marathi novel, *Cobalt Blue*. His short films include *Out of the Box*, *Shubhra Kahi*, *The Bath* and *Une Noisette*.

## सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन

प्रमोद जे. थामस और अनमोल भावे को गंध (मराठी) के लिए

ध्वनि आलेखक प्रमोद जे थामस और अनमोल भावे को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

*फिल्म के मूलभाव को उजागर करने के उद्देश्य से नाटकीय शैली में सृजित ध्वनियों का इस्तेमाल करने के लिए*

## **BEST AUDIOGRAPHY**

**PRAMOD J THOMAS** and **ANMOL BHAVE** for **GANDHA** (Marathi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Audiographers **Pramod J. Thomas** & **Anmol Bhave**

### **CITATION**

*For its use of dramatically scripted sounds to heighten the mood of the film.*

## प्रमोद जे थामस

प्रमोद थामस जाने माने मिक्सिंग इंजीनियर और साऊंड डिज़ाइनर हैं। उन्होंने हिंदी और मराठी की कई उल्लेखनीय फिल्मों के लिए ध्वनि आलेखन किया है।



## Pramod J Thomas

Pramod Thomas is a mixing engineer and sound designer and has done films in Hindi and Marathi.

## अनमोल भावे

अनमोल भावे जाने माने साऊंड डिज़ाइनर हैं और उन्होंने मराठी की अनेक फिल्मों के लिए ध्वनि आलेखन किया है। उन्होंने भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे से प्रशिक्षण प्राप्त किया और उनकी डिप्लोमा फिल्म को राष्ट्रीय पुरस्कार मिला।



## Anmol Bhawe

Anmol Bhawe is a sound designer and has done several important feature films including *Gandha*, *Gabhricha Paus*, *Ek Cup Chya*. A graduate from FTII, Pune, he won National award for his diploma film.

## सर्वोत्तम संपादन

ए.श्रीकर प्रसाद को फ़िराक (हिंदी) के लिए

फिल्म संपादक ए.श्रीकर प्रसाद को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

*एक दूसरे से असंगत विषयों को सौंदर्यशास्त्रीय ढंग से एक सूत्र में पिरोकर प्रस्तुत करते हुए कथ्य का नाटकीय प्रभाव बढ़ाने के लिए*

## BEST EDITING

**A SREEKAR PRASAD** for **FIRAAQ** (Hindi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Editor **A. Sreekar Prasad**

### CITATION

*For aesthetically weaving together unrelated sequences to heighten the dramatic impact.*



## ए.श्रीकर प्रसाद

ए.श्रीकर प्रसाद ने मद्रास विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में बी.ए. करने के बाद अपने पिता से फिल्म संपादन सीखा। वे हिंदी, मलयालम, कन्नड़, तेलुगु, तमिल, बंगला, असमिया सहित विभिन्न भाषाओं की तीन सौ से अधिक फीचर फिल्मों और कई वृत्तचित्रों का स्वतंत्र रूप से संपादन कर चुके हैं। इससे पहले उन्हें 6 फिल्मों में *राख*, *राग-बिराग*, *नौकाचरितराम*, *द टेरेरिस्ट*, *वानप्रस्थम्* और *कानातिल मुतामितल* के संपादन के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुका है।



## A Sreekar Prasad

A graduate in English Literature from University of Madras, A Sreekar Prasad learnt editing from his father. He has independently edited several documentaries and more than 300 feature films in various languages—Tamil, Telugu, Kannada, Malayalam, Hindi, Nepali, Bengali, Sinhali, Assamese and Oriya. He has won the national award earlier for *Raakh*, *Raag-Biraag*, *Naukachritiamu*, *The Terrorist*, *Vanaprastham* and *Kannathil Muthamittal*.

## सर्वोत्तम कला निर्देशन

गौतम सेन को फ़िराक (हिंदी) के लिए

कला निर्देशक गौतम सेन को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

*अवलंबों के इस्तेमाल तथा रंगों के कुशल चयन के माध्यम से दंगों के बाद के वातावरण को उजागर करने के लिए*

## **BEST ART DIRECTION**

**GAUTAM SEN** for **FIRAAQ** (Hindi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Art Director **Gautam Sen**

### **CITATION**

*For its perfect use of props and choice of colours to enhance the ambience of a post-riot situation*

## गौतम सेन

गौतम सेन ने गवर्नमेंट आर्ट्स कालेज, कोलकाता से स्नातक की शिक्षा प्राप्त की। वे स्वतंत्र कला निर्देशक के रूप में लगभग 20 फिल्मों और अनेक धारावाहिकों तथा विज्ञापन फिल्मों के लिए काम कर चुके हैं। इससे पहले उन्हें तीन फिल्मों *दामुल*, *तृषागिन* एवं *प्रहार* के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिला है।



## GAUTAM SEN

A graduate of Government Arts College, Kolkata, Gautam Sen has done about 20 films and several TV serials and advertisements as an independent art director. He has won the national award thrice earlier, for *Damul*, *Trishagni* and *Prahaar*.

## सर्वोत्तम वेशभूषाकार

नीता लुल्ला को जोधा अकबर (हिंदी) के लिए

वेशभूषाकार नीता लुल्ला को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

*मुगल काल के परिधानों और आभूषणों की खूबियों को प्रामाणिक रूप से प्रस्तुत करने के सफल प्रयास के लिए*

## **BEST COSTUME DESIGNER**

**NEETA LULLA** for **JODHAA AKBAR** (Hindi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Costume Designer **Neeta Lulla**

### **CITATION**

*For its painstaking detail to recreate the costumes and jewellery of Mughal era.*

## नीता लुल्ला

नीता लुल्ला ने 25 वर्ष पहले फैशन जगत में प्रवेश किया और उन्होंने फैशन में कई नई प्रवृत्तियों का सूत्रपात किया है। सादगी और भव्यता तथा भारतीय और पश्चिमी परिधानों में समन्वय के ज़रिए प्रभाव पैदा करना उनकी विशेषता है। इसी विशेषता ने उन्हें फिल्म उद्योग की सबसे चहेती वेशभूषाकार बना दिया है। वे अब तक 375 से अधिक फिल्मों के लिए वेशभूषा डिज़ाइन कर चुकी हैं। उन्होंने हॉलीवुड की कुछ फिल्मों के लिए भी कास्ट्यूम डिज़ाइनिंग की है। नीता लुल्ला को इससे पहले *लम्हे* और *देवदास* में वेशभूषा सज्जा के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुका है।



## NEETA LULLA

Neeta Lulla entered the fashion world 25 years ago and has been setting trends ever since. Her inimitable ability to mix grandeur and simplicity, western and Indian silhouettes has made her the most sought after designer in the film industry. She innovates by drawing inspiration from different cultures yet maintaining the ethno-Oriental feel. With over 375 films to her credit, she has extended her expertise to Hollywood projects like *Bride and Prejudice*, *Mistress of Spices* and *Provoked*. She won the national award earlier for her work in *Lamhe* and *Devdas*.

## सर्वोत्तम मेक-अप कलाकार

यू.के. शशि को नान कडावुल (तमिल) के लिए

मेक-अप कलाकार यू.के. शशि को रजत कमल और 50,000/- रूपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

*चरित्रों के विविध रंग-रूपों को शानदार बहुआयामी मेक-अप की मदद से उभारने के लिए*

## BEST MAKE-UP ARTIST

**U.K. SASI** for **NAAN KADAVUL** (Tamil)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the MAKE-UP Artist **U K Sasi**

### CITATION

*For its wide variety of make-up inputs to reflect the large spectrum of characters.*

## यू.के.शशि

यू.के.शशि को फिल्म उद्योग में 25 वर्ष से अधिक का अनुभव है। अब तक वे लगभग सौ फिल्मों में काम कर चुके हैं। 1996 में उन्हें तमिल फिल्म *नातामाई* के लिए राज्य पुरस्कार मिला। उनकी कई फिल्मों को राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुके हैं। *वेत्रीकोडीकाट्ट*, *ऑटोग्राफ* एवं *धावामाई धावामिरन्तु* इनकी मुख्य फिल्में हैं।



## U.K. SASI

U K Sasi has over 25 years' experience in the industry. So far he has worked in 100 films ( Tamil : 90 films, Telugu : 5 films, Malayalam : 3 films and Kannada : 2 films). In 1996 he got State award for the Tamil film *Naatamai*. He has also worked in the award winning films like *Vetrikodikatty*, *Autograph* and *Thavamai Thavamminindhu*

## सर्वोत्तम संगीत निर्देशन

अजय गोगावले और अतुल गोगावले को जोगवा (मराठी) के लिए

संगीत निर्देशक अजय गोगावले और अतुल गोगावले को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

*फिल्म के मुख्य विषय को अधिक सार्थक व उद्देश्यपूर्ण बनाने में परंपरागत तथा लोक संगीत की धुनों के कुशल और सफल प्रयोग के लिए*

## BEST MUSIC DIRECTION

**AJAY GOGAWLE and ATUL GOGAWLE for JOGVA (Marathi)**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Music Directors **Ajay Gogawle** and **Atul Gogawle**

### CITATION

*For its well-researched use of traditional and folk music to reinforce the theme of the film.*



## अजय गोगावले और अतुल गोगावले

अजय और अतुल संगीत निर्देशक और पार्श्व गायक हैं। उन्होंने अपना कैरियर विज्ञापनों के लिए संगीत देने से शुरू किया और बाद में वे नाटकों, प्राइवेट एलबम और फिल्मों के लिए संगीत देने लगे। उन्होंने अनेक लोकप्रिय मराठी फिल्मों का संगीत निर्देशन किया है। *जोगवा* फिल्म के लिए संगीत निर्देशन का पुरस्कार चुने जाने के बाद वे किसी मराठी फिल्म के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त करने वाले एकमात्र संगीत निर्देशक बन गए हैं।



## Ajay Gogawale and Atul Gogwale

Ajay and Atul are music composers and playback singers. They started their careers with commercial jingles and advertisements and went on to compose for plays, private albums and movies. *Saavarkhed - Ek Gaon, Aga Bai Areccha, Jatra, Jabardast, Viruddh, Shock, Ulladhaal* and *Natrang* are few of their popular movies. Their national award for music for *Jogva* makes them the only music directors to have won it for a Marathi movie.

## सर्वोत्तम गीत

अनिंद्य चटर्जी और चंद्रिल भट्टाचार्य को अंतहीन (बांगला) के लिए

गीतकार अनिंद्य चटर्जी और चंद्रिल भट्टाचार्य को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

## प्रशस्ति

*सरल-सहज काव्य सृजन के माध्यम से फिल्म की भावप्रवणता और अर्थवत्ता बढ़ाने के लिए*

## BEST LYRICS

**ANINDYA CHATTERJEE & CHANDRIL BHATTACHARYA** for  
**ANTAHEEN** (Bengali)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Lyricists **Anindya Chatterjee & Chandril Bhattacharya** for the lyric "Pherari mon.."

## CITATION

*For its simple composition of verses to contribute meaningfully to the film.*

## अनिंदय चटर्जी

अनिंदय लोकप्रिय बंगला बैंड चंद्रबिंदु के जानेमाने गीतकार, संगीतकार और गायक हैं। वे एक प्रमुख बंगला समाचार पत्र के रविवारीय संस्करण के सह संपादक भी हैं। वे कई टेलीविजन कार्यक्रमों की एंकरिंग कर चुके हैं। इससे पहले उन्होंने *क्रॉस कनेक्शन*, *बॉक्स नम्बर 1313* और *एकती तारार खोजे* के लिए भी गीत लिखे हैं। अनिंदय ने स्टार जलसा का मुख्य गीत *चालो पलताई* भी लिखा था।

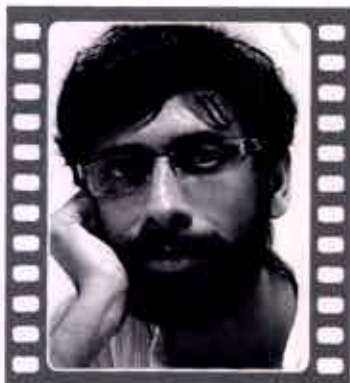


## Anindya Chatterjee

Anindya is a renowned lyricist, composer and vocalist of the popular Bangla band Chandrabindoo. He is the assistant editor of the Sunday supplement of a leading Bengali Daily. Anindya has also anchored many television programmes. Anindya has written lyrics for feature films like *Cross Connection*, *Box No. 1313*, *Antaheen*, and *Ekti Tara-r Khoj-e*. He has also written the signature song of Star Jalsa: *Chawelo Paltai*.

## चंद्रिल भट्टाचार्य

चंद्रिल भी बंगला बैंड चंद्रबिंदु के गायक हैं। वे एक प्रमुख बंगला समाचार पत्र में मीडिया समीक्षा का स्तम्भ लिखते हैं। उन्होंने सत्यजीत रे फिल्म संस्थान, कोलकाता से फिल्म निर्देशन में डिप्लोमा प्राप्त किया है। वे कई बंगला फिल्मों जैसे *क्रॉस कनेक्शन*, *बॉक्स नम्बर 1313*, *अंतहीन*, *एकती तारार खोजे* के लिए गीत लिख चुके हैं।



## Chandril Bhattacharya

Chandril is a lyricist of the popular Bangla band Chandrabindoo. He writes a popular media-review column in a leading Bengali daily. He has a diploma in film direction from Satyajit Ray Film Institute. Chandril has written lyrics for feature films like *Cross Connection*, *Box No. 1313*, *Antaheen*, and *Ekti Tara-r Khoj-e*.

## निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार

### बाईस्कोप (मलयालम)

निर्माता राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम को रजत कमल और 62,500/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक के.एम. मधुसूदनन को रजत कमल और 62,500/- रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

*इतिहास के एक अध्याय पर नज़र डालने की एक नितांत निजी शैली को सुंदरता के साथ पुनर्जीवित करने के लिए*

## SPECIAL JURY AWARD

### BIOSCOPE (Malayalam)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 62,500/- to the Producer **National Film Development Corporation**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 62,500/- to the Director **K.M. Madhusudhanan**

### CITATION

*For its exciting revival of a sincerely personal style to look back on a chapter of history.*

## राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम

राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम केन्द्र सरकार की एक स्वायत्त संस्था है जिसकी स्थापना देश में अच्छे सिनेमा के आंदोलन को प्रोत्साहन देने के लिए की गयी। इस निगम का मुख्य उद्देश्य भारतीय फिल्म उद्योग के समन्वित और सुचारु विकास की योजना बनाना और उसे कार्यान्वित करना तथा सिनेमा में श्रेष्ठता लाना है। अपनी स्थापना के बाद से निगम ने भारतीय सिनेमा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। राष्ट्रीय फिल्म वित्त निगम (और उसकी पूर्ववर्ती संस्था फिल्म विकास निगम) ने अब तक 300 से अधिक फिल्मों के लिये आर्थिक मदद दी है या उनका निर्माण किया है। विभिन्न भारतीय भाषाओं में बनी ये फिल्में काफी सराही गयी हैं और उन्हें अनेक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिले हैं।

### के.एम. मधुसूदनन

के.एम.मधुसूदनन मूल रूप से चित्रकार हैं। उन्होंने कालेज आफ फाईन आर्ट्स, त्रिवेन्द्रम और फैंकल्टी ऑफ फाईन आर्ट्स, बड़ौदा से चित्रकला की शिक्षा प्राप्त की। भारत और विदेशों में उनकी पेंटिंग्स की कई प्रदर्शनियां आयोजित हो चुकी हैं। चित्रकला का अनुभव उनके फिल्म निर्देशन के काम में काफी सहायक रहा है। उन्होंने अनेक लघु कथाचित्र भी बनाए हैं, जिन्हें पुरस्कार मिले हैं। *बाईरकोप* उनकी पहली फीचर फिल्म है जिसे तीन अन्तर्राष्ट्रीय और पांच राज्य स्तर के पुरस्कार मिल चुके हैं। इन दिनों वे भारत की मूक फिल्मों के बारे में एक फिल्म पर काम कर रहे हैं।

एनएफडीसी



**NFDC**

Cinemas of india

## National Film Development Corporation

National Film Development Corporation of India is the central agency established to encourage the good cinema movement in the country. The primary goal of the NFDC is to plan, promote and organize an integrated and efficient development of the Indian film industry and foster excellence in cinema. Over the years NFDC has provided a wide range of services essential to the growth of Indian cinema. The NFDC (and its predecessor the Film Finance Corporation) has so far funded / produced over 300 films. These films, in various Indian languages, have been widely acclaimed and have won many national and international awards.

### K.M. Madhusudhanan

Madhusudhanan went to College of Fine Arts, Trivandrum and Faculty of Fine Arts, Baroda. His paintings have been widely exhibited in India and abroad. The brilliance of colour and composition in his films owes itself to his deep-rooted visual culture. He has been honoured twice for his use of the film medium by the Museum of Modern Arts, New York and he has received several international awards for his short fiction films. The sum of his works reflects a preoccupation with art and cinema interwoven with memory and history in its cinematic and pictorial structure. *Bioscope*, his first feature film has won three international and five state awards. He is currently working on a series of paintings and films based on Indian silent cinema.



## सर्वोत्तम विशेष प्रभाव

टाटा एलेक्सी लि० को मुम्बई मेरी जान (हिंदी) के लिए

टाटा एलेक्सी लि० को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

*मानव-निर्मित विपदा को प्रस्तुत करने में दृश्य छवियों के तकनीकी प्रभावों के अद्भुत प्रयोग के लिए.*

## BEST SPECIAL EFFECTS

**TATA ELXSI LTD** for **MUMBAI MERI JAAN** (Hindi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Special Effects Creator **Tata Elxsi Ltd**

### CITATION

*For its stunning use of technical effects of visual shots to mirror a man-made disaster.*

## टाटा एलेक्सी लि०

टाटा एलेक्सी लि० भारत की प्रमुख वी.एफ.एक्स और एनिमेशन कम्पनी है। इसमें बॉलीवुड की अनेक फिल्मों के लिए दृश्य प्रभाव तैयार किये हैं, जिनमें, *रब ने बना दी जोड़ी*, *न्यूयार्क*, *द्रोण*, *बचना ए हसीनों*, *तारे जमीं पर*, *जोधा अकबर*, *रंग दे बसंती* जैसी फिल्में शामिल हैं। इसने डिस्नी, सोनी इमेज वर्क्स, आई.एल.एम, जैसी कई विदेशी कम्पनियों की परियोजनाओं पर भी काम किया है। *रोडसाईड रोमियो* भारत की श्री-डी कार्टून कला की मुख्यधारा की पहली फीचर फिल्म है। इसका निर्माण यशराज फिल्म्स ने वाल्ट डिस्नी पिक्चर्स के सहयोग से किया है।



**TATA ELXSI LIMITED**  
visual computing labs

## Tata Elxsi Ltd

Tata Elxsi is India's pre-eminent VFX and animation studios employing around 250 VFX artists and animators. It has created visual effects for several Bollywood films like *Rab Ne Bana Di Jodi*, *New York*, *Drona*, *Bachna Ae Haseeno*, *Jodhaa Akbar*, *Taare Zameen Par*, *Tara Rum Pum*, *Kabhi Alvida Na Kehna*, *Dhoom 2*, *Rang De Basanti* etc. Its clients include Yash Raj Films, UTV, Dharma Productions, Aamir Khan Productions, Ashutosh Gowariker Productions Pvt Ltd. It has executed projects for several US companies like Disney, Sony Imageworks, ILM, MGM, Lionsgate, Hasbro, Mike Young Productions etc. *Roadside Romeo* is India's first 3 D animated mainstream Bollywood feature film, co-produced by YRF with Walt Disney Pictures.

## सर्वोत्तम नृत्य निर्देशन

चिन्नी प्रकाश और रेखा प्रकाश को जोधा अकबर (हिंदी) के लिए

नृत्य निर्देशक चिन्नी प्रकाश और रेखा प्रकाश को रजत कमल और 50,000/- रूपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

*जश्न मनाने के अवसर को सपने जैसे माहौल में भव्यता के साथ चित्रित करने के लिए*

## BEST CHOREOGRAPHY

**CHINNI PRAKASH and REKHA PRAKASH for JODHAA AKBAR**  
(Hindi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Choreographers **Chinni Prakash & Rekha Prakash** for the song "Azeem-o-Shaan Shaheshah...."

### CITATION

*For its extravagant and dreamlike treatment of celebrations on a magnificent scale.*



## चिन्नी प्रकाश और रेखा प्रकाश

चिन्नी और रेखा प्रकाश की जोड़ी मुंबई की सबसे प्रसिद्ध नृत्य निर्देशक जोड़ी है। ये दोनों पिछले 27 वर्ष से अधिक समय से फिल्मों के लिए नृत्य निर्देशन कर रहे हैं। इनकी कुछ लोकप्रिय फिल्में हैं : *हम, मोहरा, रक्षक, खुदा गवाह, अग्निपथ, धड़कन, गुप्त* आदि। चिन्नी प्रकाश ने 1973 में अपने पिता के सहायक के रूप में नृत्य निर्देशन शुरू किया। 1979 में तेलुगु फिल्म *मिस्टर विजय* के साथ वे स्वतंत्र नृत्य निर्देशक बन गए। हिंदी में उनकी पहली फिल्म *प्यार करके देखो* थी।



## CHINNI and REKHA PRAKASH

One of the most famous choreographer couple in Mumbai, Chinni and Rekha Prakash have more than 27 years of experience behind them and have several hits to their credit—*Hum, Mohra, Rakshak, Khuda Gawah, Agni Path, Dhadkan, Gupt* and many more. Chinni Prakash started choreographing in 1973 as an assistant to his father. He became an independent choreographer in 1979 with the Telugu movie *Mr Vijay*. He began his innings in Hindi cinema in 1986 with *Pyar Karke Dekho*.

संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल प्रत्येक भाषा में सर्वोत्तम फिल्म

सर्वोत्तम असमिया फिल्म

मोन जई

निर्माता एम.मणिराम, सोबिता चानम और जयंत गोस्वामी को रजत कमल और 1,00,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक एम.मणिराम को रजत कमल और 1,00,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

युवावर्ग को चुनौती देने वाले नैतिक मूल्यों के प्रामाणिक अन्वेषण के लिए

**Best Feature Film in each of the languages specified in Schedule VIII of Consitution**

**BEST ASSAMESE FILM**

**MON JAI**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000/- to the Producers **M. Maniram, Sabita Chanam, Jayanta Goswami**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000/- to the Director **M. Maniram**

**CITATION**

*For its honest exploration of ethical values confronting the youth.*

## सोबिता चानम

सोबिता चानम ने महाराष्ट्र के अमरावती विश्वविद्यालय से सामाजिक विज्ञान विषय में डॉक्टरेट की है। इस समय वे गौरा गोविन्द महिला कालेज, मणिपुर विश्वविद्यालय में पढ़ाती हैं। उन्हें जनसंचार माध्यमों में काम करने का अनुभव है। उन्होंने अनेक टेलीविजन कार्यक्रमों, वृत्तचित्रों का निर्माण किया है।

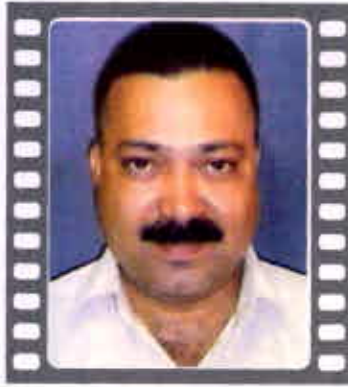


## Sobita Chanam

A doctorate in social science from Amravati University (Maharashtra), Sobita Chanam works as a lecturer in Gaura Govind Girls College, Manipur University. She has 15 years experience in mass media and has produced several TV shows, documentaries and telefilms

## जयंत गोस्वामी

जयंत गोस्वामी एक व्यापारी हैं और कला व संस्कृति के क्षेत्र में सक्रिय हैं। उन्होंने गुवाहाटी दूरदर्शन केन्द्र के लिए अनेक वृत्तचित्रों और लघु फिल्मों का निर्माण किया है। असमिया फिल्म *धुनिया तिरुता बुर* के वे सह-निर्माता थे।



## Jayanta Goswami

Jayanta Goswami is a businessman by profession and a lover of art and culture. He has been producing many documentaries and short films for Guwahati Doordarshan Kendra. He has also co-produced the Assamese feature film *Dhunia Tiruta Bur*. Two more Assamese feature films produced by him will be completed by September 2010.

## एम.मणिराम

एम.मणिराम ने 1994 में आल मणिपुर वीडियो फिल्म मेकर्स एंड प्रोड्यूसर्स एसोसिएशन में फिल्म और वीडियो टेक्नोलॉजी का प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद सहायक निर्देशक के रूप में अपने कैरियर की शुरुआत की। 2006 में टेली सीरियल *सुर-संग्राम* के साथ वे निर्देशक बन गए। उन्होंने दूरदर्शन और कई सरकारी विभागों के लिए असमिया, मणिपुरी, हिंदी और अंग्रेजी में वृत्तचित्र, टेली फिल्में और धारावाहिक बनाए हैं। उन्होंने कई धारावाहिकों और टेली फिल्मों की पटकथा भी लिखी। *मोन जई* उनकी पहली फीचर फिल्म है, जिसे 2008 के भारत के अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में भारतीय पेनोरमा वर्ग में दिखाया गया।



## M. Maniram

Trained in film and video technology by All Manipur Video Filmmakers and Producers Association, Maniram started as an assistant director in 1994 and became a director with the teleserial *Sur Sangam* in 2006. He has directed and produced documentaries, telefilms and serials for government departments and Doordarshan in Assamese, English, Manipuri and Hindi. He has also scripted several serials and telefilms. *Mon Jai* is his debut film and was selected for Indian panorama at IFFI, 2008.

## सर्वोत्तम बांगला फिल्म

### शोब चरित्रो काल्पोनिक

निर्माता रिलायंस बिग पिक्चर्स को रजत कमल और 1,00,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक रितुपर्णो घोष को रजत कमल और 1,00,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

*संकट में फंसे एक व्यक्ति की संवेदनाओं व भावनाओं की काव्यात्मक प्रस्तुति के लिए*

## **BEST BENGALI FILM**

### **SHOB CHARITRO KALPONIK**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000/- to the Producer **Reliance Big Pictures**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000/- to the Director **Rituparno Ghosh**

### **CITATION**

*For its poetic treatment of an individual's sensitivities in a crisis.*

## रिलायंस बिग पिक्चर्स

रिलायंस बिग पिक्चर्स, रिलायंस अनिल धीरुभाई अम्बानी ग्रुप की मुख्य मीडिया और मनोरंजन कंपनी रिलायंस बिग एंटरटेनमेंट लिमिटेड की एक शाखा है। इसमें अंग्रेजी, हिंदी और कई भारतीय भाषाओं में फिल्म निर्माण का सशक्त आधार तैयार कर लिया है। यह फिल्मों का विश्व स्तर पर विपणन और वितरण भी करती है। यह कंपनी भारत के नामी निर्देशकों को लेकर फिल्में बना रही है। अब तक यह *नमस्ते लंडन*, *सिंह इज किंग*, *सरकार राज*, *अपहरण*, *रॉक ऑन* और *पॉ* जैसी लोकप्रिय फिल्में बना चुकी है। रिलायंस बिग पिक्चर्स ने हिन्दी की सर्वाधिक कमाई करने वाली फिल्में *श्री ईडियट्स* और *गज़नी* का विदेशों में वितरण भी किया है।

## रितुपर्णा घोष

रितुपर्णा घोष ने जादवपुर विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र का अध्ययन किया। उनके पिता एक चित्रकार तथा वृत्तचित्र निर्माता थे। घोष ने अपना कैरियर विज्ञापनों से शुरू किया। 1992 में उन्होंने बाल फिल्म *हीरेर अंगति* बनाई। उनकी दूसरी फिल्म *उनिश एप्रिल* को 1995 का सर्वोत्तम फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। तब से रितुपर्णा घोष ने बंगला में *दहन*, *जत्सव*, *चोखेर वाली*, *असुख*, *बारीवली*, *अंतर्महल* तथा हिंदी में *रेनकोट* फिल्मों का निर्देशन किया है और अनेक राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किए हैं। *बारीवली* को बर्लिन में नेटपैक पुरस्कार मिला। उन्हें *चोखेर वाली* तथा *अंतर्महल* के लिए लोकानों समारोह में सर्वोत्तम फिल्म का पुरस्कार प्राप्त हुआ। उनकी फिल्म *शुभो मुहुर्त* को सर्वोत्तम बंगला कथाचित्र का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। उनकी अंग्रेजी फिल्म *लास्ट लीयर* को 2007 का सर्वोत्तम अंग्रेजी कथाचित्र का पुरस्कार प्राप्त हुआ।



## Reliance Big Pictures

Reliance BIG Pictures is a division of Reliance Big Entertainment Ltd, which is the flagship media and entertainment arm of the Indian conglomerate Reliance Anil Dhirubhai Ambari Group. Reliance Big Pictures has built a formidable Indian film production slate in English, Hindi and several other Indian languages, which it markets and distributes worldwide. The slate has projects with leading production houses and marquee Indian directors, both mainstream and arthouse, including Vidhu Vinod Chopra, Mani Ratnam, Rakesh Roshan, Farhan Akhtar, Amitabh Bachchan and Abhishek Bachchan, Kunal Kohli, Priyadarshan, Madhur Bhandarkar, Shaji N. Karun, Shyam Benegal, Rituparno Ghosh, Surya and others. Reliance BIG Pictures has produced/co-produced such box office successes as *Namaste London*, *Singh Is King*, *Sarkar Raj*, *Apaharan*, *Johnny Gaddar*, *Rock On*, *Luck By Chance*, *13 B* and *Paa*. Reliance BIG Pictures has also distributed globally the highest grossers in Hindi cinema- *3 Idiots* and *Ghajini* (overseas territories).



## Rituparno Ghosh

Rituparno Ghosh studied economics at Jadavpur University. His father was a documentary filmmaker and a painter. Ghosh began his career in advertising. In 1992, he made a low-key film debut with a children's feature titled *Hirer Angti* (*The Diamond Ring*). His second movie *Unish April* (19 April), won the 1995 National Film Award for best film. Since then, Ghosh has directed *Dahan*, *Utsab*, *Chokher Bali*, *Asukh*, *Bariwali*, *Antarmahal* and *Raincoat* (in Hindi) and won several national and international awards. *Bariwali* won the NETPAC award at Berlin. Ghosh won the best film award at Locarno for *Chokher Bali* and later *Antarmahal*. *Shubho Mahurat* got him the national award for best Bengali film and *Last Lear* got the award for best English film in the national film awards 2007.

## सर्वोत्तम हिंदी फिल्म

### रॉक ऑन

निर्माता रितेश सिधवानी और फरहान अख्तर को रजत कमल और 1,00,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक अभिषेक कपूर को रजत कमल और 1,00,000/-रुपये का नकद पुरस्कार।

### प्रशस्ति

*संगीतमय संबंधों की भावपूर्ण कहानी के लिए*

## BEST HINDI FILM

### ROCK ON

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000/- to the Producers **Ritesh Sidhwani & Farhan Akhtar**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000/- to the Director **Abhishek Kapoor**

### CITATION

*For an emotional story*

## रितेश सिधवानी

फिल्म क्षेत्र में प्रवेश करने से पहले रितेश सिधवानी घरेलू सामान बेचने की अपनी पारिवारिक कम्पनी मार्लेक्स का काम संभालते थे। 6 वर्ष तक मार्केटिंग और प्रबंधन के क्षेत्र में रहते हुए भी उनका सपना फिल्म निर्माण कम्पनी बनाने का था। 1999 में उन्होंने फरहान अख्तर के साथ मिलकर एक्सेल एंटरटेनमेंट प्रा० लि० नाम की फिल्म निर्माण कम्पनी बनायी। कम्पनी की पहली फिल्म, *दिल चाहता है* काफी लोकप्रिय हुई और उसे 2001 के लिये सर्वोत्तम हिंदी कथाचित्र का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला।

## फरहान अख्तर

1974 में जन्मे फरहान अख्तर को फिल्म कला विरासत में मिली है। वे जाने-माने गीतकार जावेद अख्तर और अभिनेत्री हनी ईरानी के बेटे हैं। 17 साल की उम्र में उन्होंने छायाकार मनमोहन सिंह से फोटोग्राफी सीखनी शुरू की। इसके बाद वे पंकज पाराशर के सहायक रहे और बाद में स्क्रिप्ट शॉप नामक टेलीविजन निर्माण कम्पनी में तीन साल काम किया। 1999 में फरहान ने रितेश सिधवानी के साथ *दिल चाहता है* फिल्म बनायी जिसमें उनके निर्देशन की काफी सराहना हुई। थोड़े से समय में ही फरहान ने हिंदी फिल्म उद्योग में अपनी अलग पहचान बना ली है।

## अभिषेक कपूर

अभिषेक कपूर ने 1996 में अभिनेता के रूप में अपना कैरियर शुरू किया। दो-तीन फिल्मों में अभिनय के बाद वे टेलीविजन धारावाहिक बनाने वाली कम्पनी बाला जी टेलीफिल्म्स के साथ जुड़ गए। 2006 में आई *आर्यन* निर्देशक के रूप में उनकी पहली फिल्म थी। *रॉक ऑन* उनकी दूसरी फिल्म है।



## Ritesh Sidhwani

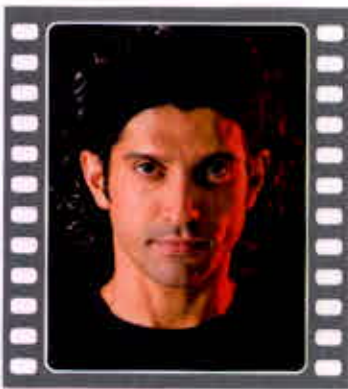
Though always an ardent film buff, Ritesh Sidhwani started his career by joining his family business - Marlex, the largest selling home appliances brand in India. Even as he fine-tuned his skills in marketing and management for six years, he never gave up his dream of wanting to start a production company of his own. It was only after thoroughly researching the business for a couple of years, that he teamed up with Farhan Akhtar in 1999, to launch a film production house - Excel Entertainment Pvt. Ltd. His first film *Dil Chahta Hai* won him the National Award for Best Hindi Feature Film in 2001.

## Farhan Akhtar

Born in 1974 to prolific Indian film writers, Javed Akhtar and Honey Irani, Farhan has been exposed to films ever since he was a child. Starting at the age of 17, he worked as an apprentice with cinematographer Manmohan Singh, before assisting filmmaker Pankaj Parashar, and then worked three years in a television production house, Script Shop. These years were spent performing varied roles on different projects—production manager, post production supervisor, editor, copywriter and corporate film director. Farhan teamed up with Ritesh Sidhwani in 1999 and started work on his first feature film project. Debuting with *Dil Chahta Hai* (2001), a film that would affect a generation of filmmakers to come, Farhan was lauded for his honest, path-breaking writing and extracting mature performances from the cast. He is looked upon as the leader of a new sensibility that has taken hold of the popular conscience in Indian film.

## Abhishek Kapoor

Born and brought up in Mumbai, Abhishek Kapoor started off as an actor in 1996 working in movies like *Uff Yeh Mohabbat*, *Aashique Mastana* and *Shikhar*. He worked closely with Balaji Telefilms on projects like, *Jeans* and *Josh*. He made his directorial debut with the film *Aryan* in 2006. *Rock On* is his second film as a director.



## सर्वोत्तम कन्नड़ फिल्म

### विमुक्ति

निर्माता नव्यचित्र क्रिएशन्स को रजत कमल और 1,00,000/- रूपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक पी.शेषाद्रि को रजत कमल और 1,00,000/-रूपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

*पारिवारिक रिश्तों के विविध आयामों के अन्वेषण के लिए*

## **BEST KANNADA FILM**

### **VIMUKTHI**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000/- to the Producer **Navyachitra Creations**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000/- to the Director **P. Sheshadri**

### **CITATION**

*For exploring different dimension of family ties.*



## नव्यचित्र क्रिएशन्स

नव्यचित्र कर्नाटक के युवा फिल्मकारों का समूह है जिसका उद्देश्य सहकारिता के आधार पर अर्थपूर्ण और सामाजिक दृष्टि से उपयोगी फिल्में बनाना है। 2000 में इस गुप ने *मुन्नुडी* फिल्म बनायी जिसे अनेक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में प्रदर्शित किया गया। इसे दो राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिले। 2001 में बनी *अतिथि* और 2003 में आयी *बेरु* फिल्मों को भी राष्ट्रीय पुरस्कार मिले।

## पी.शेषाद्रि

पी.शेषाद्रि ने कन्नड साहित्य में स्नातकोत्तर डिग्री और पत्रकारिता में डिप्लोमा प्राप्त किया। उन्होंने अपने फिल्मी जीवन का आरंभ पटकथा और संवाद लेखक के रूप में किया। 1995 में उन्होंने टेलीविजन धारावाहिकों, वृत्तचित्रों और टेलीफिल्मों का निर्देशन शुरू किया। उनकी अब तक की चारों फिल्मों को राष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं।



## BEST KANNADA FILM: VIMUKTHI

### Navyachitra Creations

Navyachitra is a group of young people from Karnataka that aims to produce meaningful, socially relevant films on co-operative basis. They produced *Munnudi* in 2000 that won two national awards and travelled to film festivals in Kerala, Mumbai, Flanders (Belgium) and Palm Springs (USA). *Atithi* (2001) and *Beru* (2003) also won national awards. *Vimukthi* is their latest production.

## P. Sheshadri

A post-graduate in Kannada literature and a diploma holder in journalism, P. Sheshadri started in filmdom as screenplay and dialogue writer. In 1995 he became an independent director of TV serials, documentaries and telefilms. All his feature films—*Munnudi*, *Atithi*, *Beru*, *Thutturi* and *Vimukthi*—have bagged national awards.

## सर्वोत्तम मलयालम फिल्म

### तिरक्कदा

निर्माता कैपिटल थियेटर और वर्णचित्र बिग स्क्रीन को रजत कमल और 1,00,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक रंजित को रजत कमल और 1,00,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

*एक अभिनेत्री की मर्मस्पर्शी कहानी को पूरी ईमानदारी और विश्वास के साथ चित्रित करने के लिए।*

## BEST MALAYALAM FILM

### THIRAKKADA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000/- to the Producers **Capitol Theatre and Varnachithra BIGSCREEN**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000/- to the Director **Ranjith**

### CITATION

*For its poignant story of an actress, told with sincerity and conviction.*

## वर्णचित्र बिग स्क्रीन

महासुबेर वर्णचित्र बिग स्क्रीन के निर्माता और मुख्य कार्यकारी अधिकारी हैं। उन्होंने मलयालम की अनेक श्रेष्ठ फिल्मों का निर्माण किया है। उन्होंने रंजित के साथ मम्मूटी को लेकर तिरक्कधा और *मोनिक्क्यम* फिल्में बनायीं। अब वे मोहनलाल, दिलीप और सुरेश गोपी को लेकर *क्रिश्चियन ब्रदर्स* फिल्म बना रहे हैं।

## कैपिटल थियेटर

कैपिटल थियेटर फिल्मकार रंजीत की फिल्म निर्माण कम्पनी है। रंजीत एक मंजे हुए पटकथा लेखक भी हैं। निर्देशक के रूप में उन्होंने पहली फिल्म *रावणप्रभु* 2001 में बनायी। *तिरक्कधा* का निर्माण, निर्देशन और लेखन रंजीत ने किया है।

## रंजीत

1964 में जन्मे कुनिथला रंजीत मलयालम फिल्मों के अत्यंत लोकप्रिय पटकथा लेखक और निर्देशक हैं। निर्देशक के रूप में उनकी पहली फिल्म *रावणप्रभु* 2001 में आई। 2008 में उन्होंने जयराज की फिल्म *गुल मोहर* में अभिनय भी किया। *तिरक्कधा* के निर्माण, निर्देशन और लेखन के साथ-साथ उन्होंने अभिनय भी किया है।



Varnachithra Bigscreen

## VARNACHITHRA BIG SCREEN

Mahasubair is the producer and CEO of Varnachithra Bigscreen. He has to his credit some of the biggest productions of Malayalam cinema. After *Meesa Madhavan*, *Pattalam*, *Manassinakkare* and *Udayan*, which were all noted for their high production values, Mahasubair teamed up with director Ranjith to make *Thirakkadha* and *Naleri Manikyam*, starring Mammooty. His latest production is *Christian Brothers* starring three superstars—Mohanlal, Dileep and Suresh Gopi.

## Capital Theatre

Capitol Theatre is Ranjith's Feature film production house which has made notable films in Malayalam in recent times, like *Kayyoppu*, and *Kerala Cafe*. The production house hosts talents in production, design, editing, writing and research and is also foraying into two major projects in 2010.

## RANJITH

Born in 1964 Kunithala Renjith, better known as Ranjith, is a popular screenwriter and director of Malayalam films. He is famous for scripting films such as *Devasuram*, *Aaram Thamburan* and *Narashimham*. He made his directorial debut with *Ravanaprabhu* in 2001 and also made *Nandanam*, *Mizhi Randilum*, *Black* and *Kayyoppu*. He made his acting debut in 2008 with Jayaraj's *Gulmohar*. He has produced, written, directed and acted in *Thirakkatha*.



## सर्वोत्तम मराठी फिल्म

### हरिशचंद्राची फैक्टरी

निर्माता यूटीवी मोशन पिक्चर्स, स्मिति कानोडिया और परेश मोकाशी को रजत कमल और 1,00,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक परेश मोकाशी को रजत कमल और 1,00,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

*इतिहास के एक युग के मौलिक एवं विशिष्ट पुनसृजन के लिए।*

## BEST MARATHI FILM

### HARISHCHANDRACHI FACTORY

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000/- to the Producers **UTV Motion Pictures, Smiti Kanodia** and **Paresh Mokashi**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000/- to the Director **Paresh Mokashi**

### CITATION

*For its original and stylized recreation of a slice of history.*

## यूटीवी मोशन पिक्चर्स

यूटी.वी मोशन पिक्चर्स, यूटीवी कम्पनी के कई विभागों में से एक है जो हिन्दी फिल्म उद्योग के सबसे बड़े स्टूडियो में गिना जाता है। इसने कई पुरस्कार विजेता फिल्मों का निर्माण, विपणन और वितरण विश्व स्तर पर किया है। इस कम्पनी ने नई फिल्मों के निर्माण में ही नहीं नए ढंग की कहानियों पर भारत में फिल्म निर्माण की नई शैली भी विकसित की है। पर भी काम करने की हिम्मत दिखायी है। इससे देश में फिल्म उद्योग में सकारात्मक परिवर्तन आया है। यूटीवी मोशन पिक्चर्स के व्यापार के दायरे में निर्माण, विश्व स्तर पर विपणन, वितरण और अन्य फिल्म निर्माताओं से सहयोग जैसी गतिविधियां शामिल हैं। यह हिन्दी फिल्मों के साथ-साथ क्षेत्रीय फिल्मों, कार्टून फिल्मों का निर्माण भी करती है। इसने वॉल्ट डिस्नी कम्पनी के साथ फिल्मों के वितरण का विशेष समझौता भी किया हुआ है।

## स्मिति कनोडिया

### परेश मोकाशी

परेश मोकाशी पिछले 20 वर्षों से रंगमंच से जुड़े रहे हैं। उन्होंने अपने कैरियर की शुरुआत पुणे की थिएटर अकादमी में अभिनेता के रूप में की। परेश ने बर्लिन के ग्रिप्स थिएटर में भी काम किया। बाद में वे लेखन और निर्देशन के क्षेत्र में आ गए। नाटकों का निर्देशन करते हुए उन्होंने कई तरह के प्रयोग किए। वे वेद, रामायण, महाभारत जैसे प्राचीन ग्रंथों में शोध भी कर रहे हैं। *हरीशचंद्राची फ़ैक्टरी* उनकी पहली फिल्म है।



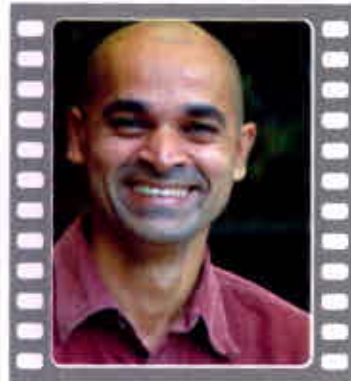
## UTV Motion Pictures

UTV Motion Pictures, one of UTV's many divisions, is among the largest studios of the Indian film industry with an impressive line-up of award-winning film titles that are produced, marketed and distributed worldwide. They claim to have pioneered not just newer films and story ideas, but also the very manner in which films are made in India. From novel plots and stories that one would think can never work in mainstream cinema, to pioneering the studio model in movie production, UTV claims to have led positive change in the Indian motion picture industry. UTV's Motion Pictures business spans the integrated model of creative development, production, marketing, distribution, merchandising and syndication worldwide. UTV's portfolio includes Hindi movies, regional movies, animation, international productions and co productions.

## Smiti Kanodia

### Paresh Mokashi

Paresh Mokashi has been associated with theatre for the last 20 years. He started as an actor in Theatre Academy, Pune and was also associated with Grips Theatre, Berlin. Then he shifted to writing and directing. *Sangeet Debuchya Muli*, *Mukkam Post Bombilwadi* and *Lagnakallol* are a few of his plays which have been acclaimed for experimentations in vivid yet atypical humour. He is also involved in researching on ancient scriptures like the Vedas, Ramayana and Mahabharata. *Harishchandrachi Factory* is his debut film.



## सर्वोत्तम तमिल फिल्म

### वारणम आयीरम

निर्माता आस्कर फिल्म प्रा०लि० को रजत कमल और 1,00,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक गौतम वसुदेव मेनन को रजत कमल और 1,00,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

*पिता और पुत्र के संबंधों के रोचक व प्रभावपूर्ण चित्रण के लिए*

## BEST TAMIL FILM

### VERANAM AIRAM

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000/- to the Producer **Aascar Film Pvt Ltd**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000/- to the Director **Gautham Vasudeva Menon**

### CITATION

*For its engaging depiction of a father and son relationship.*

## आस्कर फिल्म प्रा0लि0

वी रविचंद्रन आस्कर फिल्म प्रा0 लि0 के प्रबंध निदेशक हैं। उन्होंने फिल्म वितरक के रूप में सिनेमा उद्योग में प्रवेश किया। निर्माता के रूप में उनकी पहली तमिल फिल्म *वनथईपोला* को लोकप्रिय और स्वस्थ मनोरंजन करने वाली सर्वोत्तम फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। उन्होंने जाने-माने अभिनेताओं कमल हासन, विजयकांत, विक्रम आदि को लेकर अनेक लोकप्रिय फिल्में बनाई हैं।

## गौतम वसुदेव मेनन

गौतम वसुदेव मेनन फिल्म निर्माण के क्षेत्र में आने से पहले इंजीनियर थे। फिल्मकार के रूप में अपने छोटे से कार्यकाल में ही उन्होंने कई फिल्में बनायीं और तमिल फिल्म उद्योग को नई दिशा दी। उन्होंने फिल्मी जीवन की शुरुआत विज्ञापन फिल्मों के निर्माण से की। उन्होंने राजीव मेनन की फिल्म *मिनसारा कनावु* के सहायक निर्देशक के रूप में काम किया। 2001 में बनी गौतम की पहली फिल्म *मिन्नाले* काफी लोकप्रिय हुई और हिंदी में उसके रीमेक के रूप में *रहना है तेरे दिल में* फिल्म बनी। गौतम द्वारा निर्देशित दूसरी फिल्म *काखा काखा* भी हिट हुई। उनकी बाद की भी लगभग सभी फिल्में खूब चली। गौतम इस समय तमिल सिनेमा के शीर्ष फिल्मकारों में गिने जाते हैं।



## AASCAR FILM PRIVATE LIMITED

Mr. V. Ravichandran is the Managing Director of M/s. Aascar Film Pvt. Ltd., He hails from Vellore in Tamil Nadu. He started his career as an exhibitor and distributor. His maiden production in Tamil, *Vanathaipola*, won the national award in the wholesome entertainment category. His other popular productions include *Dasavatharam* with Kamalahasan, *Anniyan* with Vikram, *Ramana* with Vijayakanth, *Poovellam Un Vasam* with Ajith and *Veranam Airam* with Surya.

## Gautham Vasudeva Menon

Gautham Vasudev Menon is an engineer turned filmmaker, who has to his credit, in a rather short span of time, a number of films that have become trendsetters in the Tamil film industry. He launched his career in films as an ad film maker, shooting commercials under renowned filmmaker Rajiv Menon. He worked as an assistant director for Rajiv Menon's *Minsaara Kanavu*. Gautham's first film titled *Minnale* (2001), with Madhavan, Abbas and Reema Sen playing the lead roles, was a huge hit and soon after he got an offer to remake it in Bollywood as *Rehnaa Hai Tere Dil Mein* starring Madhavan in the lead, opposite Dia Mirza.

Following *Minnale*, Gautham scripted and directed *Kaakha Kaakha*, his second super hit film in a row, starring Surya, Jyothika and Jeevan. *Vettaiyadu Villayadu*, starring Kamal Hassan, *Pachchai Killi Muthu Charam*, *Veranam Airam*, *Vinnaithaandi Varuvaayaa* and *Ye Maaya Chesave* (Telugu) are his other hits. Gautham is one of the top-ranking directors of Tamil cinema. At present he is filming a thriller set entirely in the night, starring Sameera Reddy and two new actors Veera and Karthik.



## सर्वोत्तम तेलुगु फिल्म

### 1940 लूकाग्रामम

निर्माता श्री लक्ष्मी नरसिम्हा सिनेमा को रजत कमल और 1,00,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक नरसिम्हा नंदी को रजत कमल और 1,00,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

*जातिगत भेदभाव के साहसपूर्ण चित्रण के लिए*

## BEST TELUGU FILM

### 1940 LOOKAGRAMAM

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000/- to the Producer **Sri Lakshmi Narasimha Cinema**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000/- to the Director **Narasimha Nandi**

### CITATION

*For its courageous handling of caste-based prejudices.*



## श्री लक्ष्मी नरसिम्हा सिनेमा

1940 लूकाग्रामम श्री लक्ष्मी नरसिम्हा सिनेमा कम्पनी की पहली फिल्म है। फिल्म के निर्माता एन.सी.नरसिम्हम आन्ध्रप्रदेश के प्रकासम जिले के रहने वाले हैं।

## नरसिम्हा नंदी

35 वर्ष के नरसिम्हा नंदी हैदराबाद में रहते हैं। निर्देशक के रूप में 1940 लूकाग्रामम उनकी पहली फिल्म है। इन दिनों वे अपनी दूसरी फिल्म *हाई स्कूल* पर काम कर रहे हैं।



## Sri Lakshmi Narasimha Cinema

1940 *Lookagramam* is the first production of Narasimha cinema. Producer N.C. Narasimham hails from Prakasam district in Andhra Pradesh.

## Narasimha Nandi

35-year-old Narasimha Nandi is based in Hyderabad. 1940 *Lookagramam* is his debut directorial venture. His second film is called *High School*.

संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भाषाओं से इतर भाषाओं में सर्वोत्तम फिल्म

सर्वोत्तम अंग्रेजी फिल्म

लैंड गोल्ड वुमेन

निर्माता विवेक बी. अग्रवाल को रजत कमल और 1,00,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक अवंतिका हरि को रजत कमल और 1,00,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

**प्रशस्ति**

*परिवार व जाति की इज्जत के नाम पर लड़कियों को मार डालने की कुप्रथा के सशक्त चित्रण के लिए*

**Best Feature Film in the languages other than specified in Schedule VIII of Consitution**

**BEST ENGLISH FILM**

**LAND GOLD WOMAN**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000/- to the Producer **Vivek B Agrawal**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000/- to the Director **Avantika Hari**

**CITATION**

*For its intense depiction of the issue of honour killing.*

## विवेक बी. अग्रवाल

विवेक अग्रवाल एक दशक से अधिक समय से भारतीय फिल्म उद्योग से जुड़े रहे हैं। वे लाईन प्रोड्यूसर, एकजीक्युटिव प्रोड्यूसर, सह-निर्देशक, कलाकार निर्देशक, फिल्म निर्माता और निर्देशक जैसी विभिन्न भूमिकाओं में काम कर चुके हैं। उन्होंने अपना फिल्मी कैरियर 1994 में शुरू किया। निर्देशक के रूप में उनकी पहली फिल्म *आई सी यू* 2006 में रिलीज हुई। उन्होंने *लैंड गोल्ड वुमेन* का निर्माण इंग्लैंड में किया, जिसमें ब्रिटेन के कलाकारों और आठ अलग देशों के तकनीकी कर्मचारियों से काम लिया।



## Vivek B. Agrawal

Vivek Agrawal has been associated with the Indian film industry for over a decade in various capacities—line producer, executive producer, 1<sup>st</sup> AD, associate director, casting director, visual effects director, producer and director. He started his career in 1994 and has worked on over 200 commercials and 10 feature films in various capacities. His maiden directorial venture *I See You* released in 2006. *Land Gold Women* has been produced by him in England with a British cast and crew from eight different nationalities.

## अवंतिका हरि

अवंतिका ने अमरीका में स्टेटसन विश्वविद्यालय फ्लोरिडा से 2002 में अर्थशास्त्र और दृश्यकला विषयों में स्नातक की डिग्री प्राप्त की। इसके बाद उन्होंने कैलीफोर्निया में स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय से सृजनात्मक लेखन और फिल्म निर्माण का अध्ययन किया और साथ ही अपनी मल्टीमीडिया कंसल्टिंग फर्म बना ली। 2004 में उन्होंने लंदन फिल्म स्कूल से स्नातक की डिग्री हासिल की। *लैंड गोल्ड वुमेन* फिल्म की कहानी उन्होंने अपने अध्ययन काल के दौरान ही लिख ली थी। उन्होंने बॉलीवुड फिल्म *रामजी लन्दनवाले* की पटकथा लिखी और निर्देशन में सहयोग दिया। *लैंड गोल्ड वुमेन* का प्रीमियर 2009 में गोवा में भारत के अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में किया गया। इस फिल्म को कई पुरस्कार मिल चुके हैं।



## Avantika Hari

Avantika is a filmmaker based in Mumbai. She graduated with a double major in visual arts and economics from Stetson University, Florida, in 2002. She then managed her own multimedia consulting firm while studying creative writing and filmmaking at Stanford University, California. A graduate of the London Film School, 2004, Avantika wrote *Land Gold Women* while still in university. She assisted and wrote for the Bollywood film, *Ramji Londonwale* and has also helped create corporate videos for some of Dubai's biggest companies. She was the recipient of the Commonwealth Vision Award 2006 for her film, *Hat Day*. *Land Gold Women* was premiered at the International Film festival of India, Goa, 2009. It won the Foreign Correspondents Association's Purple Orchid award for best film and the best script/screenplay award at the Asian festival of First Films 2009.

## सर्वोत्तम कोकबोरोक फिल्म

### यारवंग

निर्माता संपारी पिक्चर्स को रजत कमल और 1,00,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक जोसेफ पुलिंथनाथ को रजत कमल और 1,00,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

*अपने जीवन को फिर से शुरू करने के इच्छुक विस्थापित लोगों के उद्देश्यपूर्ण कथा के चित्रण के लिए*

## **BEST KOKBOROK FILM**

### **YARWNG**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000/- to the Producer **Sampari Pictures**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000/- to the Director **Joseph Pulinthanath SDB**

### **CITATION**

*For a meaningful story of displaced people looking to rebuild their lives.*

## संपारी पिक्चर्स

संपारी पिक्चर्स ने कोकबोरोक भाषा की पहली फिल्म *मटिया* का निर्माण 2004 में किया। इस कम्पनी ने 2006 में भारत सरकार के लिए 13 एपिसोड के हिंदी धारावाहिक *परिवार* का भी निर्माण किया। *यारवंग* इस कम्पनी की तीसरी फिल्म है। कम्पनी के संचालक के.जे.जोसफ किजाकेचेनाड पिछले 35 वर्षों से पूर्वोत्तर क्षेत्र के सांस्कृतिक जीवन से जुड़े रहे हैं।



## Sampari Pictures

Sampari Pictures, registered with Eastern India Motion Pictures Association, produced *Mathia*, the first feature film in Kokborok language in 2004. They also made *Pariwaar*, a 13-episode Hindi TV serial for government of India in 2006. *Yarwng* is their third production. The owner and proprietor of Sampari Pictures, KJ Joseph Kizhakechennad has worked for over 35 years in developmental and cultural works in the North East.

## जोसेफ पुलिथनाथ

जोसेफ पुलिथनाथ ने नॉर्थ ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी से अंग्रेजी में स्नातक की डिग्री प्राप्त करने के बाद धर्मशास्त्र में स्नातकोत्तर डिग्री हासिल की। उन्होंने भारतीय फिल्म एवं टेलीविज़न संस्थान, पुणे में फिल्म कला का अध्ययन किया। जोसेफ कैथोलिक पादरी हैं और अपनी पहली फिल्म *मटिया* से चर्चा में आए। इस फिल्म को राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला।



## Joseph Pulinthanath

After graduating in English from the North Eastern Hill University, Pulinthanath did his master's in theology also in Shillong. He completed his film studies and film appreciation courses in Delhi and FTIL, Pune. The multilingual director from Tripura is a Catholic priest and shot into limelight with his film *Mathia*. The first film in the Kokborok tribal language won a national award for its sensitive handling of a potent theme: witch hunting. *Yarwng* focuses on another practice peculiar to the North East hills, that of jhum cultivation.

## सर्वोत्तम तुलु फिल्म

### गग्गरा

निर्माता डीमा सिने प्रोडक्शन्स को रजत कमल और 1,00,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक शिवध्वज शेटी को रजत कमल और 1,00,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

*परंपरागत लोक शैलियों के संरक्षण के सराहनीय प्रयास के लिए।*

## **BEST TULU FILM**

### **GAGGARA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000/- to the Producer **D'Ma Cine Productions**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000/- to the Director **Shivadhvaj Shetty**

### **CITATION**

*For its attempt to preserve traditional folk forms.*

## डीमा सिने प्रोडक्शन्स

डीमा सिने प्रोडक्शन्स की स्थापना 2008 में हुई। यह फिल्म निर्माण कम्पनी विभिन्न बैनरों के अन्तर्गत दस फिल्में बना चुकी है। यह कम्पनी फिल्म और टेलीविजन धारावाहिकों से जुड़ी अनेक सेवाएं उपलब्ध कराती है। *गग्गरा* डीमा सिने प्रोडक्शन्स के बैनर तले बनी पहली फिल्म है।

## शिवध्वज शेट्टी

शिवध्वज शेट्टी लगभग 12 वर्षों से फिल्म क्षेत्र में सक्रिय हैं। उन्होंने 22 कन्नड़ फिल्मों, एक तेलुगु और एक मलयालम फिल्म में अभिनय किया है। *गग्गरा* से पहल शिवध्वज ने कन्नड़ फिल्म नीने-नीने फिल्म की पटकथा लिखी और निर्देशन किया। प्रोडक्शन हाउस के नाम से उनकी अपनी फिल्म निर्माण कम्पनी भी है। *गग्गरा* फिल्म 2009 के भारत के अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में भारतीय पेनोरमा वर्ग में प्रदर्शित की गयी।



## D' Ma Cine Productions

D'Ma Cine Productions was established in 2008. It has produced more than 10 films in the recent past under various banners and with Shri. Gurudutta, who has an experience of working in various departments of film & serial making. *Gaggara* is the first effort under this banner.

## Shivadhvaj Shetty

Shivadhvaj Shetty has been working in the film industry for more than 12 years. He has worked in lead roles for 22 Kannada, one Telegu and one Malayalam film. Before *Gaggara*, Shivadhvaj has written and directed a Kannada film, *Neene Neene*. He has his own production company called Production House. *Gaggara* was selected in the Indian panorama for IFFI, 2009.

## पुरस्कार जो नहीं दिए गए

सर्वोत्तम भोजपुरी फिल्म  
सर्वोत्तम कोडावा फिल्म  
सर्वोत्तम ओड़िया फिल्म  
सर्वोत्तम पंजाबी फिल्म

### **AWARDS NOT GIVEN**

**Best Bhojpuri Film**

**Best Kodava Film**

**Best Oriya Film**

**Best Punjabi Film**



गैर फीचर फिल्म पुरस्कार

---

**Awards for Non-Feature Films**



## CINEMA 2008 : AN OVERVIEW

*-By Arunaraje Patil*



We saw a broad spectrum of films - from the very personal, delving into a child's mind to the struggle for empowerment of women and marginalized societies to broad social and national issues.

A bunch of 99 films, they could not have been more different. Having decided as a Jury to select films that brought forth excellence which pushed the boundaries of creativity, we chose to cover a criteria that spanned over the film's form, content, craft and what the films communicated. Did the films leave the audience with new information, new insights and new things to chew on - provoke them to reflect? Was there social responsibility present?

Did the documentaries expose the reality authentically, strip naked what lay underneath the veneer of social hypocrisy, sift perceptions for truths hitherto concealed, give a deeper understanding of a situation or people and what was the filmmaker's take on the situation? As against that, short fiction films were a challenge to determine the filmmaker's mastery in telling a story using the elements of cinema - was the filmmaker innovative, how well were the ploys of story-telling used and what were you as an audience left with?

It was interesting to note that on the one hand we saw the latent violence building up in a child when he is traumatized and humiliated in a situation when forced to conform to traditional rituals and on the other hand a marginalized people in Manipur in a non-violent protest against violence of another kind. We saw ethnic communities who still today live simply in harmony with nature, using their indigenous skills and methods to survive, whether they are dealing with the harsh cold terrain of the snow-clad mountains or a river gone wild with its waters gushing with complete abandon.

It was inspiring to see two Adivasi women break through their own constraints as well as the social limitations imposed on them and make themselves heard - one through sensitive insightful poetry and the other through grass roots journalism. While there was a woman who posed nude for art students, discovering her identity and her own relationship to herself and society there was

also a woman who was free and fearless - who lived her life on her own terms without letting any adversity like her semi-burnt body kill her spirit.

A long forgotten village in the far east and how its people had dealt with the Japanese invasion during the Second World War; a blow by blow reconstruction of the assassination of Rajiv Gandhi; an innovative health campaign; a highly creative little film with a message for conservation; a saga of an adventurous wandering bottle that spoke for travel and tourism; the horrifying spectre of children working in garbage dumps and cremation grounds, deprived of a future - these were some of the gems we saw.

What we appreciated as a Jury was the freedom the filmmakers experienced in not only making these films that challenged who we are as a people, a country but also the acknowledgement that we are able to give them in awarding the best of them.

*An iconoclast film maker and motivation speaker, Arunaraje Patil is Chairperson of Jury (Non-feature Films), 56th National Film Awards 2008.*

*The views expressed in this article do not necessarily reflect those of other Members of the Jury or of Directorate of Film Festivals.*

## सर्वोत्तम गैर-फीचर फिल्म

### ए एफ एस पी ए 1958

निर्माता बाचस्पतिमायुम सुंजु और हाओबन पबन कुमार को स्वर्ण कमल और 1,00,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक हाओबन पबन कुमार को स्वर्ण कमल और 1,00,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

मणिपुर के लोगों के एक ऐसे कानून के खिलाफ अहिंसक आंदोलन के साहसपूर्ण चित्रण के लिए जो उनके आत्म-सम्मान और लोकतंत्र के आधारभूत मूल्यों पर चोट करता है। विभिन्न कर्मियों द्वारा तथ्यों की प्रस्तुति की प्रक्रिया और शैली से फिल्म को विविध परिप्रेक्ष्य मिल जाते हैं

### Best Non-Feature film

### AFSPA 1958

Swarna Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000/- to the Producers **Bachaspatimayum Sunzu & Haobam Paban Kumar**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000/- to the Director **Haobam Pawan Kumar**

### CITATION

*A courageous depiction of the non - violent resistance of the people of Manipur to protest against a legislation which undermines the values of self respect and the fundamentals of democracy. The documentation process by various crews and the way it is chronicled offers multiple perspectives.*

## बाचस्पतिमायुम सुंजु

बाचस्पतिमायुम सुंजु ने राजनीति शास्त्र में एम.ए. करने के बाद मुंबई के एक्स आई सी से फिल्म और वीडियो में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय नई दिल्ली से पत्रकारिता और जनसंचार में स्नातकोत्तर डिप्लोमा प्राप्त किया। वे टीवी पत्रकार के रूप में भी काम कर चुके हैं। उन्होंने कई श्रेष्ठ वृत्तचित्रों का निर्माण, निर्देशन, संपादन और लेखन किया है।



## Bachaspatimayum Sunzu

Bachaspatimayum Sunzu is a post graduate in political science with a post graduate diploma in communication arts in film & video from XIC, Mumbai and a post graduate diploma in journalism & mass communication from IGNOU, New Delhi. He has been a TV journalist and producer and has scripted, directed, edited and produced several acclaimed documentaries. *AFSPA, 1958* won the FIPRESCI Critics Prize & International Jury Award at Mumbai International Documentary & Shorts Film Festival, 2006.

## हाओबन पबन कुमार

हाओबन पबन कुमार ने सत्यजीत रे फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, कोलकाता में प्रशिक्षण लिया। उनकी फिल्मों *कंगला*, *एएफएसपीए 1958* एवं *ए क्राइ इन द डार्क* को अनेक अंतर्राष्ट्रीय उनकी डिप्लोमा फिल्म एनगेहक लैम्बिड का 2007 के भारत के अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह के भारतीय पैनोरमा वर्ग में चयन किया गया। इस फिल्म को 2009 में गुवाहाटी के अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में श्रेष्ठ लघु फिल्म का पुरस्कार मिला। उनकी लघु फिल्म *द फर्स्ट लीप* 2009 के भारत के अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में भारतीय पैनोरमा वर्ग में दिखायी गयी।



## Haobam Paban Kumar

Haobam Paban Kumar is an alumnus of Satyajit Ray Film & Television Institute Kolkata. His film *Kangla*, *AFSPA 1958* and *A Cry In The Dark* have won numerous international awards including the FIPRESCI PRIZE at MIFF, 2006. His diploma film *Ngathuk Lambid* was selected for the prestigious Indian Panorama IFFI 2007. The film was also screened at the 21st Singapore International Film Festival 2007 and won the Best Short Film Award at the CineASA International film festival, Guwahati 2009. His latest film *The First Leap* was screened at the Indian Panorama IFFI 2009.

## निर्देशक का पहला सर्वोत्तम गैर-फीचर फिल्म

### विट्ठल

निर्माता न्यू मून फिल्म्स और मनु पुष्पेंद्रन को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार  
निर्देशक वीनू चोलीपरांबिल को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

एक बच्चे के मन में अपने ऊपर थोपे गए सामाजिक रीति-रिवाजों के खिलाफ पनप रहे क्रोध के संवेदनशील चित्रण के लिए। फिल्म निर्माता ने पटकथा के इस्तेमाल और अभिनेताओं से काम लेने में परिपक्वता और कौशल का परिचय दिया है और वयस्क लोगों की दुनिया में घिरे बच्चे के मन की जटिलता का सुंदर चित्रण किया है।

### Best First Non-Feature Film of a Director

#### VITTHAL

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Producers **New Moon Films & Manu Pushpendran**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Director **Vinoo Choliparambil**

#### CITATION

*A sensitive portrayal of the latent violence building up in a child against the ritualistic social norms which are forced on him. The filmmaker demonstrates maturity and dexterity in handling the script and the actors, bringing out the complexity of a child's mind trapped in a world of adults.*

## न्यू मून फिल्म्स

न्यू मून फिल्म्स एसोसिएशन आफ मोशन पिक्चर्स एण्ड टीवी प्रोग्राम प्रोड्यूसर्स के साथ पंजीकृत एक फिल्म निर्माण कम्पनी है। वीनू चोलीपरांबिल इसके मालिक हैं। *विठ्ठल* न्यू मून फिल्म्स द्वारा निर्मित पहली लघु फिल्म है।

## मनु पुष्पेंद्रन

मनु पुष्पेंद्रन ने अमेरीका के बफेलो विश्वविद्यालय से कम्प्यूटर विज्ञान में स्नातकोत्तर डिग्री हासिल की है। वे सिएटल में माइक्रोसॉफ्ट कम्पनी में वरिष्ठ सॉटवेयर इंजीनियर के रूप में काम करते हैं। *विठ्ठल* उनके फिल्म निर्माण का पहला प्रयास है।



## वीनू चोलीपरांबिल

मुम्बई में जन्में वीनू चोलीपरांबिल ने कुछ समय तक कारपोरेट फिल्मों और म्युजिक वीडियो का संपादन करने के बाद फीचर फिल्मों के क्षेत्र में प्रवेश किया। वे पिछले पांच वर्षों से फिल्म संपादक के रूप में काम कर रहे हैं। उन्होंने हिंदी फिल्म *रिस्क* और मराठी फिल्म *गृहलक्ष्मी* का संपादन किया है। वे कई हिंदी कथाचित्रों के लिए टी वी कैम्पेन का भी संचालन कर चुके हैं। निर्देशक के रूप में *विठ्ठल* उनकी पहली लघु फिल्म है।



## New Moon Films

New Moon Films is a company based in Mumbai and registered with the Association of Motion Pictures & T.V Programme Producers. The proprietor of New Moon Films is Vinoo Choliparambil. *Vitthal* is the first film short produced by New Moon Films.

## Manu Pushpendran

A MS in Computer Science from Buffalo University, USA, Manu Pushpendran works as a senior software engineer with Microsoft in Seattle, USA. *Vitthal* is his first venture as a producer.

## Vinoo Choliparambil

Born in Mumbai, Vinoo Choliparambil started working as an editor of corporate films and music videos before moving on to feature films. He has been working as an editor for five years in Mumbai. He has edited two feature films-*Risk* in Hindi and *Grihalaxmi* in Marathi. He has also done the TV campaigns for various Hindi feature films and worked with filmmakers like Ram Gopal Varma. *Vitthal* is his first short film.

## सर्वोत्तम मानव शास्त्रीय/मानव जातीय फिल्म

### बोलिआय पिताएर सोहोकी सूतल

निर्माता अननोन फिल्मस और सुशांत राय (बापी) को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक अलताफ मजीद को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

फिल्म में एक समुदाय द्वारा देसी निर्माण तकनीकों के इस्तेमाल से चेक डैम बनाने के कठिन संघर्ष का अनूठा चित्रण किया गया है। यह एक प्रायोगिक यात्रा है जो वृत्तचित्र की सीमाएं लांघकर दर्शकों को अपना सहयात्री बना लेती हैं

## Best Anthropological /Ethnographic Film

### BOLIAY PITAIER SOHOKI SOOTAL

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Producers **Unknown Films** and **Susanta Roy (Bapi)**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Director **Altat Mazid**

### CITATION

*A film which uniquely depicts the long arduous struggle of a community to build check dams using their indigenous engineering skills. An experiential journey which transcends documentation and makes the viewer participate in the process.*



## अनूनों फिल्मस

### अलताफ मजीद

अनूनों फिल्मस के संस्थापक अलताफ मजीद ने गुवाहाटी विश्वविद्यालय से इंजीनियरी में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की। वे फिल्म समीक्षक के साथ-साथ फिल्म निर्माता भी हैं। मजीद ने असमिया सिनेमा पर कई लेख लिखे हैं। वे कई राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में फिल्म समीक्षकों के निर्णायक मंडल के सदस्य के रूप में काम कर चुके हैं। वे 1999 के भारत के अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में इंडियन पैनोरमा की चयन समिति के भी सदस्य थे। 2005 के असम राज्य फिल्म समारोह के लिए कथाचित्रों की चयन समिति में भी वे शामिल थे। 2004 में उन्होंने 1935 में बनी पहली असमिया फिल्म *जोयमति* की जीर्ण-शीर्ण फुटेज का पुनर्निर्माण किया। इस फिल्म को अनेक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में प्रदर्शित किया गया। इन दिनों वे एक अन्य भूली-बिसरी महान असमिया फिल्म *'गंगा सिलोनिर पाखी'* (1975) को संवारने के काम में लगे हैं।

### सुशांत राय

सुशांत राय(बापी) का जन्म और शिक्षा-दीक्षा गुवाहाटी में हुई। उन्हें अलताफ मजीद से फिल्म निर्माता बनने की प्रेरणा मिली। उनकी अन्य फिल्में हैं *क्रेजी ऑन द रॉक्स* और *कुनिर कुटिल दशा*। इन दिनों वे एक युवा फिल्मकार विपिन विजय की फिल्म का सह निर्माण कर रहे हैं।

un **known** films



## Unknown Films

### Altaf Mazid

Founder of Unknown Films Altaf Mazid has a master's degree in engineering from Guwahati University. He is a critic turned filmmaker. Mazid has written a number of essays, mainly on cinema of Assam. He was a member of selection committee of Indian panorama (non-fiction) of IFFI 1999 and Assam State Film Awards 2005 for feature films category.

In 2004 he reconstructed the first Assamese film, *Joymati* (1935) from the found footage. It was premiered internationally in the Bollywood and Beyond Film Festival, Stuttgart in 2006 and subsequently screened at Asiaticfilmmediale, Rome and Munich film festival. Currently he is trying to promote another forgotten masterpiece, *Ganga Silonir Pakhi* (1975).

### Susanta Roy (Bapi)

Susanta Roy (Bapi) was born and brought up in Guwahati. He has been keenly interested in viewing films right from his school days. It was his association with Altaf Mazid that encouraged him to turn a film producer. Other than *Boliya Pitaier Sohoki Sootal*, his other films are *Crazy on the Rocks* and *Kunir Kutil Dasha*. Currently he is co-producing the first feature film of young filmmaker Vipin Vijay.

## सर्वोत्तम जीवनी/ऐतिहासिक पुनर्निर्माण/संकलन फिल्म

### असेसिनेशन आफ़ राजीव गांधी : ए रिकंस्ट्रक्शन

निर्माता फिल्म प्रभाग को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक आर कृष्णमोहन को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

यह फिल्म एक विश्वनेता की नृशंस हत्या की दर्दनाक घटना के पुनर्सृजन के लिए समय और स्थान के लंबे अंतराल को लांघते हुए सूचना, दृष्टि, प्रमाण और ऐतिहासिक संदर्भों के सूत्रों को कुशलतापूर्वक जोड़ती हैं

### Best Biographical/Historical Reconstruction/Compilation film

#### The Assassination of Rajiv Gandhi - A Reconstruction

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Producer **Films Division**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Director **R Krishna Mohan**

### CITATION

*Traversing vast stretches of time and geographical space, this film deftly puts together strands of information, perception, evidence and historical contexts to reconstruct a compelling narrative about the gruesome assassination of a world leader.*

## फिल्म प्रभाग

वृत्तचित्र निर्माण के मामले में फिल्म प्रभाग विश्व का पुराना और सर्वाधिक बड़ा फिल्म निर्माता है। भारत के दृश्य विश्वकोश नाम से विख्यात फिल्म प्रभाग एक प्रमुख मीडिया एकक है और इसने भारत में वृत्तचित्र फिल्म आंदोलन को एक संगठित मंच दिया है। इसमें संपादन कक्ष, रिकॉर्डिंग थियेटर, एनिमेशन स्टूडियो, प्रिव्यू थियेटर, कैमरा और वीडियो उपकरणों सहित सभी आधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध हैं। प्रभाग 1990 से लगातार वृत्तचित्र, लघु फिल्म तथा कार्टून फिल्म का मुंबई अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह का सफलतापूर्वक आयोजन करता रहा है।



## आर कृष्णमोहन

आर कृष्णमोहन वृत्तचित्रों और कारपोरेट फिल्मों के निर्माता तथा मीडिया कंसल्टेंट हैं। वे फिल्म प्रभाग के मुख्य निर्माता, निर्देशक और पटकथाकार रह चुके हैं। उनकी कुछ उल्लेखनीय फिल्में हैं : बाबरी मस्जिद विध्वंस पर बनी 'ए मॅटर आफ वर्शिप', *क्राइसिस इन श्रीलंका*, *गिव पीस ए चांस*, *टीयर्स एंड स्माइल्स* और *इंडिया-ए न्यूक्लियर पावर*। उन्होंने कृषि, जैव प्रौद्योगिकी और फालतू प्लास्टिक के प्रबंधन की समस्याओं पर विभिन्न भारतीय भाषाओं में कई फिल्में बनायीं। उन्हें लघु फिल्मों और समाचार फिल्मों के निर्माण के लिए पांच बार राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुका है।



## Films Division

Ranked among the oldest and largest documentary producers in the world, Films Division is acclaimed as the "visual encyclopaedia of India" and has provided an organised platform for documentary film movement in India. It has successfully organised the Mumbai International Film Festival for Documentary, Short and Animation Films since 1990. It is equipped with all modern facilities including editing suites, recording theatres, animation studios, preview theatre and camera and video equipment.

## R. Krishnamohan

R. Krishnamohan is a documentary and corporate filmmaker and media consultant. He was a chief producer, director and scriptwriter with Films Division. Some of his note-worthy films include *A Matter of Worship* (on the demolition of Babri Masjid), *Crisis in Sri Lanka*, *Give Peace A Chance*, *Tears and Smiles* (on the return of refugees to Sri Lanka), *India - A Nuclear Power* and a series of films in different languages demystifying agricultural biotechnology and solutions to plastic waste management. Earlier he has won five national awards as creative producer for documentaries and news features.

## सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फिल्म

### कर्ण मोचम

निर्माता एम जी आर फिल्म एंड टी वी इंस्टीट्यूट को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक एस. मुरली मनोहर को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

*फिल्म में सशक्त बिंबविधान और विडंबनापूर्ण स्थितियों के इस्तेमाल से कूथु कलाकार के जीवन को चित्रित किया गया है। इसमें बड़ी सूक्ष्मता के साथ एक ऐसे कलाकार की हताशा और निराशा का चित्रण है जो बदलते हुए सांस्कृतिक माहौल के अनुरूप अपने को ढालने में असमर्थ है*

### Best Arts/Cultural Film

#### **KARNA MOTCHAM**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Producer **MGR Film & Television Institute**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Director **S. Murali Manohar**

#### **CITATION**

*Using powerful imagery and ironical juxtaposition, the film depicts the life of a Koothu artist. With subtlety, it captures the frustration and the hopelessness of a performer whose art is a misfit in a changing cultural world.*

## एम जी आर फिल्म एंड टी वी इंस्टीट्यूट

यह तमिलनाडु सरकार के सूचना और जनसम्पर्क निदेशालय के अन्तर्गत काम करने वाला संस्थान है। इस संस्थान का मुख्य उद्देश्य फिल्म निर्माण, टेलीविजन कार्यक्रमों तथा अन्य संबंधित गतिविधियों के विभिन्न पहलुओं का प्रशिक्षण देना है।



## MGR Film and TV Institute

M.G.R. Film and Television Institute functions under the Director of Information and Public Relations, Government of Tamil Nadu. Diplomas in various branches are awarded by the state's Directorate of Technical Education. The main objective of this premier institute is to impart training in various aspects of film production, TV and allied subjects. The aim is to meet the demand for professionally qualified persons and to elevate the medium of film and TV to new heights of technical and aesthetic excellence.

## एस.मुरली मनोहर

एस. मुरली मनोहर ने वाणिज्य विषय में स्नातक की डिग्री हासिल करने के बाद एम. जी. आर फिल्म एंड टी वी इंस्टीट्यूट में दाखिला ले लिया। कर्ण मोचम उनकी डिप्लोमा फिल्म है जिसकी देशभर में विभिन्न फिल्म समारोहों में सराहना की गयी है। इसे तीन राज्य पुरस्कार मिल चुके हैं। मनोहर को सर्वोत्तम छात्र निर्देशक के लिये स्वर्ण पदक दिया गया।



## S. Murali Manohar

After the graduating in commerce, S. Murali Manohar joined the M.G.R. Film and TV Institute, Chennai. From his college days he has been writing articles and film reviews. *Karna Motcham* is his diploma film project which has been critically acclaimed in various film festivals across the country. It got three state awards-best direction, best cinematography and best film processing. Manohar won the gold medal and K.Subramaniam memorial award for best direction student.

## सर्वोत्तम वैज्ञानिक फिल्म

### ट्रिप

निर्माता भारतीय फिल्म एवं टेलीविज़न संस्थान को रजत कमल और 50,000/- रूपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक इमेन्युएल पालो को रजत कमल और 50,000/- रूपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

फिल्म सरल और हल्के फुल्के ढंग से संरक्षण का ठोस संदेश देती है। इसमें नए तरह के संगीत और कार्टूनों के इस्तेमाल से दर्शकों को चीजों की बर्बादी और प्रदूषण पर ध्यान देने की प्रेरणा दी गई है

## Best Scientific Film

### TRIP

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Producer **Film & Television Institute of India**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Director **Emmanuel Palo**

### CITATION

*The film with a simple, almost lighthearted, treatment evolves into a powerful message of conservation. Using an unconventional music track and animation, the film jolts the viewer to re-look at waste and pollution.*

## भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान

एफटीटीआई भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अंतर्गत स्वायत्त संस्थान हैं। इसकी स्थापना 1960 में पुणे के पूर्व प्रभात स्टुडियो में की गई। फिल्म निर्माण तथा टेलीविजन कार्यक्रम तैयार करने में प्रशिक्षण का अपना उद्देश्य पूरा करने में यह पूरी तरह खरा उतरा है। संस्थान के छात्रों द्वारा बनाई गई फिल्में देश के समारोहों में प्रदर्शित की जाती हैं और उन्हें राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं। संस्थान से शिक्षा लेकर सिने जगत में नाम कमाने वालों में सुभाष घई, मणि कौल, नसीरुद्दीन शाह, जया बच्चन, रजा मुराद, शत्रुघ्न सिन्हा, मिथुन चक्रवर्ती, टॉम आल्टर, अडूर गोपालकृष्णन, संजय लीला भंसाली, राजकुमार हिरानी, विधु विनोद चोपड़ा आदि शामिल हैं।

### इमेन्युएल पालो

इमेन्युएल पालो फिलिपीन्स की राजधानी मनीला के रहने वाले हैं। उन्होंने भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान पुणे में फिल्म निर्देशक का प्रशिक्षण प्राप्त किया है। वे मनीला में फीचर फिल्मों के लिए पटकथा लिखते रहे हैं और अपने देश के प्रमुख फिल्म निर्देशकों के साथ सहायक के रूप में काम कर चुके हैं। उनकी फिल्मों को फिलिपीन्स और भारत में कई पुरस्कार मिले हैं।



## Film and Television Institute of India, Pune

The Film and Television Institute of India (FTII) is an autonomous body under the Ministry of Information and Broadcasting of the Government of India. Established in the year 1960 on the erstwhile Prabhat Studio premises at Pune, FTII has truly lived up to its avowed objective in the field of imparting training in film making and television programme production. Films made by the students of the Institute are entered in festivals both in India and abroad and have won several national and international awards. The alumni of FTII include Subhash Ghai, Mani Kaul, Naseeruddin Shah, Jaya Bachchan, Raza Murad, Shatrughan Sinha, Mithun Chakraborty, Tom Alter, Adoor Gopalakrishnan, Sanjay Leela Bhansali, Raj Kumar Hirani and Vidhu Vinod Chopra among others.

### Emmanuel Palo

Emmanuel hails from Manila, Phillippines and has studied film direction in Film & Television Institute of India, Pune. A biology graduate from The University of Phillippines, he has been a scriptwriter in feature films in Manila and has worked as assistant director with eminent film directors of his country. His films have won awards in Phillippines and India. His films include *Home* and *Stations*.



## सर्वोत्तम प्रोत्साहन फिल्म

### लॉस्ट एण्ड फाऊंड

निर्माता टेलरमेड फिल्मस को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक हर्षवर्धन जी. कुलकर्णी को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

फिल्म में एक बोतल को खोज यात्रा के रूपक के रूप में इस्तेमाल करते हुए आम लोगों तथा उनके अनुभवों के माध्यम से स्थानों की खोज के अभिनव तरीके का चित्रण किया गया है और पर्यटन को प्रोत्साहन देने की परंपरागत शैली को चुनौती दी गई है

**Best Promotional Film (to cover tourism, exports, crafts, industry, etc.)**

### LOST AND FOUND

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Producer **Tailormade Films**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Director **Harshavardhan G. Kulkarni**

### CITATION

*Using a bottle as a metaphor for a journey of discovery, the filmmaker finds an innovative style to explore various locations through people and their experiences, challenging the classical promotional style of selling tourism.*



## टेलरमेड फिल्मस

भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे के तीन स्नातकों हर्षवर्धन कुलकर्णी, कीर्ति नखवा और अमिताभ शुक्ला ने 1999 में टेलरमेड फिल्मस कम्पनी की स्थापना की। उनका मकसद अलग तरह की फिल्में बनाना था। विज्ञापन फिल्मों से शुरू करके वे टीवी कार्यक्रम और फिल्में बनाने लगे। टेलीविजन के लिए उन्होंने विश्वकप क्रिकेट के दौरान ईएसपीएन स्टार स्पोर्ट्स के लिए प्रोमो तैयार किए। उन्होंने जी सिनेमा के लिए फिल्म आधारित कार्यक्रम *सिने न्यूज* के 400 एपिसोड बनाए। स्टार वन चैनल के लिए कम्पनी ने 70 मिनट की टेलीफिल्म *द चोजन वन* का निर्माण किया। *लॉस्ट एण्ड फाऊंड* उनकी पहली लघु फिल्म है। यह अब तक ग्यारह अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में दिखाई जा चुकी है और इसे अनेक पुरस्कार मिले हैं।

## हर्षवर्धन जी. कुलकर्णी

भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे के छात्र रहे हर्षवर्धन जी कुलकर्णी ने अनेक पुरस्कार विजेता वृत्तचित्र और टीवी विज्ञापन फिल्में बनाई हैं। 2005 में उन्होंने *द चोजन वन* टेली फिल्म का लेखन और निर्माण किया जिसे पांच इंडियन टेली पुरस्कार मिले।

TAILORMADE FILMS



## Tailormade Films

In 1999 Harshavardhan Kulkarni, Kirti Nakhwa and Amitabh Shukla, graduates of the prestigious Film & TV Institute of India (FTII, Pune) started Tailormade Films. The idea was to stand away from the clutter. Starting off in advertising, they moved on to television & films. For TV they started with making a series of promos for ESPN Star Sports during World Cup Cricket. They made a 70 min telefilm for Star One called *The Chosen One*. Their foray into fiction continued with the production of a 30 min short feature *Lost and Found*, which has been shown in as many as 11 International Film Festivals.

## Harshavardhan G. Kulkarni

A graduate of FTII, Pune, Harsh partnered with a couple of classmates to start the production company Tailormade Films. He has made several award-winning corporate documentaries & TV Commercials. In 2005 he wrote and produced, *The Chosen One*, a 70 minute tele-film, shot on 16mm, that bagged five awards at the Indian Telly Awards, including Best Script & Best Film. *Lost and Found*, his latest short film, has been shown at several festivals and bagged many awards.



## सर्वोत्तम कृषि फिल्म

### द लैंड आफ रुपशुपास

निर्माता फिल्म प्रभाग को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक ए.के.सिद्धपुरी को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

हिमालय की ऊंची पहाड़ियों और वहां के दुर्गम और कठिन इलाकों तथा जलवायु में रहने वाले खानाबदोश लोगों के आकर्षक और प्रभावकारी चित्रांकन के साथ यह फिल्म रुपशुपा समुदाय के पशुओं के साथ आत्मीय संबंधों और उनके जीवन में जानवरों के महत्व को सशक्त ढंग से उजागर करती है

**Best Agriculture Film (to include subject related to and allied to agriculture like animal husbandry, dairying etc.)**

### THE LAND OF RUPSHUPAS

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Producer **Films Division**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Director **A.K. Siddhpuri**

### CITATION

*With breath taking images of the higher Himalayas and the nomadic people living in this harsh climate and terrain, the film effectively explores the relationship of the Rupshupas with their livestock and how critical it is for their survival.*

## फिल्म प्रभाग

वृत्तचित्र निर्माण के मामले में फिल्म प्रभाग विश्व का पुराना और सर्वाधिक बड़ा फिल्म निर्माता है। भारत के दृश्य विश्वकोश नाम से विख्यात फिल्म प्रभाग एक प्रमुख मीडिया एकक है और इसने भारत में वृत्तचित्र फिल्म आंदोलन को एक संगठित मंच दिया है। इसमें संपादन कक्ष, रिकॉर्डिंग थियेटर, एनिमेशन स्टूडियो, प्रिव्यू थियेटर, कैमरा और वीडियो उपकरणों सहित सभी आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध हैं। प्रभाग 1990 से लगातार वृत्तचित्र, लघु फिल्म तथा कार्टून फिल्म का मुंबई अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह का सफलतापूर्वक आयोजन करता रहा है।



## ए.के.सिद्धपुरी

अवधेश कुमार सिद्धपुरी ने अपना फिल्मी जीवन 1972 में सहायक कैमरामैन के रूप में शुरू किया। उन्होंने एन.वी.श्रीनिवास, जाल मिस्त्री, अनवर सिराज और चमन के बाजू जैसे सिद्धहस्त छायाकारों के साथ काम किया। उन्होंने दूरदर्शन के न्यूजरील ऑफिसर, चीफ वीडियो कैमरामैन और फिल्म प्रभाग के चीफ कैमरामैन के रूप में काम किया है। उन्हें अनेक लघु फिल्मों के लिए पुरस्कार भी मिले हैं।



## Films Division

Ranked among the oldest and largest documentary producers in the world, Films Division is acclaimed as the “visual encyclopaedia of India” and has provided an organised platform for documentary film movement in India. It has successfully organised the Mumbai International Film Festival for Documentary, Short and Animation Films since 1990. It is equipped with all modern facilities including editing suites, recording theatres, animation studios, preview theatre and camera and video equipment.

## A.K. Sidhpuri

Awadesh Kumar Sidhpuri joined the Hindi film industry in 1972 as an assistant cameraman. He worked with eminent directors of photography such as N.V. Srinivas, Jal Mistry, Anwar Siraj and Chaman K. Bajoo. The films he worked in include *Shagird*, *Sharmilee*, *Teesri Manzil*, *Amar Akbar Anthony*, *Heer Ranjha*, *Victoria No. 203*. He has worked as newsreel officer, chief video cameraman and TV cameraman in Doordarshan and chief cameraman in Films Division. He has previously won national awards for *A Celestial Tryst*, *In Search of Excellence*, *Agony of Udaipur Lakes*, *Mussoorie—Towards Destruction* and *Holy Ganga*

## सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम फिल्म

### द फीमेल न्यूड और बुरु गारा

निर्माता पब्लिक सर्विस ब्रॉडकास्टिंग ट्रस्ट को बुरु गारा और फीमेल न्यूड के लिए रजत कमल और 50,000/-रूपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक श्रीप्रकाश को बुरु गारा के लिए रजत कमल और 25,000/- रूपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक हेम ज्योतिका और देवी प्रसाद मिश्र को फीमेल न्यूड के लिए रजत कमल और 25,000/- रूपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

**फीमेल न्यूड:** एक महिला के सशक्त चित्रण के लिए जो दूसरों की परवाह किए बिना एकदम नए ढंग से अपनी परिस्थितियों से उबरती है और समाज में अपना स्थान बनाती है

और

**बुरु गारा:** झारखंड की दो आदिवासी महिलाएं एक कविता तथा दूसरी स्थानीय पत्रकारिता के माध्यम से अपनी पहचान और गरिमा प्राप्त करती हैं। फिल्म महिला सशक्तिकरण का वातावरण बनाती है

### Best Film on Social

#### THE FEMALE NUDE & BURU GAARA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Producer: Public Service Broadcasting Trust for **THE FEMALE NUDE & BURU GAARA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 25,000/- to the Director: **Sriprakash** for **Buru Gara**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 25,000/- to the Directors: **Hemjyotika** and **Devi Prasad Mishra** for **THE FEMALE NUDE**

#### CITATION

**The Female Nude** : A compelling portrait of a woman who rises above her circumstances in an unconventional way, carving out a position for herself irrespective of how others view her.

&

**Buru Gaara** : The journey of two adivasi women from Jharkhand, finding their identity and dignity using language - one through poetry and the other through grassroots journalism. The film creates a space where the narratives of the women emerge as powerful tales of their struggle for empowerment.

## पब्लिक सर्विस ब्रॉडकास्टिंग ट्रस्ट

पीएसबीटी लाभ न कमाने वाला एक न्यास है जो प्रसारण की साझी संस्कृति को बढ़ावा देने वाली शक्तियों का संगम है। यह न्यास भारत में प्रसारण की नई शब्दावली तथा नई गतिविधियों का निर्माण करना चाहता है। न्यास ने लगभग 300 वृत्तचित्र बनाए हैं तथा 50 से अधिक राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किए हैं।

### हेम ज्योतिका

हेम ज्योतिका जानी मानी चित्रकार हैं। उनका फिल्म उद्योग से नजदीकी रिश्ता रहा है और वे ललित कलाओं और सिनेमा को जोड़ने में सदैव क्रियाशील रही हैं।

### देवी प्रसाद मिश्र

देवी प्रसाद मिश्र हिंदी के जाने माने कवि हैं और फिल्मों से भी जुड़े हुए हैं। उन्होंने इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के लिए पटकथा लेखन पर बहुत से पाठ लिखे हैं।

### श्रीप्रकाश

श्रीप्रकाश ने अनेक वृत्तचित्रों का निर्देशन किया है। वे झारखंड क्षेत्र में संस्कृति और संचार में काम करने वाली संस्था कृत्तिका के मुख्य संयोजक हैं।



## Public Service Broadcasting Trust

PSBT is a not for profit trust that represents the confluence of energies to foster a shared public culture of broadcasting that is as exciting and cutting edge, as it is socially responsive and representative of democratic values. PSBT has made about 300 documentaries and has won more than 50 national and international awards.

### Hem Jyotika

Hem Jyotika, a well known female nude painter. She invariably devises a relationship between the fine arts and cinema.

### Devi Prasad Mishra

Devi Prasad Mishra is a contemporary Hindi poet whose love for cinema is tempestuous. He is a film buff who has written numerous lessons for Indira Gandhi Open University's, "How to Write a Script" audio-visual course.

### Shriprakash

Shriprakash has directed several documentary films and won many prestigious awards. He is also the chief coordinator of Kritika, an organisation located in Ranchi that works in the field of culture and communications in the Jharkhand region.

## सर्वोत्तम शैक्षिक / प्रेरक / अनुदेशात्मक फिल्म

### पोलियो वर्सिस पोलियो विक्टिम्स

निर्माता गुलशन सचदेव को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक अमन सचदेव को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

पोलियो उन्मूलन के अभिनव अभियान के लिए फिल्म में पोलियो से पीड़ित लोगों का चित्रण है जो घर-घर जाकर इस बीमारी के बारे में चेतना जगाने का काम करते हैं

## Best Educational/Motivational/ Instructional Film

### POLIO Vs. POLIO VICTIMS

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Producer **Gulshan Sachdeva**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Director **Aman Sachdeva**

### CITATION

*An innovative campaign for the eradication of polio - the film follows the polio afflicted who take the initiative for mass awareness by going door to door.*

## गुलशन सचदेव

गुलशन सचदेव देश के लोकप्रिय टेलीविजन निर्माताओं में गिने जाते हैं। उन्होंने टेलीविजन निर्माण में प्रवेश 1990 के दशक में जी-नेटवर्क के लिए *आपकी अदालत* कार्यक्रम से किया। इसके बाद उन्होंने *जंजीरें* और *पंचम* जैसे सफल धारावाहिकों का निर्माण और निर्देशन किया। उन्होंने *रावण* धारावाहिक का भी निर्देशन किया जिसे काफी सराहना और बहुत से पुरस्कार मिले।



## Gulshan Sachdeva

With more than 4000 hours of television content behind him, Mr Gulshan Sachdeva is one of the most sought after television producers in the country. Beginning his journey into the satellite television series with *Aap Ki Adalat* on Zee Network in early 1990's, he went on to produce and direct successful series like *Zanzeerein* and *Pancham*. His latest offering *Raavan* a closer look at the mythological anti-hero won him accolades and numerous nominations and awards.

## अमन सचदेव

अमन सचदेव ने अमरीका के यूनिवर्सिटी आफ साउदर्न कैलीफोर्निया में लघु फिल्म निर्माण का प्रशिक्षण लिया। उन्होंने कई विज्ञापन एजेंसियों में काम किया है। लगभग पचास विज्ञापन फिल्मों के निर्देशन के बाद अमन ने सादत हसन मंटो की कहानी पर अपनी पहली लघु फिल्म *करामात* बनायी। *पोलियो वर्सिस पोलियो विक्टिम्स* को 2008 के गोवा एंड फेस्टीवल में सर्वोत्तम सामाजिक संदेश फिल्म के लिए स्वर्ण पदक मिला। इन दिनों वे फिल्म निर्माण कम्पनी फिल्म एंड शॉट्स में निर्देशक रूप में काम कर रहे हैं।



## Aman Sachdeva

Aman attended a short film course at the University of Southern California, LA in 2000. He has worked for advertising agencies like JWT and Ogilvy and Mather Advertising. After directing over 50 commercials, Aman went on to make his first short, *Karamaat*, based on a short story by the legendary writer, Saadat Hasan Manto. His latest documentary, *Polio Vs. Polio Victims*, won the gold medal for best social message film at Goa Ad Fest 2008. Aman was one of the four finalists at a talent hunt reality show for film directors called "Gateway" on Sony Pix. He is currently working with a Mumbai based production company, Film & Shots, as a director.

## सर्वोत्तम अन्वेषण/साहसिक फिल्म

### शिङनाबा

निर्माता **बाचस्पतिमायुम सुंजु** को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक **बाचस्पतिमायुम सुंजु** को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

फिल्म में एड्स से ग्रस्त एक व्यक्ति का प्रेरक चित्रण किया गया है जो नाटकीय ढंग से अपना जीवन बदल लेता है और चैंपियन बाडी बिल्डर बन जाता है। आत्मकथा शैली में चित्रित इस फिल्म से हमें एड्स और खेलों के बारे में नई दृष्टि और समझ प्राप्त होती है।

## Best Exploration/ Adventure Film (to include sports)

### SHINGNABA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Producer **Bachaspatimayum Sunzu**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 500,000/- to the Director **Bachaspatimayum Sunzu**

### CITATION

*The film is an inspiring portrayal of an HIV positive person who dramatically transforms his life and becomes a champion body builder. A first person narrative, it provides a new perspective on AIDS and our understanding of sports.*



## बाचस्पतिमायुम सुंजु

बाचस्पतिमायुम सुंजु ने राजनीति शास्त्र में एम.ए करने के बाद मुम्बई के एक्स आई सी से फिल्म और वीडियो में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय नई दिल्ली से पत्रकारिता और जनसंचार में स्नातकोत्तर डिप्लोमा प्राप्त किया। वे टीवी पत्रकार के रूप में भी काम कर चुके हैं। उन्होंने कई श्रेष्ठ वृत्तचित्रों का निर्माण, निर्देशन, संपादन और लेखन किया है।



## Bachaspatimayum Sunzu

Bachaspatimayum Sunzu is a post graduate in political science with a post graduate diploma in communication arts in film & video from XIC, Mumbai and a post graduate diploma in journalism & mass communication from IGNOU, New Delhi. He has been a TV journalist and producer and has scripted, directed, edited and produced several acclaimed documentaries. *AFSPA, 1958* won the FIPRESCI Critics Prize & International Jury Award at Mumbai International Documentary & Shorts Film Festival, 2006.

## सर्वोत्तम खोजी फिल्म

### डिस्टैंट रंबलिंग्स

निर्माता रोंगसेंकला को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक बानी प्रकाश दास को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

फिल्म द्वितीय विश्वयुद्ध में जापानी हमले के बाद पूर्वोत्तर भारत के लोगों द्वारा भोगे गए कष्टों की याद ताज़ा करती है। घटना से प्रभावित लोगों के विवरण और जंगलों में मिले युद्ध से हुई बर्बादी के सबूतों की मदद से फिल्म पीड़ित परिवारों की कष्ट कथा को कुशलता से प्रस्तुत करती है

## BEST INVESTIGATIVE FILM

### DISTANT RUMBLINGS

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Producer **Rongsenkala**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 500,000/- to the Director **Bani Prakash Das**

### CITATION

*The film evokes painful memories of World War II as experienced by people of North East India, after the Japanese invasion. Through war wreckages found in the jungles and first person accounts, the film stitches together a moving story of affected families long forgotten.*

## रोंगसेंकला

गुवाहाटी विश्वविद्यालय में स्नातक की पढ़ाई करने के समय से ही रोंगसेंकला श्रव्य-दृश्य माध्यमों में काम कर रही हैं। उन्होंने दूरदर्शन के वृत्तचित्र *मोरुंग-ए ग्लोरियस ट्रेडीशन* के सहायक निर्देशक के रूप में काम किया। उन्होंने दूरदर्शन के एक अन्य वृत्तचित्र *हेरीटेज आफ ईस्टर्न हिमालय* का निर्देशन किया। वे अब तक तीन वृत्तचित्रों का निर्माण कर चुकी हैं।

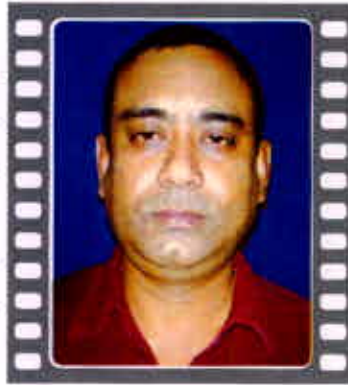


## Rongsenkala

Rongsenkala, an arts graduate from Guwahati University, has been working in audio-visual media since her college days. She worked as associate director in the Doordarshan documentary, *Morung-A Glorious Tradition*. She directed the DD documentary, *Heritage of Eastern Himalaya*. She has produced three documentaries including *Distant Rumbblings*.

## बानी प्रकाश दास

बानी प्रकाश दास 1990 के दशक के मध्य से फिल्म उद्योग से जुड़े हैं। उन्होंने असमिया की लोकप्रिय फिल्म *आई किल्ड हिम, सर* के निर्माण नियंत्रक के रूप में काम किया। उन्होंने दूरदर्शन के लिए अनेक वृत्तचित्रों और समाचार पत्रिकाओं का निर्माण तथा निर्देशन किया है।



## Bani Prakash Das

Bani Prakash Das has been with the film industry since the mid-90s. *From the Dawn-Lit Mountains-the Nishis*, a documentary produced by him featured in the MIFF-1998. Earlier he worked as production controller of the first-ever Assamese blockbuster *I killed him, Sir*. He has produced and directed several documentaries, docu-features and news magazines for Doordarshan.

## सर्वोत्तम कार्टून फिल्म

### द प्रिंस एंड द क्राउन आफ़ स्टोन्स

निर्माता भारतीय बाल चित्र समिति को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक गौतम बेनेगल को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

कार्टूनकार गौतम बेनेगल को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

*एक सुगठित और विषयप्रधान फिल्म के लिए। 2-डी रेखाचित्रों और संयत रंगों से सुसज्जित यह फिल्म नेतृत्व के बारे में हर सशक्त संदेश देती है जो आज की परिस्थितियों में पूरी तरह प्रासंगिक है।*

### Best Animation Film

### THE PRINCE AND THE CROWN OF STONES

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Producer **Children's Film Society, India**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Director **Gautam Benegal**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Animator **Gautam Benegal**

### CITATION

*A well knit theme-oriented film, complemented by 2D graphics and a restrained colour palette. A strong message about leadership emerges through the film making it relevant to the contemporary times.*

## भारतीय बाल चित्र समिति

भारतीय बाल चित्र समिति बच्चों के दृष्टिकोण को उदार बनाने और मनोरंजन के उनके अधिकार को सार्थक बनाने के उद्देश्य से फिल्मों तथा टेलीविज़न के माध्यम से उन्हें स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाला भारत सरकार का प्रमुख संगठन है। इसकी स्थापना 1955 में हुई थी। समिति बाल फिल्मों का निर्माण, खरीद, वितरण, संवर्धन तथा प्रदर्शन से जुड़े दायित्व संभालती है। यह भारत तथा विदेशों में बाल फिल्म आंदोलन का प्रचार-प्रसार करती है। समिति की पहली ही फिल्म 'जलदीप' को 1957 में वीनस बाल फिल्म समारोह में प्रथम पुरस्कार मिला।



## CHILDREN'S FILM SOCIETY OF INDIA

CFSI is a nodal Government of India organisation dedicated to providing wholesome entertainment for children through film and television, with the objective of broadening their horizon and justifying Right to Entertainment. CFSI was established in 1955 to provide value-based entertainment to children through the medium of films. The organisation is engaged in production, acquisition, distribution, exhibition and promotion of children's films. The society is committed to spreading and encouraging the children's film movement in India and abroad.

## गौतम बेनेगल

1965 में कोलकाता में जन्में गौतम बेनेगल ने जादवपुर विश्वविद्यालय से साहित्य में स्नातक की डिग्री प्राप्त की। उन्हें बचपन से ही कला के प्रति लगाव था। 16 वर्ष की उम्र में ही उनके रेखाचित्र सत्यजीत रे द्वारा संपादित बाल पत्रिका संदेश में प्रकाशित हुए। मुम्बई आने के बाद उन्होंने दो वर्ष तक भारत के प्रमुख एनिमेशन विशेषज्ञ राममोहन के साथ काम किया। बेनेगल अब स्वतंत्र कार्टूनकार और चित्रकार के रूप में काम कर रहे हैं। *द प्रिंस एंड द क्रौउन ऑफ स्टोन्स* उनकी तीसरी कार्टून फिल्म है।



## Gautam Benegal

Born in 1965 in Kolkata, Gautam Benegal graduated in comparative literature from Jadavpur University. From his early years he showed a marked aptitude for graphic arts. At sixteen his illustrations appeared in *Sandesh*, the children's magazine edited by Satyajit Ray. He turned to independent animation film making starting with *Tupatup*, a film for CFSI. Benegal is now a freelance animator, painter and journalist. He made a second animation film for CFSI, based on a Bengali folk tale, called *Gauraya ki Champi*. *The Prince and the Crown of Stone* is his third animation film.

## निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार

### चिल्ड्रन आफ द पायर

निर्देशक राजेश एस जाला को रजत कमल और 50,0000/- रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

शमशान भूमियों में काम करने वाले बच्चों की पीड़ाजनक और तनावमयी जिंदगी का चित्रण करती हुई यह फिल्म इन बच्चों को अपना नया संसार बनाने का रास्ता दिखाती है। निर्देशक बच्चों के मनोभावों को इस तरह प्रस्तुत करता है कि दर्शक उनकी पीड़ा, खुशी और सपनों के भागीदार बन जाते हैं

### Special Jury Award

### CHILDREN OF THE PYRE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Director **Rajesh S. Jala**

### CITATION

*Constrained by the stifling and searing world of children working in cremation grounds, the film helps them to recreate a world of their own. The director captures rare reflexive moments of the children and makes the viewers live their pain, joys and dreams.*

## राजेश एस जाला

1969 के कश्मीर में जन्मे राजेश एस जाला पिछले 12 वर्षों से फिल्म उद्योग से जुड़े हैं। वे निर्माता, निर्देशक और छायाकार तीनों रूपों में काम करते हैं। मुख्य रूप से वे वृत्तचित्र निर्माता हैं। उन्होंने 25 से अधिक वृत्तचित्र और भारतीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय चैनलों के लिए टेलीविजन धारावाहिक बनाये हैं। कश्मीर के शिकारे पर काम करने वाले दस साल के बालक आरिफ पर 2006 में बनी उनकी फिल्म *फ्लोटिंग लैम्प आफ द शैडो वैली* को अनेक प्रतिष्ठित अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में दिखाया गया। यह फिल्म डिस्कवरी नेटवर्क पर भी दिखायी गयी। *चिल्ड्रन आफ द पायर* फिल्म को कई राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुके हैं।



## Rajesh S. Jala

Rajesh S. Jala is a director, producer and cinematographer. Born in 1969 in Kashmir, he has been making films, primarily documentaries, for the last twelve years. It's been an enlightening journey through human emotions, social concerns and inner conflicts.

He has directed more than 25 documentary films and a number of television series for leading international and Indian television channels. His 2006 film, *Floating Lamp of The Shadow Valley*, about a 10 year old boat boy Arif, son of an ex-militant, was nominated to the International Amsterdam Film Festival and was officially selected for the Palm Spring Film Festival, US and Raindance Film Festival, London. The film was broadcast on Discovery network. *Children of the Pyre* has already won several national and international awards

## सर्वोत्तम लघु कल्पित फिल्म

### स्टेशन्स

निर्माता भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक इमेन्युएल पालो को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

फिल्म शहरों में आर्थिक विषमता, बेगानापन और अनास्था की काली सच्चाई को दर्शाने के लिए कुछ विस्थापित लोगों की अलग-अलग कहानियों को जोड़कर अभिव्यक्ति की एक जटिल समकालीन शैली का उदघाटन करती है

## BEST SHORT FICTION FILM

### STATIONS

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Producer Film and Television Institute of India

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Director **Emmanuel Palo**

### CITATION

*The film weaves a complex contemporary form of expression, through fragmented stories of a few sparsely connected lives in transit, over an omnipresent dark urban reality of economic disparity, alienation, and bad faith.*



## भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान

एफटीटीआई भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अंतर्गत स्वायत्त संस्थान हैं। इसकी स्थापना 1960 में पुणे के पूर्व प्रभात स्टुडियो में की गई। फिल्म निर्माण तथा टेलीविजन कार्यक्रम तैयार करने में प्रशिक्षण का अपना उद्देश्य पूरा करने में यह पूरी तरह खरा उतरा है। संस्थान के छात्रों द्वारा बनाई गई फिल्में देश के समारोहों में प्रदर्शित की जाती हैं और उन्हें राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं। संस्थान से शिक्षा लेकर सिने जगत में नाम कमाने वालों में सुभाष घई, मणि कौल, नसीरुद्दीन शाह, जया बच्चन, रज़ा मुराद, शत्रुघ्न सिन्हा, मिथुन चक्रवर्ती, टॉम आल्टर, अज़ूर गोपालकृष्णन, संजय लीला भंसाली, राजकुमार हिरानी, विधु विनोद चोपड़ा आदि शामिल हैं।

### इमेन्युएल पालो

इमेन्युएल पालो फिलिपीन्स की राजधानी मनीला के रहने वाले हैं। उन्होंने भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान पुणे में फिल्म निर्देशक का प्रशिक्षण प्राप्त किया है। वे मनीला में फीचर फिल्मों के लिए पटकथा लिखते रहे हैं और अपने देश के प्रमुख फिल्म निर्देशकों के साथ सहायक के रूप में काम कर चुके हैं। उनकी फिल्मों को फिलिपीन्स और भारत में कई पुरस्कार मिले हैं।

# फ

## Film and Television Institute of India, Pune

The Film and Television Institute of India (FTII) is an autonomous body under the Ministry of Information and Broadcasting of the Government of India. Established in the year 1960 on the erstwhile Prabhat Studio premises at Pune, FTII has truly lived up to its avowed objective in the field of imparting training in film making and television programme production. Films made by the students of the Institute are entered in festivals both in India and abroad and have won several national and international awards. The alumni of FTII include Subhash Ghai, Mani Kaul, Naseeruddin Shah, Jaya Bachchan, Raza Murad, Shatrughan Sinha, Mithun Chakraborty, Tom Alter, Adoor Gopalakrishnan, Sanjay Leela Bhansali, Raj Kumar Hirani and Vidhu Vinod Chopra among others.



### Emmanuel Palo

Emmanuel hails from Manila, Phillippines and has studied film direction in Film & Television Institute of India, Pune. A biology graduate from The University of Phillippines, he has been a scriptwriter in feature films in Manila and has worked as assistant director with eminent film directors of his country. His films have won awards in Phillippines and India. His films include *Home* and *Stations*.

## पारिवारिक मूल्यों पर सर्वोत्तम फिल्म

### अप्पुविन नायगन-स्पॉट्टी (माई हीरो)

निर्माता ए.वी. अनूप को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक माधवन को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

फिल्म एक प्यारी-सी कहानी को लेकर आगे बढ़ती है जिसमें एक बच्चे के अपने खिलौने से लगाव और खिलौना गुम हो जाने पर उसके दादा की दुविधा का मार्मिक चित्रण किया गया है। बच्चे की कल्पनाओं व आवश्यकताओं के भीतर नए ढंग से झांकने वाली एक संवेदनशील फिल्म।

## BEST FILM ON FAMILY VALUES

### APPUVIN NAYAGAN- SPOTTY (My Hero)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Producer **A.V. Anoop**

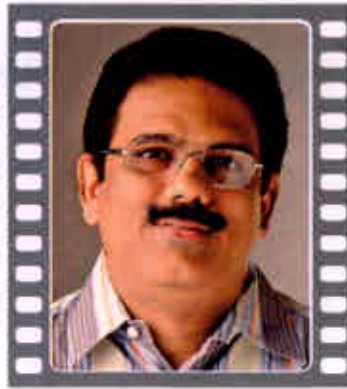
Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Director **Madhavan**

### CITATION

*The film scores with a very tender story that transforms into a moving portrayal of a child's attachment to her toy and her grandfather's dilemma when he loses it. A sensitive film that offers fresh insights into a child's imagination and needs.*

## ए.वी. अनूप

ए.वी अनूप उद्योगपति, सम्पत्ति व्यवसायी, फिल्म निर्माता, सामाजिक कार्यकर्ता और रंगमंच कलाकार हैं। ए.वी.ए. प्रोडक्शन्स के बैनर तले उन्होंने मलयालम में अनेक वृत्तचित्र और कथाचित्र बनाए हैं। इन दिनों वे *क्रिश्चियन बदर्स* और *कदक्षम* फिल्मों पर काम कर रहे हैं।



## A.V. ANOOP

He is one of the leading film producers in Kerala and also one of the directors of a famous ayurvedic soap manufacturing company. He has made several films under the banner of AVA Productions. At present he is working on *Christian Brothers* and *Kadaksham*.

## माधवन

माधवन जाने माने फिल्म निर्माता हैं और चेन्नई में रहते हैं। वे भारत के कई वरिष्ठ फिल्म निर्देशकों के साथ काम कर चुके हैं। एक टेलीविजन चैनल के मुख्य निर्माता के रूप में काम करते हुए उन्होंने सामाजिक और लोकहित के विषयों पर कई वृत्तचित्र बनाए। उन्होंने राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम और तमिलनाडु सरकार के लिए बहुत सी प्रोत्साहन फिल्मों का निर्देशन किया है।



## MADHAVAN

Madhavan is a Chennai-based filmmaker. He started his career under the apprenticeship of several top film directors in India. During his stint as chief producer of a television channel, he made various documentaries on social issues and matters relating to public interest. He has also directed promotional films for different commercial enterprises and travelogues for NFDC and the Govt. of Tamil Nadu.

## सर्वोत्तम निर्देशन

### थ्री ऑफ़ अस

निर्देशक उमेश विनायक कुलकर्णी को स्वर्ण कमल और 1,00,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

शारीरिक रूप से एक विकलांग व्यक्ति के जीवन के एक चरण को गहरी संवेदना के साथ इस तरह चित्रित किया गया है कि यह फिल्म सिनेमा कला की एक अनूठी कृति बन गई है। यह एक काव्यात्मक अन्वेषण है जिसमें अपने चरित्र को निभाने वाले असली पात्रों की अडिग आस्था उन्हें अपनी क्षमताओं से कहीं अधिक ऊंचाई पर ले जाती है

### Best Direction

### THREE OF US

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000/- to the Director **Umesh Vinayak Kulkarni**

### CITATION

*With immense sensitivity, the film offers a slice of life of a physically challenged person, which transcends into a telling cinematic practice of minimalism and control. A poetic exploration that breathes the indomitable spirit of these real characters playing themselves, way above its bleak mise-en-scene.*

## उमेश विनायक कुलकर्णी

उमेश कुलकर्णी ने भारतीय फिल्म एवं टेलीविज़न संस्थान, पुणे से प्रशिक्षण प्राप्त किया। 2005 में उन्होंने *गिरनी : द ग्राइंडिंग मशीन* फिल्म बनायी जो काफी लोकप्रिय हुई और उसे कई राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिले। उनकी फिल्मों की जड़ें अपनी संस्कृति में होती हैं लेकिन उनका संदेश समसामायिक और सार्वदेशिक होता है। उमेश की लगभग सभी फिल्मों को राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए एवं भारतीय पैनोरमा वर्ग में भी शामिल की गई। इन्होंने *वडू* नामक मराठी फीचर फिल्म भी बनाई। यह अनेक अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में दिखाई गई।



## UMESH VINAYAK KULKARNI

Umesh Kulkarni is an alumnus of FTIL, Pune. In 2005 he made *Girni: The Grinding Machine*, which travelled widely and won many national and international awards. His films are deeply rooted in his culture, yet have universal essence and a contemporary world vision. Umesh's almost all films have won critical acclaim and National Awards. His feature film *Valu* has been shown in many International Film Festivals.

## सर्वोत्तम छायांकन

### थ्री आफ अस और व्हेन दिस मैन डाइज़

छायाकार शरीका बदर खान को थ्री आफ अस के लिए और जयकृष्ण गुम्मादी को वेन दिस मैन डाइज़ के लिए रजत कमल और 50,000/-रुपये का नकद पुरस्कार

लैबोरेटरी एडलैब्स, मुम्बई को थ्री आफ अस के लिए और फिल्म लैब (इंडिया) को वेन दिस मैन डाइज़ के लिए रजत कमल और 50,000/-रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

#### थ्री आफ अस

अदभुत अनुशासन तथा संवेदना के साथ किया गया छायांकन, जो संयोजन, लय, लेंसिंग तथा प्रकाश के कुशल प्रयोग से एक बंद परिवेश में रह रहे छोटे से परिवार के जीवन को अंतरंगता के साथ उभार देता है

#### वेन दिन मैन डाइज़

फिल्म की कथा और प्रवाह के अनुरूप उच्च कोटि की सूक्ष्म संरचना तथा रंग विन्यास का इस्तेमाल करते हुए छायांकन दृश्य निर्माण और उनकी अनुभूति की विधियों को नए अर्थ प्रदान करता है

## BEST CINEMATOGRAPHY

### THREE OF US & WHEN THIS MAN DIES

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Cinematographers **Shariqua Badar Khan** for **Three of Us** & **Jayakrishna Gummadi** for **When This Man Dies**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Laboratories **Adlabs, Mumbai** (Reliance Mediaworks) for **Three of Us** & **Filmlab (India)** for **When This Man Dies**

### CITATION

**Three of Us** : *With amazing discipline and sensitivity, the cinematography provides an intimate insight into the lives of a small family, living in a confined space, with exquisite use of composition, rhythm, lensing and lighting.*

**When This Man Dies** : *Using highly sophisticated texture and tonal work, with deep anticipation into the flow and narrative of the film, the cinematography strives to redefine ways of image making and experience*

## एडलैब्स, मुम्बई

एडलैब्स फिल्मस लि० के लिए यह ग्यारहवां और लगातार पांचवां राष्ट्रीय पुरस्कार है। एडलैब्स का नाम अब रिलायंस मीडिया वर्क्स लिमिटेड हो गया है। यह रिलायंस अनिल धीरुभाई अम्बानी ग्रुप के अधीन देश की सबसे बड़ी फिल्म तथा मनोरंजन सेवा कम्पनी है।

## शरीका बदर खान

शरीका बदर खान ने जामिया मिलिया इस्लामिया से राजनीति शास्त्र में एम.ए करने के बाद भारतीय फिल्म एंड टेलीविजन संस्थान, पुणे से छायांकन में प्रशिक्षण लिया। उन्होंने कुछ समय तक एन.डी.टी.वी चैनल में और बाद में एक एक फिल्म निर्माण कम्पनी न्यूजवाला लिमिटेड में सहायक संपादक के रूप में काम किया। इससे पहले वे पुरस्कार विजेता वृत्तचित्र *वायसेस एक्रॉस ओशियन* बना चुकी हैं।

## फिल्म लैब (इण्डिया)

### जयकृष्ण गुम्मादी

जयकृष्ण गुम्मादी ने 2004 में भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे से छायांकन में प्रशिक्षण प्राप्त किया। इससे पहले उन्होंने हैदराबाद के जे.एन.टी.यू कालेज आफ फाईन आर्ट्स से ललित कलाओं में स्नातक की डिग्री प्राप्त की।

# ADLABS



## ADLABS (RELIANCE MEDIWORKS LTD)

This is the eleventh national award for Adlabs Films Ltd. and the fifth consecutive award. Adlabs Films Ltd. is now RELIANCE MEDIWORKS LTD." Reliance MediaWorks Ltd is India's largest film and entertainment services company owned by the Reliance Anil Dhirubhai Ambani Group.

## SHARIQA BADAR KHAN

A post-graduate in political science from Jamia Millia Islamia, Shariqa Badar Khan went on to study at FTII, Pune (2006). She graduated in cinematography. She worked as a researcher with the audience cell of NDTV and then as assistant editor with a production house, Newswallah Ltd. She has also worked as a Live Chat Operator in the KPO, Glad2teach. She has earlier shot a national award-winning documentary *Voices Across Ocean*.

## FILMLAB (India)

### JAYAKRISHNA GUMMADI

Jayakrishna Gummadi graduated in cinematography from FTII, Pune in 2004. Prior to that Gummadi did Bachelor of Fine Arts (Photography) from J.N.T.U College of Fine Arts, Hyderabad.



## सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन

### मतीन अहमद को चिल्ड्रन आफ द पायर के लिए

निर्देशक : मतीन अहमद को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

ध्वनि की विविध सतहों और चिता की अग्नि की अविरल और अंतहीन चरचराहट के साथ फिल्म दर्शकों को श्मशान भूमि में काम करने वाले बच्चों के जीवन की त्रासदी से बांधे रखती है। यह घटनास्थल की वास्तविकता से जुड़े रहकर मनोहारी ध्वनि संयोजन का उत्कृष्ट उदाहरण है।

### Best Audiography

### MATEEN AHMAD for CHILDREN OF PYRE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Audiographer **Mateen Ahmad**

### CITATION

*With multiple layers of sound, and the incessant crackle of funeral pyres that cease to sleep, the film grips its audience with a sense of entrapment around the life of children working inside a cremation ground. It is a telling example of diegetic sound design keeping its truth to the reality of the location.*



## मतीन अहमद

मतीन अहमद ने भारतीय फ़िल्म एंड टेलीविज़न संस्थान, पुणे से तीन वर्ष का स्नातकोत्तर डिप्लोमा ध्वनि आलेखन की विशेषज्ञता के साथ प्राप्त किया। वे अब तक निर्देशक, पटकथा लेखक, ध्वनि आलेखक और छायाकार की हैसियत से लगभग 25 फिल्मों में काम कर चुके हैं। उनकी डिप्लोमा फिल्म *तारापुर प्रेजेंट डे* को सर्वोत्तम छायांकन का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। *चिल्ड्रन आफ द पायर* को अनेक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुके हैं। मतीन अहमद इस समय जामिया मिलिया इस्लामिया में सहायक प्रोफेसर के रूप में काम कर रहे हैं।



## Mateen Ahmad

Mateen Ahmad did the three year P.G. Diploma course in Film and Television (specialization in audiography) from Film & Television Institute of India, Pune. He has made 25 films in various capacities—director, scriptwriter, sound designer, sound recordist and cameraperson. *Girni*, in which he worked as location sound recordist, bagged the national award in 2005. His diploma film, *Tarapore Present Day*, got the national award for best cinematography. *Children of the Pyre* has won several national and international awards. Mateen Ahmad currently works as assistant professor at the AJK Mass Communication Research Centre, Jamia Millia Islamia.

## सर्वोत्तम संपादन

मनोज कन्नोथ को स्टेशन्स के लिए

फिल्म संपादक मनोज कन्नोथ को स्वर्ण कमल और 50,000/-रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

शहरों में मौजूदा बेगानेपन को चित्रित करती तीन अलग-अलग कहानियों को सूक्ष्मता के साथ एक सूत्र में पिरोने के लिए। फिल्म के संपादन ने समानांतर स्तर पर एक साथ आगे बढ़ते कथानकों में लय पैदा करके एक अत्यंत सशक्त समकालीन शैली विकसित की है

### Best Editing

#### MANOJ KANNOTH for STATIONS

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Editor **Manoj Kanno**

*A delicately interwoven edit of three sparsely connected contemporary urban tales of alienation. Developing a rhythm with parallel and simultaneous stories, the cutting sculpts an extremely powerful contemporary form.*

## मनोज कन्नोथ

केरल में कन्नूर में जन्में मनोज कन्नोथ ने भारतीय फिल्म एवं टेलीविज़न संस्थान, पुणे से फिल्म संपादन में तीन वर्ष का स्नोतकोत्तर डिप्लोमा प्राप्त किया। वे मुम्बई में लघु फिल्मों और विज्ञापन फिल्मों के संपादक के रूप में काम कर रहे हैं। फिल्म संस्थान में उनके द्वारा संपादित कुछ फिल्मों को राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय समारोह में पुरस्कार मिले।



## MANOJ KANNOTH

Manoj Kannothe from Kannur, Kerala has done a three-year Post Graduate diploma in film editing from Film and Television Institute of India, Pune. He is currently working in Mumbai as an editor in documentary and advertisement films. Some of the films he edited at FTII won prestigious awards in reputed international film festivals in India and abroad.

## सर्वोत्तम संगीत निर्देशन

विपिन मिश्रा को नरमीन के लिए

निर्देशक विपिन मिश्रा को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

*संवेदनशील तथा मनमोहक संगीत संयोजन के लिए। इसमें, वायलिन बृंद का विस्मयकारी प्रयोग किया गया है जिसकी अनुभूति निंतात व्यक्तिगत होते हुए भी सार्वजनिक बन जाती है*

## Best Music Direction

**VIPIN MISHRA for NARMEEN**

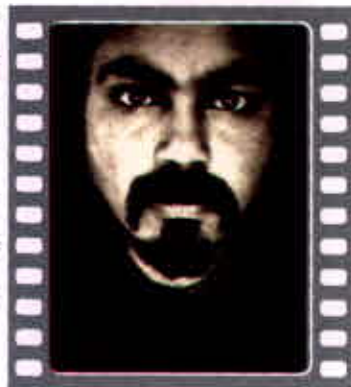
Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to the Music Director **Vipin Mishra**

### CITATION

*A sensitive and evocative musical score, with an amazing use of the violin ensemble, which is both a deeply personal and universal experience.*

## विपिन मिश्रा

विपिन मिश्रा ने कालेज के दिनों में ही रॉक बैंडों में गिटार वादक और गायक के रूप में भाग लेना शुरू कर दिया था। परिक्रमा और सिल्क रूट जैसे प्रसिद्ध बैंडों में काम करने के बाद उन्होंने स्वतंत्र रूप से संगीत निर्देशन के क्षेत्र में प्रवेश किया। वे फीचर फिल्मों, टेलीविजन विज्ञापनों आदि के लिए संगीत निर्देशन करते हैं। नरमीन के अतिथि उनकी फिल्मों में *लेट्स डांस*, *एमपी 3-मेरा पहला पहला प्यार* और *आलू चाट* का टायटल ट्रैक शामिल है।



## Vipin Mishra

Vipin Mishra is a music composer based in Mumbai. He started off as a guitar player and singer with amateur rock bands while still in college, leading him to audition for what was, at that time, one of New Delhi's hottest blues rock band Parikrama. Six years, many cities, a few guitars and more than a hundred gigs later, Mishra opted out for the studio circuit, performing with folk pop band Silk Route and scoring for advertising. Mishra programmes and arranges his own music and composes for feature films, TV commercials and record labels. His music shows influences from across genres, like Western Orchestral, Blues, Funk, Alternative, R'n'b, Adult Oriented Pop/Rock, and a life time of exposure to the Semi Classical, Folk and Popular Indian Music. Besides *Narmeen*, his work includes soundtrack of feature film *Lets Dance*, the title track of feature film *Mp3—Mera Pehla Pehla Pyaar*—and title track of *Aaloo Chaat*.

## सर्वोत्तम प्रकथन/वॉयस ओवर

इलांगबम नताशा को साना कीथेल के लिए

प्रकथक इलांगबम नताशा को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

एक मधुर और अंतरंग आवाज जो दर्शकों को मणिपुर में महिलाओं द्वारा चलाए जाने वाले बाजार के विपुल और अनोखे संसार तक ले जाती है।

## Best Narration/Voice Over

**ELANGBAM NATASHA for SANA KEITHEL**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to **Elangbam Natasha**

### CITATION

*A gentle and intimate voice which leads you to a great treasure house of insights on markets run by women in Manipur.*

## इलांगबम नताशा

इलांगबम मणिपुर विश्वविद्यालय के पत्रकारिता और जनसंचार विभाग में सहायक प्रोफेसर हैं। इससे पहले वे दूरदर्शन समाचार और ब्रिटैनिका इंडिया लिमिटेड के लिए काम कर चुकी हैं। वे मुख्यतः वृत्तचित्रों के लिए लेखन और संपादन का काम करती हैं और टेलीविज़न वृत्तचित्रों के लिए वायस ओवर करती हैं।



## Elangbam Natasha

Elangbam is an assistant professor at the Department of Journalism and Mass Communication, Manipur University. Earlier she has worked as senior content manager with Doordarshan News and a copy editor with Britannica India Ltd. She specializes in writing and editing scripts for documentaries, TV reporting and anchoring and providing voice-overs for television documentaries.

## विशेष उल्लेख

विट्ठल फिल्म का बाल कलाकार

अनिकेत रुमाडे

प्रशस्ति

एक बालक विट्ठल के पात्र को बढ़िया ढंग से निभाने के लिए। बालक विट्ठल अपने ऊपर थोपे गए रीति-रिवाजों और कर्मकांड से निपटता है और उनके विरोध में मन में उभरते क्रोध पर काबू पाने के लिए अपने आप से लड़ता है।

## Special Mention

Child actor in **VITTHAL**

**ANIKET RUMADE**

**CITATION**

*For his excellent portrayal of a young boy, Vitthal, dealing with ritualistic norms forced on him and his struggle to contain the anger brewing within.*



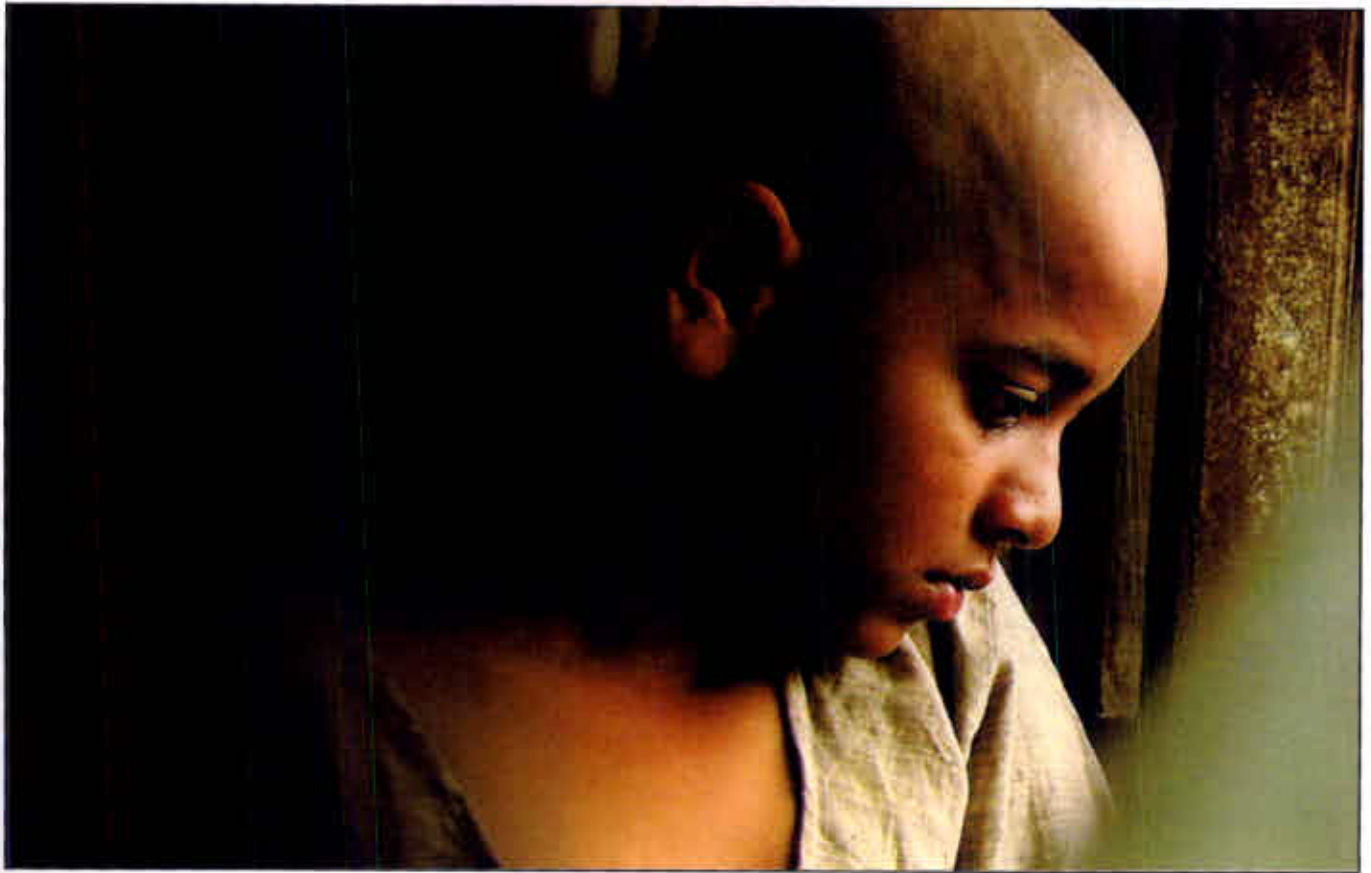
## अनिकेत रूमाडे

मुम्बई में रहने वाले आठवीं कक्षा के छात्र अनिकेत रूमाडे का किसी फिल्म में यह पहला अभिनय है। इसके बाद उसने मराठी फिल्म हुनर में मुख्य भूमिका निभायी और एक अन्य मराठी फिल्म चंदा में वह सहायक भूमिका में नज़र आया।



## Aniket Rumade

An eight standard student, residing in Dadar, Mumbai, Aniket Rumade made his first professional acting debut with the short film *Vitthal*. Subsequently he played a lead role in the Marathi film *Hunar* and a supporting role in unreleased film *Chanda*.





सिनेमा पर सर्वोत्तम लेखन पुरस्कार

**Awards : Best Writing on Cinema**



## सिनेमा : देखन और लेखन

—सुधीश पचौरी



सिनेमा के बारे में लिखना चुनौती भरा काम है। यह एक जटिल और सामूहिक कला की समीक्षा और मूल्यांकन का काम है। सिनेमा एक ऐसी कला है जिसके कलात्मक और साथ ही व्यावसायिक आयाम होते हैं। इन दिनों का सिनेमा बड़ी पूंजी, बड़ी सामूहिकता और अधिसंख्य दर्शकों के बीच अंतःक्रिया करते हुए बनती है। एक कलात्मक अनुभव के रूप में सिनेमा अब मार्केटिंग शक्तियों के बीच अपनी कला दिखाता है। ऐसे में फिल्म कला की बारीकियों में जाना एक कठिन काम होता जाता है।

इस बार मूल्यांकन के लिए उपलब्ध पुस्तकों और समीक्षाओं में समीक्षा के कठिन कार्य को पूरा करने की जबरदस्त कोशिश नजर आती है। अधिकतर अध्ययनों का संदर्भ मुख्यधारा का सिनेमा यानि बॉलीवुड है। इसमें भी हिंदी सिनेमा ज्यादातर समीक्षकों का ध्यान खींचता है। यद्यपि हिंदीतर भाषाओं का सिनेमा भी चर्चा में आता है।

कई पुस्तकें सिनेमा के इतिहास को उकेरती हैं तो कई में फिल्मों के प्रवृत्तिगत बदलावों को विश्लेषित किया जाता है। इनमें सिनेमा को मुख्यतः यथार्थवादी ढंग से समझने-समझाने की कोशिशें हैं। कुछ पुस्तकें ऐसी भी हैं जो सिनेमा के किसी एक पहलू यथा सिनेमैटोग्राफी की तकनीक या कहानी या संगीतकार, संगीत और गीत आदि के अध्ययन की बारीकियों में जाती है। कुछ जो सिनेमा उद्योग की पॉलिटीकल इकॉनोमी का अध्ययन करती हैं वे आज के सिनेमा उद्योग के कॉर्पोरेटीकरण के कई महत्वपूर्ण पहलुओं को छूती हैं। फिल्म निर्माण में फाइनेंस के वांछित अवांछित नियंत्रण और जनरुचि के निर्माण में उसकी भूमिका पर भी चर्चा करती हैं लेकिन वे इससे उत्पन्न समस्याओं के निराकरण के बारे में सार्थक दिशा नहीं दे पातीं। एकाध पुस्तक सिनेमा को नए ढंग के सांस्कृतिक अध्ययनों की नजर से देखती हैं। ऐसा लेखन सिनेमा द्वारा बनाई जाती जन-रुचियों का अध्ययन करता है। सिनेमा जिस तरह से पॉपुलर अनुभव रचता है, जन-रुचियों को गढ़ता है और मानवीय अनुभवों को तराशने, सुधारने का काम करता है, उसका अध्ययन दिलचस्प ठहरता है। नए सांस्कृतिक विमर्शों के आलोक में ऐसे अध्ययन आगे की सिनेमा समीक्षा के विकास में अच्छे संकेतक का काम करते हैं। इस नजर से देखें तो भारत में सिनेमा-कला की समीक्षा का समकालीन परिदृश्य निराश करने वाला नहीं लगता।

लेकिन इसकी कुछ सीमाएं भी नजर आती हैं। मसलन, अपने यहां सिनेमा कला की लगभग पश्चिम जितनी पुरानी परम्परा

है लेकिन उसकी समीक्षा में अपने देशज मानकों का कोई उल्लेख नहीं मिलता। नाट्यशास्त्र की संपन्न परम्परा और लोक कलाओं से सिनेमा ने आपस में क्या लिया-दिया है, इसकी पड़ताल नज़र नहीं आती और न ही लेखन में किन्हीं देशज मानकों के लिए कशमकश नज़र आती है। सिनेमा की ग्लोबल कला में लोकल की ऐसी अनुपस्थिति चौंकाती है। ज्यादातर समीक्षाएं अंग्रेजी में रही हैं। जो देशज भाशाओं में की जाती हैं वे सिनेमा के परिचयात्मक स्तर तक सिमटी रहती हैं। हाशियों पर सिमटी भाषाओं में इस मामले में कुछ छटपटाहटें अवश्य महसूस होती हैं।

सिनेमा की अखबारी समीक्षाओं की एक सीमा उनकी दुर्निवारता साप्ताहिकता है। उनके अखबार ही उनकी सीमा है। वे ज्यादातर फीचर रूप या ईवेंट रिपोर्टिंग के या सद्य कमेंट्री के रूप में आती हैं। उनमें प्रदर्शित फिल्म के बॉक्स ऑफिस के लालच का दबाव नज़र आता है। कई बार वे फिल्म का सतही परिचय देते हुए, उनकी तर्कातीत तारीफ करते हुए और आखिर में यत्किंचित आलोचना करके फिर भी देखने योग्य बताकर अपना काम चलाती हैं। कुछ तो नंबर या स्टार देकर मूल्यांकन करते हैं और इस तरह फिल्म की मार्केटिंग के हिस्से बनते नज़र आते हैं। समीक्षा का ऐसा कॉर्पोरेटीकरण इन दिनों की समीक्षाओं में लक्षित किया जा सकता है।

इनमें से कुछ नाम ऐसे अवश्य रहे हैं जिनके लेखन में फिल्म समीक्षा के नए रास्ते बनाने की कोशिशें स्पष्ट हैं जिन्हें ज्यूसी ने सहर्ष नामित किया है।

*सुधीश पचौरी 56वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2008 के सिनेमा पर सर्वोत्तम लेखन निर्णायक मंडल के सदस्य हैं।*

*इस लेख में अभिव्यक्त विचार व्यक्तिगत हैं और निर्णायक मंडल के किसी सदस्य या फिल्म समारोह निदेशालय के विचारों को आवश्यक रूप से प्रतिबिंबित नहीं करते।*

## सिनेमा संबंधी सर्वोत्तम पुस्तक

### बालीवुड मेलोडीज़ (अंग्रेज़ी)

लेखक गणेश अनंतरमण को स्वर्ण कमल और 75,000/- रूपये का नकद पुरस्कार

प्रकाशक पेंग्विन बुक्स इंडिया प्रा० लि० को स्वर्ण कमल और 75,000/-रूपये का नुकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

गणेश अनंतरमण अपनी पुस्तक में फिल्मी संगीत की मुख्यधारा का अवगाहन करते हैं किंतु उन्हें वहां संतोष की नदिकाओं के दर्शन होते हैं। पुस्तक में कथ्य और शैली की श्रेष्ठता का संगम है। लेखक ने हिंदी फिल्मों के कई अल्पज्ञात गानों की चर्चा करके उन्हें नई गरिमा प्रदान की है। पुस्तक में उन रागों का भी विश्लेषण है जिन पर फिल्मी गाने आधारित हैं

## BEST BOOK ON CINEMA

### BOLLYWOOD MELODIES (English)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs 75,000/- to the Author **Ganesh Anantharaman**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs 75,000/- to the Publisher **Penguin Books India Pvt. Ltd.**

### CITATION

*Ganesh Anantraman sails down the mainstream of Hindi film music but manages to find rivulets of solace all his own. He blends substance with style, taking care not to appear too profound or flimsy. He brings out the lesser known aspects of popular Hindi film songs thereby infusing them with fresh dignity. Ganesh delves into the ragas of film songs, keeping some space for little banter between artists.*

## पेंग्विन बुक्स इंडिया प्रा0 लि0

यह भारतीय उपमहाद्वीप की सबसे बड़ी प्रकाशन संस्था है जो हिंदी, अंग्रेजी, मराठी और उर्दू में पुस्तकें प्रकाशित करती है। इसने 1987 में 7 पुस्तकों के प्रकाशन के साथ व्यवसाय शुरू किया। इस समय यह हर वर्ष 200 से अधिक टाइटिल प्रकाशित कर रहा है। इसकी 2000 से अधिक प्रकाशित पुस्तकों की सूची में पाक शास्त्र से लेकर धर्म और राजनीति तक के विविध विषयों की पुस्तकें शामिल हैं। पेंग्विन के लगभग सभी बड़े लेखक प्रमुख साहित्यिक पुरस्कारों से सम्मानित हुए हैं जिनमें नोबेल, मेगसेसाय, ज्ञानपीठ, बुकर, साहित्य अकादमी और कामनवेल्थ राइटर्स पुरस्कार शामिल हैं। इसके कुछ लेखक पद्म विभूषण और भारत के सबसे बड़े नागरिक सम्मान भारत रत्न से भी अलंकृत हो चुके हैं।

## गणेश अनंतरमण

गणेश अनंतरमण इस समय बेंगलुरु में रहते हैं, लेकिन उन्होंने अपने जीवन के पहले 32 वर्ष मुंबई में गुजारे, जहां उन्होंने फिल्म संगीत के बारे में व्यापक ज्ञान अर्जित किया। उन्होंने राजनीति शास्त्र में एम.फिल किया और 6 वर्ष तक राजनीति शास्त्र के अध्यापक रहे। 1998 में वे इंडियन सोसायटी फॉर एप्लाइड बिहेवियरल सोसायटी के सदस्य बन गए।



## PENGUIN BOOKS INDIA LTD

Penguin India is the largest English language publisher in the subcontinent, publishing books in English, Hindi, Marathi and Urdu. It began publishing in 1987 with seven titles. Today, the company publishes more than 200 new titles every year and has an active backlist of over 2000 titles. Penguin's biggest authors have won virtually every major literary award, including the Nobel Prize, the Magsaysay, the Jnanpith, the Booker, the Sahitya Academy award and the Commonwealth Writers' Prize.

## GANESH ANANTHARAMAN

Ganesh Anantharaman spent the first thirty-two years of his life in Mumbai, where he acquired both his love for film music and an MPhil in political science. He taught that subject at the undergraduate level for six years, before moving on to training and development as his vocation after becoming professional member of the Indian Society for Applied Behavioural Sciences (ISABS) in 1998. He is currently an organisation development consultant based in Bangalore, living there with his wife and five-year-old son.



## विशेष उल्लेख

### द डायरेक्टर्स माइंड

लेखक उज्ज्वल चक्रवर्ती को प्रमाण पत्र

### प्रशस्ति

उज्ज्वल चक्रवर्ती ने इस पुस्तक में जाने-माने फिल्म निर्माताओं की उपलब्धियों पर नए सिरे से प्रकाश डाला है। पुस्तक में अपने समय के सबसे बड़े फिल्म निर्माताओं का परिचय दिया गया है। लेखक ने पाठकों को फिल्म निर्माण के तकनीकी पहलुओं में न उलझाकर फिल्म निर्माण के सिद्धांतों का विवेचन किया है जिससे हमें अनेक श्रेष्ठ फिल्मकारों की उत्कृष्ट कृतियों की विस्तृत जानकारी मिलती है

### SPECIAL MENTION

#### THE DIRECTOR'S MIND (English)

Certificate to the Author **Ujjal Chakraborty**

### CITATION

*Ujjal Chakraborty gives a fresh insight into the works of timeless luminaries. That is no mean achievement considering Ujjal talks of works of some of the biggest film makers. Rather than confusing the readers with technical jargon, Ujjal brings to the fore the ethos of film making, revealing the masterpieces of past Masters.*



## उज्ज्वल चक्रवर्ती

1956 में जन्मे उज्ज्वल चक्रवर्ती बंगाल सरकार के सूचना और संस्कृति कार्य विभाग के अन्तर्गत इंडो-इटैलियन इंस्टीट्यूट आफ फिल्मस एंड सोशल कम्युनिकेशन रूप कला केन्द्र में कार्टून संकाय के सदस्य हैं। फिल्मों के साथ उनका जुड़ाव 1975-76 में सत्यजीत रे की फिल्म *शतरंज के खिलाड़ी* की शूटिंग के दौरान हुआ। निर्देशक के रूप में उन्होंने पहले वृत्तचित्र का निर्देशन 1977-78 में किया। यह फिल्म टैगोर के गीतों के विशेषज्ञ शांति देव घोष के बारे में थी। उन्होंने फिल्मों के बारे में लेखन 1979 में शुरू किया। *द डायरेक्टर्स माइंड* पुस्तक में फिल्म निर्माण की प्रक्रिया की जानकारी दी गयी है। इसमें चार्ली चेपलिन, हिचकॉक, सत्यजीत रे, कुरोसावा और मियाज़ाकी जैसे निर्देशकों के काम करने के तरीकों का विश्लेषण किया गया है। फिल्म लेखन के अलावा चक्रवर्ती ने दस लघु फिल्मों का निर्देशन किया है और ग्यारह लघु फिल्मों और दो टेलीविजन कार्यक्रमों के लिए पृष्ठभूमि संगीत दिया है। उनके चार उपन्यास प्रकाशित हुए हैं।



## Ujjal Chakraborty

Born in 1956 Ujjal Chakraborty is a member of the Faculty of Animation at Roop Kala Kendra, an Indo-Italian Institute of Films and Social Communication under the Department of Information & Cultural Affairs, Govt of West Bengal. His direct contact with the realm of film making started in 1975/76, during the shooting of Satyajit Ray's *Shatranj Ke Khilari*. He directed his first film in 1977/78, a documentary film on Santideb Ghosh, one of the major exponents of Tagore songs.

He started writing on cinema in 1979 with an article on Satyajit Ray's films and stories for children in a special issue of *Ulltorath*, a popular monthly. The *Director's Mind* is a step by step study of the process of film making. Methods of the directors like Chaplin, Hitchcock, Satyajit Ray, Kurosawa, Miyazaki and others are analyzed in the book.

Chakraborty has directed ten short films, composed background score for eleven shorts and two TV shows, did research work on films of important filmmakers, was the chief set designer for Aparna Sen's *Picnic* and costume designer for her film, *Sati*. He worked as an illustrator for *Sandesh*, has written four novels, and has also been a columnist, cartoonist, art and film critic.

## सर्वोत्तम फ़िल्म समीक्षक

### अलताफ़ मज़ीद और आर.के. बिदुर सिंह

फ़िल्म समीक्षक अलताफ़ मज़ीद और आर.के. बिदुर सिंह को स्वर्ण कमल और 75,000/-रूपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

स्पष्ट अभिव्यक्ति अलताफ़ मज़ीद के लेखन की विशेषता है। उनके सीधे-सरल लेखन में शोधकर्ता की दृष्टि की झलक मिलती है। वह किसी विशिष्ट विषय का विश्लेषण सर्वस्वीकार्य शैली में करते हैं। असमिया फ़िल्म उद्योग पर वे साफ़गोई और गंभीरता से कलम चलाते हैं। यह पुरस्कार विशेष अर्थ रखता है क्योंकि असमिया सिनेमा इस समय प्लेटिनम जयंती मना रहा है

### और

आर.के. बिदुर अपने लेखन से पाठकों को ऐसी दुनिया में ले जाते हैं जो शायद फिल्मकारों के लिए भी अनजानी है। उनके लेखन में उदारता झलकती है और वे विचार भिन्नता में विष्वास करते हैं। वे मुख्यतया क्षेत्रीय सिनेमा पर कलम चलाते हैं और अन्तर्राष्ट्रीय सिनेमा में लिखते हुए भी वे सांस्कृतिक संदर्भों को धामे रखते हैं।

## BEST FILM CRITIC

### ALTAFAZ MAZID and R.K. BIDUR SINGH

### CITATION

*A straight laced expression marks Altaf Mazid's works. His simple narration of subjects is backed up by a researcher's keen eye. He talks of the specific in a universally acceptable manner. No flourishes, he focuses on Assamese film industry with steadfastness and perseverance. Quite appropriately too, for an industry that is now celebrating its Platinum jubilee.*

### and

*R.K. Bidur Singh takes the readers to a state little known to our film makers. He understands cinema like few others, bringing with him an open mindset that accepts the plurality of thought. He upholds the cause of regional film makers and his ability to focus on cultural relativity does not leave him even when he talks of international cinema. He loves films and it shows in his works.*

## आर.के. विदुर सिंह

आर.के. विदुर सिंह मणिपुर सरकार में सहायक लेखाधिकारी के रूप में रिटायर हुए हैं। नाटकों और फिल्मों के समीक्षक के अलावा वे 1996 के पूर्वोत्तर फिल्म समारोह दीमापुर और 1984 के पहले मणिपुर राज्य फिल्म समारोहों के निदेशक रहे। वे राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम, कोलकाता की पटकथा समिति के सदस्य और मणिपुर फिल्म विकास निगम की फिल्म समिति के अध्यक्ष रहे हैं। इस समय वे मणिपुर फिल्म विकास निगम में फिल्म संग्रहालय निदेशक के रूप में काम कर रहे हैं।



## R.K. Bidur Singh

A masters in commerce R.K. Bidur Singh retired as assistant accounts officer in the office of deputy accountant general, Manipur. A leading theatre and film critic and film society activist, he has been the director of North East Film Festival, Dimapur, 1996 and the first Manipur state film festival, 1984. He has been the member of script committee, NFDC, Kolkata and chairman of the film committee, Manipur Film Development Corporation. He is the director, Film Archives for the Manipur Film Development Corporation.

## अलताफ मजीद

अलताफ मजीद ने गुवाहाटी विश्वविद्यालय से इंजीनियरी में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की। वे फिल्म समीक्षक के साथ-साथ फिल्म निर्माता भी हैं। मजीद ने असमिया सिनेमा पर कई लेख लिखे हैं। वे कई राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में फिल्म समीक्षकों के निर्णायक मंडल के सदस्य के रूप में काम कर चुके हैं। वे 1999 के भारत के अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में इंडियन पैनोरमा की चयन समिति के भी सदस्य थे। 2004 में उन्होंने 1935 में बनी पहली असमिया फिल्म *जोयमति* की जीर्ण-शीर्ण फुटेज का पुनर्निर्माण किया। इस फिल्म को अनेक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में प्रदर्शित किया गया।



## Altaf Mazid

Altaf Mazid has a master's degree in engineering from Guwahati University. He is a critic turned filmmaker. Mazid has written a number of essays, mainly on cinema of Assam. As a member of FIPRESCI, he has been on the film critics' jury at IFFI (1992), IDFA Amsterdam (1997), YIDFF Japan (2001), MIFF Moscow (2004), Cannes (2006) besides being invited to Fajr Film Festival of Tehran as guest critic in 1997. He was a member of selection committee of Indian panorama (non-fiction) of IFFI 1999 and Assam State Film Awards 2005 for feature films category.

सारांश फ़ीचर फ़िल्म

---

**Synopses Feature Films**



## आई कोट नाई

असमिया / 87मिनट / 35एमएम / रंगीन

निर्माता : राजेन बोरा एवं मंजु बोरा  
निर्देशन और पटकथा : मंजु बोरा  
छायांकन : राजू मिश्र संपादन : ए.  
श्रीकर प्रसाद; संगीत: इसाक थॉमस  
कोट्टुकापल्ली; कलाकार : बिद्यावती  
फुकन, रूपम चेतिया, विष्णु खरगोरिया,  
इंदिरा बानिया

पूर्वोत्तर भारत में अलग-अलग संस्कृतियों और भाषाओं के लोग बसे हैं। इस क्षेत्र के एक प्रांत असम ने तो भारत के साथ अपने विलय को पूरी तरह आत्मसात कर लिया है लेकिन एक अन्य राज्य नगालैंड के लोग अभी तक अपनी राजनीतिक स्वतंत्रता को लेकर संघर्ष कर रहे हैं। यही नहीं, नगालैंड के लोगों ने असम के कुछ भूभाग को भी अपना बताया है जिससे दोनों राज्यों के बीच तनातनी बनी रहती है। असम के एक लड़के सीमांत और नगा युवती अकाली के बीच प्रेम हो जाता है उधर धरानी और आइती के मकान को जला दिया जाता है और वे समझते हैं कि उनका नवजात शिशु जल गया है। असल में वह बच्चा सीमा पार के एक गांव में दूसरे समुदाय की एक बेऔलाद औरत के पास होता है जिसकी जिंदगी में बच्चा पाकर खुशी की किरणें फूट पड़ती हैं।



## AAI KOT NAI

*Assamese/87 min/35mm/Colour*

**Producer:** Rajen Bora, Manju Borah  
**Direction and Screenplay:** Manju Borah  
**Cinematography:** Raju Mishra  
**Editing:** A. Sreekar Prasad  
**Music:** Isaac Thomas Kottukapally  
**Cast:** Bidyabati Phukan, Rupam Chetia, Bishnu Khargharia, Indra Bania

The North East of India, of which Assam and Nagaland are two integral provinces, is the abode of diverse linguistic and cultural population. While Assam has accepted its absorption into India as a historic fact, the Nagas are still battling for their political freedom.

In the process they have also claimed a vast tract of Assam's territory as their own which has resulted in frequent armed conflicts between the State forces, the insurgent groups and the political opportunists. While the conflict burnt the bridges between the two communities, love blossomed in the young hearts of an Assamese boy Seemanta and a Naga girl Akali. A new born baby was thought to have lost its life when the parents Dharani & Aaity found their home burnt down by the mobs. But love kindled in the heart of a weaning mother in a remote village of the other community across the border.

## अंतहीन

बांगला/120 मिनट/ 35 एम.  
एम/रंगीन

निर्माता : स्क्रीन प्ले फिल्मस प्रा० लि०  
और जीव बैनर्जी निर्देशक: अनिरुद्ध  
राय चौधरी पटकथा: श्यामल सेनगुप्त  
संपादन : अर्ध्यकमल मित्र छायांकन:  
अवीक मुखोपाध्याय संगीत : शांतनु  
मोएत्रा, कलाकार : राहुल बोस,  
राधिका आप्टे, अपर्णा सेन, शर्मिला टैगोर

अभीक चौधरी एक ईमानदार और सीधा-सादा आई.पी.एस अधिकारी है। अपने जीवन के वास्तविक रिश्तों से निराश हो जाने के कारण वह कम्प्यूटर के ज़रिए एक महिला वृंदा से दोस्ती गांठता है हालांकि उसे यह मालूम नहीं कि वह महिला कौन है। वृंदा एक युवा और चुस्त-दुरुस्त टीवी पत्रकार है। उन दोनों की पहली मुलाकात एक प्रापर्टी डीलर वी.के. मेहरा की एक विवादास्पद परियोजना के उद्घाटन के मौके पर होती है और संयोगवश दोनों में झगड़ा हो जाता है। रंजन और परोणीता, जो पति-पत्नी हैं लेकिन जिनके रिश्तों में खटास चल रही है, उन दोनों में मेल कराने के लिए आगे आते हैं। इस प्रक्रिया में ये सभी लोग एक दूसरे के निकट आते हैं और उन्हें एहसास होता है कि प्रेम भले ही बड़ा नाजुक है लेकिन यह अंतहीन है और हमें अनंत से जोड़ता है।



## ANTAHEEN

Bengali/120 min/35mm/Colour

**Producer:** Screenplay Films P. Ltd and Jeet Banerjee **Director:** Aniruddha Roy Chowdhury **Screenplay:** Shyamal Sengupta **Editing:** Arghyakamal Mitra **Cinematography:** Avik Mukhopadhyay **Music:** Shantanu Moitra **Cast:** Rahul Bose, Radhika Apte, Aparna Sen, Sharmila Tagore

Abhik Chowdhury is an honest, upright yet laidback IPS officer. Having lost faith in real relationships, he seeks solace in the virtual world and develops an online relationship with Brinda without knowing who she is.

Brinda is a young, dynamic TV journalist. But both Abhik and Brinda don't know each other's real names and whereabouts. Ironically, their first meeting in the real world turns out to be acrimonious, at the launch of the controversial mega project of the real estate entrepreneur V.K. Mehra. Ranjan and Paromita, an estranged couple, become the bridge between Abhik and Brinda. Ranjan is Abhik's cousin and Paromita is Brinda's colleague and friend. As the film progresses these characters discover each other and themselves and reinforce that love might be fragile but it continues endlessly, linking us to eternity.

## बाईस्कोप

मलयालम / 94मिनट / 35एमएम /  
रंगीन

निर्माता: राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम  
निर्देशन और पटकथा : के. एम  
मधुसूदन छायांकन : एम.जे. राधाकृष्णन  
संपादन : बीना पाल संगीत : वेयाट्टूमल  
चंद्रन कलाकार : मुरुगन, मेखा राजन,  
नेदुमरम गोजी, कुट्टियेदाति विलासिनी,  
अनुशा मोहन

यह सपनों और स्मृतियों में इतिहास के  
दखल की कहानी है। फिल्म में दिखाया  
गया है कि गुलामी और उपनिवेशवाद  
के कारण अपनी आवाज़ खो चुके ग्रामीण  
किस तरह नई मशीन बायोस्कोप के  
ज़रिए नई दृष्टि प्राप्त करते हैं।  
बायोस्कोप के आ जाने से दिवाकरन  
के जीवन की नई यात्रा शुरू होती है।  
इस यात्रा का सूत्रधार है एक फ्रांसीसी  
डू पोंट। इन दोनों के संबंधों की यात्रा  
की शुरुआत पहली बार विस्मय भाव  
से देखे गए चलते-फिरते चित्रों से  
होती है। जल्दी ही वे अभिन्न मित्र बन  
जाते हैं।



## BIOSCOPE

*Malayalam/94min/35mm/Colour*

**Producer:** NFDC **Direction and**

**Screenplay:** K.M. Madhusudanan

**Cinematography:** M.J.

Radhakrishnan **Editing:** Bina Paul

**Music:** Veyattummal Chandran

**Cast:** Murugan, Mekha Rajan,

Nedumram Gopi, Kuttiedathi

Vilasini, Anusha Mohan

This is the story of history  
entering the paths of memories  
and dreams. The story of villagers,

made mute by colonialism and  
slavery, acquiring vision through  
a new machine, the bioscope.  
The protagonist Diwakaran's  
new journey starts with the  
acquisition of a bioscope. The  
Frenchman DuPont is the  
architect of this journey.  
Diwakaran's relationship with  
DuPont and the bioscope begins  
on a note of astonishment and  
wonder at seeing the first moving  
images. It soon turns into a tale of  
inseparable friends.

## फैशन

हिंदी / 160 मिनट / 35एमएम / रंगीन

निर्माता : यूटीवी मोशन पिक्चर्स  
निर्देशन : मधुर भंडारकर पटकथा :  
अजय मोंगिया और अनुराधा तिवारी  
छायांकन: महेश लिमये संपादन : देवेन्द्र  
मुर्देश्वर संगीत : सलीम सुलेमान  
कलाकार : प्रियंका चोपड़ा, अरबाज़  
खान, कंगना रनाउत

फैशन की चमकदार और कठोर दुनिया को लेकर बनी यह फिल्म छोटे शहर की एक ऐसी लड़की की कहानी है जो बड़े सपने देखती है। मेघना को यह भरोसा है कि एक दिन वह मशहूर होगी लेकिन उसे सफलता के लिए बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है। फिल्म यह सच्चाई सामने लाती है कि तब क्या होता है जब सफलता की कीमत इतनी बड़ी हो जिसे चुकाना कठिन हो। इसमें सौंदर्य व्यवसाय के खोखलेपन, झूठ और बनावटीपन के काले पक्ष को उघाड़ा गया है जिसमें पार्टी बाजी, अहंकार, भोगलिप्सा, शराब, शबाब, नशीले पदार्थ, फरेब, निराशा और गहरी असुरक्षा का बोलबोला है।



## FASHION

Hindi/160 min/35mm/Colour

**Producer:** UTV Motion Pictures  
**Direction:** Madhur Bhandarkar  
**Screenplay:** Ajay Mongia and Anuradha Tiwari  
**Cinematography:** Mahesh Limaye  
**Editing:** Devendra Murdeshwar  
**Music:** Salim-Sulaiman  
**Cast:** Priyanka Chopra, Arbaaz Khan, Kangana Ranaut

Set against the glittering backdrop of the glamorous but ruthless world of haute couture, *Fashion* is

the story of a small town girl with big dreams. Meghna always knew she was meant to be famous, but she finds out the hard way that success came at a price. *Fashion* is the tale of what happens when the price of success becomes too much to pay. It presents the murky, fake and shallow side of the beauty business, the partying and the hedonism, the networking and the air-kissing, the drinks and the drugs, the betrayals and the disillusionments, the design filching and the deep insecurities.



## फिराक

हिंदी/100 मिनट/35 एम.एम./रंगीन

**निर्माता:** परसेप्ट पिक्चर कम्पनी  
**निर्देशक:** नंदिता दास **पटकथा:** नंदिता दास और शुचि कोठारी **संपादन:** ए. श्रीकर प्रसाद **छायांकन:** रवि के. चंद्रन **संगीत:** रजत ढोलकिया और पीयूश कनोजिया **कलाकार:** परेश रावल, नसीरुद्दीन शाह, दीप्ति नवल, तिस्का चोपड़ा, संजय सूरी, शहाना गोरवामी, रघुवीर यादव

फिराक एक मिश्रित फिल्म है जिसका घटना काल गुजरात दंगों के एक महीने बाद का 24 घंटे का समय है। इसमें आम लोगों की भावात्मक यात्रा को तलाशने की कोशिश की गई है। एक मध्यवर्गीय गृहिणी दंगों से पीड़ित एक व्यक्ति द्वारा मदद के लिए दरवाजा खटखटाने पर दरवाजा नहीं खोलती और अपने इस अपराधबोध से उबरने का प्रयास करती है। भय और संदेह के इस माहौल में दो दोस्तों की वफादारी दांव पर लग जाती है। एक आधुनिक हिंदू-मुस्लिम दंपति अपनी पहचान छिपाने और दिखाने की दुविधा का शिकार है। एक लड़का, जो अपने घर वालों को दंगों में खो चुका है, अपने गुमशुदा बाप की खोज में लगा है। एक संत संगीतकार शहर में दंगे-फसाद के शोर के बीच तब तक अपने आदर्शवाद से चिपका रहता है जब तक एक घटना उसके विश्वास को हिला नहीं देती।



## FIRAAQ

*Hindi/100 min 34sec/35mm/Colour*

**Producer:** Percept Picture Company **Director:** Nandita Das **Screenplay:** Nandita Das and Shuchi Kothari **Editing:** A. Sreekar Prasad **Cinematography:** Ravi K. Chandran **Music:** Rajat Dholakia and Piyush Kanojia **Cast:** Paresh Rawal, Naseeruddin Shah, Deepti Naval, Tisca Chopra, Sanjay Suri, Shahana Goswami, Raghuveer Yadav

*Firaaq* is an ensemble film that takes place over a 24-hour period, a month after a horrific communal carnage. It traces the emotional journeys of ordinary people. A middle class housewife closes the

door on a victim and struggles to overcome her guilt. The loyalties of two friends get tested in the times of fear and suspicion. A modern day Hindu-Muslim couple struggles between the instinct to escape their identity and the desire to assert it. A boy desperately searches for his missing father, having lost the rest of his family in the riots. A saintly musician clings to his idealism despite all the violence in the city, until an incident shakes his faith. *Firaaq* explores the impact of violence on human psyche and relationships. Violence spares nobody. Yet in the midst of all this madness, some still sing hopeful songs for better times.

## गग्गरा

तुलु/115 मिनट/35एमएम/रंगीन

निर्माता: डीमा सिने प्रोडक्शन निर्देशक,  
पटकथा और संगीत : शिवध्वज शेटी  
संपादन : के.एम प्रकाश छायांकन :  
सुरेश बिरसुंद्र कलाकार : सुचेन्द्र प्रसाद,  
एम.के.मट्ट, जयशीला

तटवर्ती कर्नाटक में बसे तुलु समुदाय में प्रचलित परंपरागत पूजा पद्धति भूता कोला में पवित्र आत्मा की पूजा की जाती है। भूता बनने वाले व्यक्ति को छोटी जाति का अछूत मान लिया जाता है और उसे समाज में अन्य लोगों के साथ उठने-बैठने की अनुमति नहीं होती। वे न तो किसानी कर सकते हैं और न ही मजदूरी कर सकते हैं। भूता कोला की पूजा साल में केवल 5 महीने होती है और इसके लिए उन्हें थोड़ा-सा अनाज और बहुत कम रूपये मिलते हैं। साल के बाकी महीनों में वे भिखारी बन कर रहने को विवश होते हैं। फिल्म में शंकर की कहानी है जो भूता बनने वाले एक व्यक्ति का बेटा है। वह शिक्षित युवक है और स्कूल में अध्यापक है। वह अपने पिता के बाद इस परंपरा को जारी रखता है लेकिन समाज को अपने साथ समान व्यवहार के लिए तैयार करता है। उसके प्रयासों से भूता समाज की आर्थिक दशा सुधर जाती है और उन्हें सामाजिक प्रतिशठा प्राप्त हो जाती है।



## GAGGARA

Tulu/115 min/35mm/Colour

**Producer:** D'Ma Cine Production  
**Direction, Screenplay and Music:** Shivadhvaj Shetty  
**Editing:** K.M. Prakash  
**Cinematography:** Suresh Birsundra  
**Cast:** Suchendra Prasad, M.K. Matt, Jayasheela

Bhoota Kola is the traditional, ritualised worship of holy spirit prevalent in the Tulu community in coastal Karnataka. The film portrays the social problems faced by the community who perform this custom. The person impersonating the bhoota is

ostracised as lower caste and not allowed to mingle freely. They can't do farming nor work as labourers. They perform Bhoota Kola only for five months in a year and given some food and paltry money. They almost beg for the rest of the year. The film is about Shankar, the son of a bhoota impersonator. He is educated and works as a school teacher. He continues with the tradition after his father dies but makes the society treat them equally. This helps the bhoota community become economically stable and socially respected.

गंध

मराठी/95मिनट/35एमएम/ रंगीन

निर्माता : पलेश बैक वैचर्स निर्देशन  
और पटकथा : सचिन कुंदालकर  
छायांकन: अमलेंदु चौधरी संपादन :  
अभिजीत देशपांडे संगीत : शैलेन्द्र बर्वे  
कलाकार : गिरीश कुलकर्णी, अमृता  
सुभाष



## GANDHA

Marathi/95min/35mm/Colour

**Producer:** Flashback Ventures  
**Direction and Screenplay:** Sachin Kundalkar  
**Cinematography:** Amalendu Chaudhari  
**Editing:** Abhijeet Deshpande  
**Music:** Shailendra Barve  
**Cast:** Milind Soman, Neena Kulkarni, Girish Kulkarni, Amruta Subhash

The film is an ensemble of three independent stories, bound together by characters who are all going through experiences involving the sense of the smell. The stories depict the complexity of relationships and varied emotional landscapes. *Lagnaachya Vayachi Mulgi (A Bride To Be)* is a

romantic comedy set in the old Pune city area of Sadashiv Peth. Veena, a young girl staying here, is not getting a suitable groom due to her dark skin. One day she declares her unbound love with a mysterious lover to her parents. *Aushadh Ghenara Manus (A Man On Medicines)*, is the tale of Sarang, a fashion photographer. One afternoon, Sarang's wife Raavi returns to meet him and Sarang's life changes forever. *Baajoola Basleli Baai (A Woman Sitting Aside)*, takes place on a stormy night in a village. Janaki, cannot attend to the newly born baby in the house and has to make do by doing nothing.

यह फिल्म तीन अलग-अलग कहानियों का समुच्चय है और प्रत्येक कहानी सूंघने के ऐंद्रिक अनुभव को लेकर चलती है। लग्नाचय बायाची मुल्गी (भावी दुल्हन) कहानी पुराने पुणे के सदाशिव पेठ इलाके में घटी एक कामेडी है। यहां रहने वाली युवती वीना को सांवली होने के कारण कोई उपयुक्त वर नहीं मिल रहा है। एक दिन अचानक वह अपने मां-बाप को बताती है कि वह एक रहस्यमय प्रेमी से प्यार करती है। दूसरी कहानी औषध घेनारा मानुश (औषधि पुरुष) एक फैशन फोटोग्राफर सारंग के बारे में है। उससे अलग रह रही पत्नी अचानक एक दिन घर लौट आती है और उसकी जिंदगी पूरी तरह बदल जाती है। बाजूला बसलेली बाई (बगल में बैठी औरत) कहानी में यह दिखाया गया है कि एक गांव में तूफानी रात में जानकी नवजात शिशु की देखभाल नहीं कर पाती तो वह उसके लिए बिना कुछ सार्थक किए ही कोई न कोई काम करती रहती है।

## गुब्बाचिगालु

कन्नड/90 मिनट/35एमएम/ रंगीन

निर्माता : मीडिया हाऊस स्टुडियो  
निर्देशन और पटकथा : अभय सिम्हा  
छायांकन : डा0 विक्रम श्रीवास्तव  
संपादन : नरहल्ली ज्ञानेश संगीत :  
अनमोल भावे कलाकार : अभिलाष  
कश्यप, प्रकृति प्रसाद, राजेश एन

बड़े शहर की भीड़-भाड़ और भाग-दौड़ के बीच दो बच्चे अपनी खोई हुई चिड़िया ढूँढने निकलते हैं। इला और अनिरुद्ध नाम के इन बच्चों की चिड़िया खोजने की इस यात्रा में दर्शक भी शामिल हो जाते हैं। इस खोज के दौरान वे नए-नए स्थानों पर जाते हैं और कई खास लोगों से मिलते हैं जिससे उन्हें बहुत कुछ सीखने को मिलता है। हर किसी से उन्हें यही जवाब मिलता है कि चिड़िया यहीं कहीं है लेकिन क्या उनकी बात सच होती है? चिड़िया मिलने की हर उम्मीद टूट जाने से उनका अपराध बोध बढ़ता जाता है। क्या बच्चों को अंततः चिड़िया मिल जाती है? हर जगह पाई जाने वाली चिड़िया की एक प्रजाति तो लगभग लुप्तप्राय ही हो चुकी है। फिल्म में जैविक विविधता में आ रही गिरावट और शहरी जीवन के यथार्थ को सुंदरता के साथ चित्रित किया गया है।



## GUBBACHIGALU

Kannada/90 min/35mm/Colour

**Producer:** Media House Studio  
**Direction and Screenplay:**  
Abhaya Simha **Cinematography:**  
Dr Vikram Shrivastava **Editing:**  
Narahalli Jnanesh **Music:** Anmol  
Bhave **Cast:** Abhilash Kashyap,  
Prakruti Prasad, Rajesh N

Amidst the hustle-bustle of the concrete jungle in a sprawling city, two children go on a quest to find 'their' missing sparrow. This film takes us with the children - Ila and Anirudha - on their journey as they pursue the elusive sparrow. They set off from home with a guilt-ridden

conscience that they may have been responsible for the sparrow's disappearance. But it is their innocence and curiosity that take them on a trail of learning and discovery as they arrive at unusual places and meet unusual people. Everyone they meet says that sparrows are around but are they really there? Unable to find even a single sparrow in sight, the children's anxiety and guilt only grows after each encounter. Do the children finally find the sparrow? The once ubiquitous sparrow is now almost an extinct species. This movie brings into sharp relief the realities of urban life and a dwindling biodiversity.

## हरिशचंद्राची फॅक्टरी

मराठी/96 मिनट/35एमएम/ रंगीन

**निर्माता:** यूटीवी मोशन पिक्चर्स, स्मिति कनोडिया और परेश मोकाशी **निर्देशन** और **पटकथा:** परेश मोकाशी **संपादन:** अमित पवार **छायांकन :** अमलेंदु चौधरी **संगीत :** आनंद मोडक **कलाकार:** नंदु माधव, विभावरी देशपांडे, मोहित गोखले, अथर्व कर्वे



## HARISHCHANDRACHI FACTORY

*Marathi/96 min/35mm/Colour*

**Producer:** UTV Motion Pictures, Smriti Kanodia and Paresh Mokashi, **Direction and Screenplay:** Paresh Mokashi **Editing:** Amit Pawar **Cinematography:** Amalendu Chaudhary **Music:** Anand Modak **Cast:** Nandu Madhav, Vibhavari Deshpande, Mohit Gokhale, Atharva Karve

*Harishchandrachi Factory* is the story of the birth of Indian film industry, the largest in the world. It is set in the year 1911, the days of British rule. Lokmanya Tilak was in Mandalay prison. Once in

a while in Mumbai pictures were screened in a tent and were patronised by the foreigners and elite Indians. Nobody knew this medium existed. Then one day, a common man, Dhundiraj Phalke, came across a tent theatre accidentally. He had abandoned a well established printing business after a quarrel with his partner and was unemployed and struggling to survive. With the support of his wife and kid he ventured into the unexplored world of motion pictures and made India's first feature film, *Raja Harishchandra*. Not only that he assured that it became a super hit. The film portrays the amazing journey of the man who set up the Indian film industry.

भारतीय फिल्म उद्योग की नींव 1911 में उस समय पड़ी जब यहां अंग्रेजों का राज था और लोकमान्य तिलक मांडले जेल में बंद थे। मुम्बई में कभी-कभार फिल्में किसी टेंट में दिखाई जाती थीं जिनमें विदेशी लोग तथा संभ्रांत भारतीय मौजूद रहते थे। तभी एक दिन दुंडीराज फाल्के को अचानक उस टेंट में जाने का मौका मिला जहां फिल्म दिखाई जा रही थी। उस समय फाल्के अपने भागीदार से झगड़ा हो जाने पर छपाई का धंधा छोड़ चुके थे। अपनी पत्नी और बच्चे की मदद से उन्होंने इस नई तकनीक पर हाथ आजमाया और भारत की पहली फिल्म राजा हरीश चंद्र का निर्माण किया। हरीशचंद्राची फॅक्टरी में भारतीय सिनेमा के जनक दादा साहब फाल्के की अद्भुत जीवन यात्रा का चित्रण किया गया है।

## जियंता भूता

ओड़िया / 90मिनट / 35एमएम / रंगीन

निर्माता : अक्षय कुमार परीजा  
निर्देशन, पटकथा और संपादन :  
प्रशांत नंदा छायांकन : ए.के. बीर  
संपादन : मन्मथ मिश्र कलाकार :  
मनोज मिश्र, रिमझिम, चा, बिकाश दास

ओड़िशा की जनजाति डोंग्रिया कांधा में प्रचलित रिवाज के अनुसार एक लड़का बांगरू और लड़की सिंगारी घर से भागकर विवाह करना चाहते हैं। शर्त यह है कि घर से भागते हुए लड़का यदि लड़की का हाथ छोड़ दे तो उसे दहेज देना पड़ता है। पलायन की रस्म के दौरान लड़के के बाप को एक बाघ मार डालता है तो उससे लड़की का हाथ छूट जाता है और उसे लड़की के बाप को दहेज देना पड़ता है जिसके लिए वह कर्जा उठाता है। ऋण चुकाने के लिए बांगरू और सिंगारी एक साल तक साहुकार के बंधुआ मजदूर के रूप में काम करते हैं। साहुकार बांगरू को किसी मुकद्दमे में फंसा देता है और उसे जेल हो जाती है। इस दौरान वह सिंगारी की शराफत और सीधेपन का फायदा उठाकर उसका यौन शोषण करता है। सिंगारी को अहसास होता है कि शरीर कितना महत्त्वपूर्ण है।



## JIANTA BHOOTA

Oriya/90 min/35mm/Colour

**Producer:** Akshay Kumar Parija  
**Direction, Screenplay and Editing:** Prashanta Nanda  
**Cinematography:** A.K. Bir  
**Editing:** Music: Manmath Mishra  
**Cast:** Manoj Mishra, Rimjhim, Ch. Bikash Das

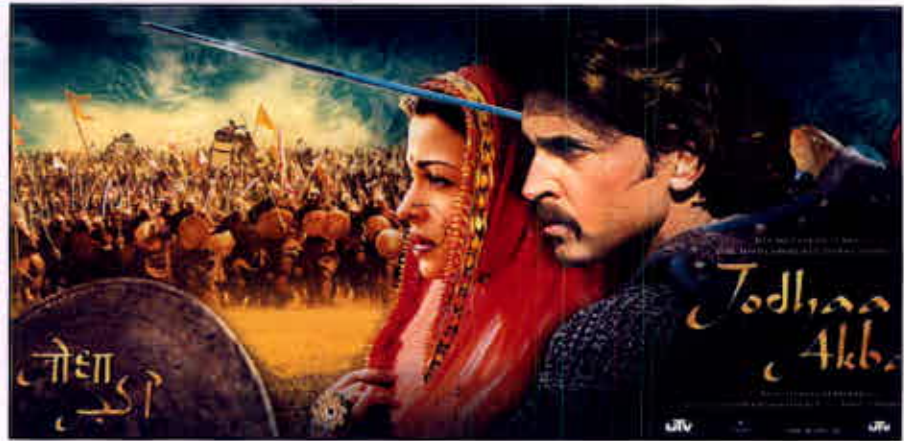
Along the border of the South-Western region of Orissa, a hill named Niayamgiri is renowned for its flora and fauna. A tribe called Dongria Kandha dwells here and has immense faith and belief in the natural resources. A young girl from the tribe, Singari, and a boy, Bangru, intend to get

married by customary elopement. If the boy leaves the girl's hand while eloping, he has to pay dowry. When Bangru's father is killed by a tiger during the eloping ceremony, he leaves Singari's hand and has to pay dowry to the girl's father for which he has to take a loan. The couple have to work as bonded labour with the sahuکار for a year for the amount to be loaned to Bangru. Bangru gets implicated in a court case by the sahuکار. He is put behind bars. Meanwhile Singari gets a new found sense of her body as her innocence gets destroyed and exploited.

## जोधा अकबर

हिंदी / 210 मिनट / 35 एमएम / रंगीन

**निर्माता:** यूटीवी मोशन पिक्चर्स  
**निर्देशन:** आशुतोश गोवारिकर **पटकथा:**  
आशुतोश गोवारिकर और हैदर अली  
**छायांकन :** किरण देवहंस **संपादन :**  
बल्लु सलूजा **संगीत :** ए.आर.रहमान  
**कलाकार :** ऋतिक रोशन, ऐश्वर्या  
राय



## JODHAA AKBAR

Hindi/210 min/35mm/Colour

**Producer:** UTV Motion Pictures  
**Direction:** Ashutosh Gowariker  
**Screenplay:** Ashutosh Gowariker  
and Haider Ali **Editing:** Ballu  
Saluja **Cinematography:** Kiran  
Deohans **Music:** A.R. Rahman  
**Cast:** Hrithik Roshan, Aishwarya  
Rai

Jodhaa Akbar is the story of the greatest Mughal emperor who ruled Hindustan, Jalaluddin Mohammad Akbar, and the fiery young Rajput princess, Jodhaa. Set in the sixteenth century, the epic romance begins as a marriage of alliance between two cultures and religions, for

political gain, with King Bharmal of Amer giving his daughter's hand to Emperor Akbar. When Akbar accepts the marriage proposal, little does he know that in his efforts to strengthen his relations with the Rajputs, he would in turn be embarking on a new journey – the journey of true love. From the battlefield where the young Jalaluddin was crowned, through the conquest that won him the title of Akbar the Great, to winning the love of the beautiful Jodhaa, Jodhaa Akbar traces the impressive graph of the mighty emperor and his romance with the defiant princess.

यह फिल्म भारत के महान मुगल सम्राट जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर और तेज तर्रार महारानी जोधा अकबर के जीवन पर आधारित है। 16 वीं सदी की पृष्ठभूमि की इस कहानी में रोमांस की शुरुआत उस समय होती है जब आमेर के राजा भारमल द्वारा राजनीतिक लाभ के लिए अपनी बेटी जोधा का हाथ अकबर के हाथ में सौंपा जाता है और उससे दो संस्कृतियों और धर्मों के संगम की प्रक्रिया जन्म लेती है। विवाह का प्रस्ताव स्वीकार करते हुए अकबर को जरा भी एहसास नहीं होता कि राजपूतों के साथ रिश्ते मजबूत बनाने के अपने इस प्रयास से वह सच्चे प्रेम की एक नई यात्रा का सूत्रपात करने जा रहा है।

## जोगवा

मराठी/116 मिनट/35एमएम/ रंगीन

निर्माता : आई ड्रीम प्रोडक्शन प्रा० लि० निर्देशक: राजीव पाटिल पटकथा: संजय पाटिल छायांकन : संजय जाधव संपादन : राजेश राव संगीत: अजय गोगवाले और अतुल गोगवाले, कलाकार : उपेंद्र लिमये, मुक्ता बर्वे, किशोर कदम, अदिति देशपांडे

16-17 साल की सीधी-सादी लड़की सुली मस्ती और खुशी से अपनी जिंदगी जी रही है। लेकिन बालों में गांठों को लेकर उसके जीवन में अचानक तूफान आ जाता है। इस कारण सुली यलम्मा देवी को समर्पित 'जोगतिन' बन जाती है। अपने मानसिक और भौतिक कष्टों से तंग आकर वह घरवालों की अवहेलना करती हुई देवी की आराधना करने वाली रघु की मंडली में शामिल हो जाती है। मंडली के एक सदस्य अन्नु से सुली की दोस्ती हो जाती है। लेकिन उसके गर्भ ठहर जाने पर अन्नु उससे मुंह मोड़ लेता है। मंडली का एक अन्य जोगता तयप्पा उसे सहारा देता है। तब तयप्पा के साथ मिलकर वह अपनी मंडली बनाती है। वे दोनों शादी करने का फैसला करते हैं। लेकिन उनके संप्रदायों के लोग इसका विरोध करते हैं।



## JOGVA

Marathi/116 min/35mm/Colour

**Producer:** IDream Production Pvt Ltd **Director:** Rajeev Patil **Screenplay:** Sajay Patil **Cinematography:** Sanjay Jadhav **Editing:** Rajesh Rao **Music:** Ajay Gogawle and Atul Gogawle **Cast:** Upendra Limaye, Mukta Barve, Kishore Kadam, Aditi Deshpande

Suli's life takes an unexpected turn, all because of knots (jat) in her hair. It's the reason why Suli has to become a "Jogtin", one who is dedicated to Goddess Yallamma. Suli turns her back on her parents and joins Raghu's troupe, which sings the praise of

the Goddess for a living. Tayappa, who is also a member of the same troupe and made a 'Jogata' at the time of Suli's ceremonial dedication to the Goddess Yallamma, is happy to see Suli in the troupe. Suli gets attracted to a new entrant in the troupe Annu and has an affair with him. But he shirks all responsibility when she becomes pregnant. Suli is devastated. Then Tayappa convinces her that they should form a troupe of their own. Slowly she starts seeing Tayappa in a new light and they hope for a happy married life together. But their sects disapprove of the union.



## लैंड गोल्ड वुमेन

अंग्रेजी और उर्दू/98 मिनट 40  
सैकंड/35एमएम/रंगीन

निर्माता : विवेक बी. अग्रवाल निर्देशन  
और पटकथा : अवंतिका हरि  
छायांकन: डेविड रोम संपादन : श्याम  
सलगांवकर संगीत: अमर मोहिले  
कलाकार : नरिंदर सामरा, नीलम  
परमार, हस्सानी शापी, रिचर्ड केली

बिर्मिंघम में बसा एक ब्रिटिश एशियाई परिवार अपने परंपरागत अतीत और इस्लामवादी वर्तमान के बीच झूल रहा है। 45 साल का नाज़िर इतिहास का प्रोफेसर है जो 1980 के दशक में भारत से ब्रिटेन आ गया था। वह धार्मिक विचारों वाली पत्नी रिज़वाना, 17 साल की बेटी सायरा और 14 साल के बेटे आसिफ के साथ रहता है। सायरा का स्कूल में आखिरी साल है और वह कालेज में पहुंचकर अपने लेखक प्रेमी डेविड के साथ मौज-मस्ती करने के सपने देख रही है। नाज़िर के मन में अपनी बेटी को आगे पढ़ने देने को लेकर दुविधा है। तभी उसका बड़ा भाई रियाज़ भारत से सायरा के लिए रिश्ता लेकर आता है। रियाज़ अपने कौल का पक्का है और उसे अपनी बात का उत्तर 'न' में सुनना गवारा नहीं है।



### LAND GOLD WOMEN

English and Urdu/98 min 40 sec/  
35mm/Colour

**Producer:** Vivek B. Agrawal  
**Direction and Screenplay:**  
Avantika Hari **Editing:** Shyam  
Salgaonkar **Cinematography:**  
David Rom **Music:** Amar Mohile  
**Cast:** Narinder Samra, Neelam  
Parmar, Hassani Shapi, Richard  
Kelley

Set in modern Birmingham, *Land Gold Women* revolves around a small British Asian family caught between their traditional past and the tumultuous, Islamophobic present. Nazir is a 45-year-old professor of history who emigrated from India in the 1980s. He has a conservative and

pious wife Rizwana and two children, Saira, 17 and Asif, 14. He indulges their interests in all things Western but also feels the pull of his roots. Meanwhile, Saira, who has one year to graduate from school, is looking forward to going to the university to study literature and also hoping for more time and space to spend with her writer boyfriend David. But Nazir is conflicted about encouraging his daughter's educational ambitions. Meanwhile, his elder brother Riyaz arrives from India with a marriage proposal for Saira. A man of his word, with great pride in his roots, Riyaz doesn't intend on taking 'no' for an answer.

## लिटल जीजू

अंग्रेजी, गुजराती, हिंदी/101  
मिनट/35एमएम/ रंगीन

**निर्माता :** जिगरी दोस्त प्रोडक्शन्स और स्टुडियो 18 **निर्देशन और पटकथा :** सूनी तारापोरवाला **संपादन :** टी वूडी रिचमैन, क्रिस्टीना बोडेन **छायांकन :** हिम्मान धमीजा **संगीत:** बिक्रम घोष **कलाकार :** बोमन ईरानी, जॉन अब्राहम, इमाद शाह, आयानाह, जहां बाटीवाला

इस फिल्म का सूत्रधार 11 साल का फुटबॉल का दीवाना पारसी बालक खजेरेकजेस है जो फ्रांस के फुटबॉल खिलाड़ी जिनेदिन जिदेन का फैन होने के कारण लिटल जीजू के नाम से मशहूर है। उसका पिता खोदाईनी, जो अपने को पारसी संप्रदाय का रक्षक मानता है, स्वतंत्र विचारधारा वाले अखबार के प्रकाशक प्रेसवाला से भिड़ जाता है जो अपने अखबार में भावी पैगंबर के बारे में आलोचनात्मक लेख प्रकाशित करता है। ये दोनों परिवार अपने मतभेद दूर करके एक हो जाते हैं। लोककथा जैसी उलझी हुई इस फिल्म में हास्य-व्यंग्य का बोलबाला है। फिल्म का मूल स्वर भले ही हल्का-फुल्का है लेकिन इसमें अंधविश्वास पर करारी चोट की गई है और सहनशीलता का संदेश दिया गया है।



## LITTLE ZIZOU

English, Gujarati, Hindi/101 min/  
35mm/Colour

**Producer:** Jigri Dost Productions and Studio 18 **Direction and Screenplay:** Sooni Taraporevala **Editing:** T Woody Richman, Kristina Boden **Cinematography:** Himman Dhamija **Music:** Bickram Ghosh **Cast:** Boman Irani, John Abraham, Imaad Shah, Iyanah and Jahan Bativala

The sutradhar of the film is an eleven-year-old soccer-crazy Parsi boy, Xerxes also known as Little Zizou because of his admiration for French footballer Zinedine Zidane. As Zizou fervently prays for his idol to come to Mumbai,

his father Khodaiji, a self-proclaimed "protector of the faith", battles it out with the free-thinking newspaper publisher Pressvala who writes a scathing critique of the would be prophet. To make matters worse, Zizou's elder, artist brother Art is hopelessly in love with Pressvala's daughter Zenobia and Zizou himself adores the maternal Mrs Pressvala. The film is about how the two battling families finally come to terms. The fable-like film is marked by a characteristic sense of humour, it takes strong potshots at fundamentalism, though the tone remains deceptively light-hearted and the ultimate, subtly articulated message is that of tolerance.

## मोन जई

असमिया / 177 मिनट / 35एमएम / रंगीन

निर्माता : एम. मणिराम, सोबीता चानम, जयंत गोस्वामी निर्देशन और पटकथा: एम.मणिराम छायांकन : सुमन दौवेरा संपादन : गौतम घोष संगीत : जुबीन गर्ग कलाकार : जुबीन गर्ग, निशिता गोस्वामी

फिल्म की कहानी चार ईमानदार, शिक्षित और बेरोजगार युवकों—मानव, तपन, नयन और अकन के आसपास घूमती है। ये चारों दोस्त हैं और अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियां निभाने की इच्छा होते हुए भी निभा नहीं पाते।

एक दिन मानव तपन और अकन को सुझाव देता है कि हमारे सामने रुपये कमाने का एक ही रास्ता बचा है और वह है अपहरण। लेकिन उन्हें ख्याल आता है कि यदि अपहृत व्यक्ति को छोड़ देंगे तो वह पुलिस को उनके बारे में बता देगा और उनके घर वालों की बहुत बदनामी होगी। तो वे क्या करें? वे उसे रिहा कर दें या उसकी हत्या कर दें ?



### MON JAI

Assamese/177 min 16 sec/35mm/ Colour

**Producer:** M. Maniram, Sabita Chanam, Jayanta Goswami  
**Direction and Screenplay:** M. Maniram  
**Cinematography:** Suman Dowerah  
**Editing:** Gautam Ghosh  
**Music:** Zubeen Garg  
**Cast:** Zubeen Garg, Nishita Goswami

The film is a tale of four honest yet disgruntled youth. Manab is the son of a school teacher having grown up on the ideals inculcated by his father. Tapan is an educated youth with two elder brothers and a sister in law. His sister in law treats him very shabbily as he contributes nothing to the

household. Akan is a happy-go-lucky character and lives alone in a rented house. He runs a PCO with Tapan. His house is often the hub of all addas/get-togethers in the mornings, afternoons and evenings. Nayan, though an eternal optimist breaks down at times for not being able to support his parents and two sisters. They dream of being somebody respectful in the society with lots of money.

One day they decide to execute a kidnapping. They also realize that if the victim is released he will reveal their identity to the Police. Society will look down upon them. So what do they do? Release him or kill him?

## मुंबई मेरी जान

हिंदी/144 मिनट/35एमएम/ रंगीन

निर्माता: यूटीवी मोशन पिक्चर्स निर्देशन: निशिकांत कामत पटकथा: योगेश विनायक जोशी और उपेंद्र सिधाये छायांकन : संजय जाधव संपादन : अमित पवार कलाकार : परेश रावल, इरफान खान, आर. माधवन, कें.के. मेनन, सोहा अली खान।

11 जुलाई 2006 को मुंबई की जीवनधारा मानी जाने वाली लोकल ट्रेनों में बम विस्फोट हुए। एक इंजीनियर है जिसकी आमदनी अच्छी है लेकिन उसने लोकल से आना-जाना नहीं छोड़ा। एक बरोजगार युवक मुसलमानों से नफरत करता है और इन धमाकों के बाद यह नफरत और गहरी हो जाती है। कुछ दिनों में रिटायर हो जाने वाला एक पुलिसकर्मी है जिसे यह मलाल है कि वह जिंदगी में कुछ खास नहीं कर पाया और एक युवा पुलिसकर्मी को इस बात का रंज है कि उसकी भी हालत ऐसी ही रहने वाली है। एक गरीब काफी विक्रंता है जिसे बड़े-बड़े मालों में बिकने वाले परफ्यूम अच्छे लगते हैं लेकिन वह धमाके का डर फैलाकर उस समाज से बदला लेता है जिसने उसे परफ्यूम लेने लायक नहीं बनने दिया। एक टी वी पत्रकार है जिसके लिए तब तक सबसे महत्वपूर्ण चीज खबर और बाइट बनी रहती है जब तक वह स्वयं एक खबर नहीं बन जाती।



## MUMBAI MERI JAAN

Hindi/144 min/35mm/Colour

**Producer:** UTV Motion Pictures  
**Direction:** Nishikant Kamath  
**Screenplay:** Yogesh Vinayak Joshi and Upendra Sidhaye  
**Cinematography:** Sanjay Jadhav  
**Editing:** Amit Powar **Cast:** Paresh Rawal, Irrfan Khan, R. Madhavan, Kay Kay Menon, Soha Ali Khan

On July 11, 2006 Mumbai's lifeline, the local, was struck with a series of bomb blasts. The narrative takes us randomly through various lives in the aftermath of the Mumbai train bomb blasts. Their tragedies, dilemmas, frustrations, fears and suspicions create an immediate empathy. There is techie who is

earning well but still commutes by the local. Narrowly escaping the blast, he is left questioning his ideals. An unemployed youth harbours a deep resentment against Muslims, which only worsens after the tragedy. A soon-to-retire policeman realises he hasn't accomplished much in life and a young cop is deeply enraged at the thought that he might end up quite like his senior. A poor coffee seller, who loves the perfumes in the fancy mall hits back at a society that has kept him on the margins by using the bomb scare. Then there is a TV journo for whom all that matters is a story and some bytes, till she herself is reduced to one.

## नान कडावुल

तमिल / 130 मिनट / 35एमएम / रंगीन

**निर्माता :** के.एस.श्रीनिवासन **निर्देशन**  
**और पटकथा :** बाला **छायांकन :** आर्थर  
**विल्सन संपादन :** सुरेश अर्स **संगीत:**  
**इलयाराजा कलाकार :** आर्या, पूजा,  
राजेंद्रन, कीर्तना **मुरुगेश्वरी, कार्ति**  
**मधु बाला**

एक ज्योतिषी के कहने पर पिता मामाशिवयम ने रुद्रन को 14 साल पहले गंगई नदी के तट पर छोड़ दिया था। तांडवन नाम का व्यक्ति भिखारियों का रैकेट चलाता है और मुरुगन तथा टिम्बले उसके गुर्गे हैं। एक दिन एक नेत्रहीन लड़की अम्सावल्ली मुरुगन की पकड़ में आ जाती है और पहाड़ी के मंदिर में भिखारिन बन जाती है। केरल में भिखारियों का ठेकेदार नायर भिखारियों को खरीद लेता है और अम्सावल्ली को भी साथ ले जाना चाहता है। वह रुद्रन से मदद मांगती है और वह नायर का कत्ल कर देता है जिससे उसे जेल हो जाती है। अम्सावल्ली अनाथालय में रहने लगती है। लेकिन तांडवन उसे ढूँढ लेता है और कुरुप बना डालता है। तांडवन रुद्रन के जेल से रिहा होने पर उसे भी मार डालने की कोशिश करता है लेकिन रुद्रन उसकी हत्या कर देता है और काशी में गुरुजी के पास चला जाता है।



## NAAN KADAVUL

*Tamil/130 min/35mm/Colour*

**Producer:** K.S. Srinivasan  
**Direction and Screenplay:** Bala  
**Cinematography:** Arthur Wilson  
**Editing:** Suresh Urs **Music:**  
Ilayaraja **Cast:** Arya, Pooja,  
Rajendran, Keerthana  
Murugeswari, Karthi Madhu  
Bala

Rudhran was left on the banks of Gangai about 14 years ago by Mamasivayam on the ill advice of an astrologer. On the instructions of Guru, he was brought back to the ailing mother and the wife of Mamasivayam. Rudhran stays away from the family in a hill station with other

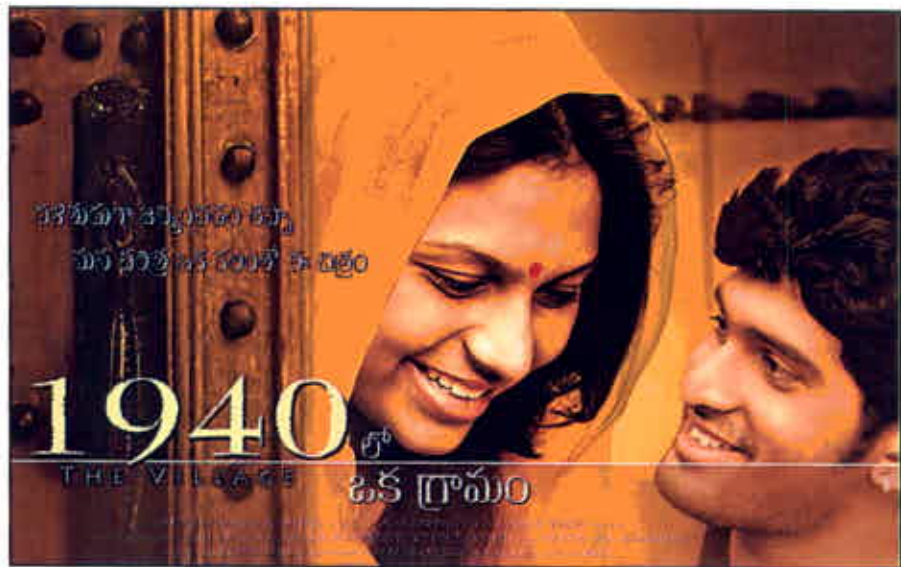
austere people. Thandavan runs a begging racket and has Murugan and Timble as his henchmen. One day a blind girl Amsavalli comes under Murugan's control and becomes a beggar in the hill temple. She becomes Rudhran's devotee. Thandavan's counterpart in Kerala, Nayar purchases beggars and wants to procure Amsavalli. She seeks Rudhran's help and he kills Nayar and ends up in the jail. Amsavalli goes on to stay in an orphanage but Thandavan seeks her out and disfigures her face. He also attempts to kill Rudhran when he gets released but Rudhran kills him and then joins his Guruji in Kasi.

## 1940 लूकाग्रामम

तेलुगु/155 मिनट/35एमएम/ रंगीन

निर्माता : श्री लक्ष्मी नरसिम्हा सिनेमा  
निर्देशन और पटकथा : नरसिम्हा नंदी  
कलाकार : श्री राम्या, मुक्कुराजु

अग्रहारम में दो समुदाय— ब्राह्मण और दलित रहते हैं। एक ब्राह्मण लड़की से प्रेम करने के कारण एक दलित युवक का बधियाकरण कर दिया जाता है। एक अमीर वैदिक विद्वान जगन्नाथ एक युवा लड़की सुशीला पर मोहित हो जाता है और उससे शादी करना चाहता है। उसके बदले वह परिवार का कर्जा माफ़ कर देता है। किंतु, दीक्षित नपुंसक है। सूरी एक दलित लड़का जो यह जानकर कि दीक्षित उसे अपना शिष्य नहीं बनाएगा, दूर से ही उनकी बातें सुन-सुन कर वैदिक ज्ञान प्राप्त कर लेता है। सूरी के ज्ञान का सुशीला पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इसके बाद दोनों के बीच लगाव पैदा होने लगा है। जब दीक्षित को उनके संबंधों की भनक लगती है तो वह सूरी को घर से चले जाने को कहता है। गांव की पंचायत सूरी और सुशीला को सज़ा सुनाती है और दोनों को बहुत कष्ट उठाने पड़ते हैं। इस बीच दीक्षित की मृत्यु हो जाती है और वह अपनी जायदाद सूरी और सुशीला के बेटे के नाम कर जाता है। वह यह भी वसीयत करता है कि वही लड़का उसका अंतिम संस्कार करे।



## 1940 LOOKAGRAMAM

Telugu/155 min/35mm/Colour

**Producer:** Sri Lakshmi Narasimha Cinema  
**Direction and Screenplay:** Narasimha Nandi  
**Cinematography:** Editing:  
**Music:** Cast: Sri Ramya, Mukkuraju

The film is set in the Andhra village Agraharam in 1940. There are mainly two sets of people here—brahmin and dalits. A dalit young man is castrated by the high castes for loving their girl. Rich veda scholar Jagannath Dixit sees a young woman girl Susheela and plans to marry her. In return he waives off the family's debts. However, Dixit is impotent and Susheela has to remain

dissatisfied in her marriage with him. Suri is a dalit boy who learns the Vedas by listening to Dixit from a distance considering he is not willing to have him for a student. One day while working in Dixit's house he points out a mistake in Dixit's recitation. Suri's knowledge impresses Susheela. Soon an intimate relationship grows between the two. Dixit asks Susheela to leave when he hears of the affair. The panchayat gives strict punishment to The Suri and Susheela and they have to face many hardships together. Meanwhile, Dixit dies and leaves all his property to the couple's son. He also wants their son to perform his last rites.

## ओए लक्की ! लक्की ओए !

हिंदी/127मिनट/35एमएम/ रंगीन

निर्माता : यूटीवी मोशन पिक्चर्स  
निर्देशक : दिवाकर बैनर्जी पटकथा :  
दिवाकर बैनर्जी और उर्मि जुवेकर  
संपादन : श्यामल कर्माकर और नम्रता  
राव छायांकन : कार्तिक विजय संगीत:  
स्नेहा खनवालकर; कलाकार : अभय  
देओल, नीतू चंद्रा, परेश रावल

पश्चिमी दिल्ली की एक स्लम बस्ती में रहने वाला 15 साल का सिक्ख लड़का लक्की एक दिन देश का सबसे कुख्यात चोर बन जाता है जिसके पास चोरी के लाखों रुपये, असंख्य कारें, औरतें और ऐशा-आराम का पूरा सामान व चेले चपाटे हैं। लक्की की कारगुजारियों के जरिए उसका यह नजरिया दिखाया गया है कि जो तुम्हारे पास नहीं है उसे चोरी करके हासिल करो। अपने बचपन के दोस्त बंगाली के साथ मिलकर वह पक्का चोर बन जाता है। लक्की चोरी की राह पर आगे बढ़ते हुए सारी हदें पार कर जाता है और उसकी वासनाएं रुपये-पैसे तक सीमित नहीं रहतीं। अब उसके मन में समाज में सम्मानजनक स्थान बनाने और चोरी व बदमाशी का धंधा छोड़े बिना एक शरीफ आदमी की छवि बनाने की इच्छा पैदा होती है।



## OYE LUCKY! LUCKY OYE!

Hindi/127 min/35mm/Colour

**Producer:** UTV Motion Pictures  
**Direction:** Dibakar Banerjee  
**Screenplay:** Dibakar Banerjee and  
Urmi Juvekar **Editing:** Shyamal  
Karmakar and Namrata Rao  
**Cinematography:** Kartik Vijay  
**Music:** Sneha Khanwalkar  
**Cast:** Abhay Deol, Neetu  
Chandra, Paresh Rawal

From the inner city ghetto of West Delhi, Lucky, a gawky, 15-year-old, lower middle class, Sikh kid, rises to become one of the most wanted master thieves of

India with tens of millions worth of loot, a glamorous lifestyle, cars, women and a fan following. Over his adventures we see Lucky form his worldview and that is — if you don't have it, steal it. Together with his childhood friend Bangali he graduates to becoming a full-fledged thief. Lucky's journey sees him develop into a flamboyant playboy who now wants more than just the riches. Now he needs the respectability and the social standing of a city gentleman without sacrificing that reckless freedom he cherishes, the freedom to steal.

## रोडसाइड रोमियो

हिंदी/90 मिनट/35एमएम/ रंगीन

निर्माता : आदित्य चोपड़ा निर्देशक :  
जुगल हंसराज कार्टूनकार : टाटा  
एलेक्सी लि०

फिल्म में साैफ अली खान एक कुत्ते रोमियो को आवाज़ देता है। रोमियो एक विशाल मकान में रहता है, गाड़ियों में घूमता है और पार्टियों में मजे लेता है। अचानक उसके मालिक को कहीं बाहर जाना पड़ता है और वह कुत्ते को मुम्बई की गलियों में भटकने को छोड़ देता है। रोमियो को नई तरह की परिस्थितियों से गुजरना पड़ता है। उसका सामना आवारा कुत्तों से होता है जो उसे खदेड़ देते हैं। लेकिन जल्दी ही वह उनके दिल में जगह बना लेता है और उनका दोस्त बन जाता है। उसे क्लब में नाचने वाली लैला (स्वर: करीना कपूर) से प्रेम हो जाता है। एक बदमाश डॉन चार्ली अन्ना (स्वर: जावेद जाफरी) से उसका झगड़ा हो जाता है। चार्ली अन्ना फिल्म का खलनायक है जो लैला को चाहता है। बॉलीवुड और डिस्नी के सहयोग से बनी इस पहली बड़ी कार्टून फिल्म में उच्च टेक्नोलोजी अपनाई गई है और कहानी का चित्रण भी बहुत सुंदर है।



## ROADSIDE ROMEO

Hindi/90 min/35mm/Colour

**Producer:** Aditya Chopra  
**Direction:** Jugal Hansraj  
**Animator:** Tata Elxsi Ltd

Saif Ali Khan is the voice of Romeo, a dog who is living it up. He lives in a mansion, is driven around in cars and parties with chicks. Until one day the family who owns him decides to move and abandons him on the mean streets of Mumbai. He is faced with situations he has never been in before. He encounters four

strays who scare the daylight out of him. But he soon smooth talks his way into their hearts and becomes their friend. He falls in love with the club dancer with big eyelashes, Laila (voice of Kareena Kapoor) and has to battle it out with the dreaded don Charlie Anna (voice of Jaaved Jaafri) who villain of the piece who also fancies Laila like Romeo. The first major animation film to come out of a Bollywood-Disney collaboration shows off the best of technology, is well-mounted and nicely detailed.



## रॉक ऑन

हिंदी/145 मिनट/35एमएम/ रंगीन

**निर्माता :** फरहान अख्तर और रितेश सिधवानी **निर्देशक :** अभिषेक कपूर और पुबाली चौधरी **छायांकन :** जैसन वेस्ट **संपादन :** दीपा भाटिया **संगीत:** शंकर एहसान लॉय **कलाकार :** फरहान अख्तर, प्राची देसाई, अर्जुन रामपाल, शहाना गोस्वामी

आदित्य श्राफ किसी रॉक बैंड में गायक बनने के लिए घर का ऐशो-आराम छोड़ देता है। जोए मैसरेनस एक आदर्शवादी युवा है। वह कम बोलता है और उसका गिटार ही उसकी अभिव्यक्ति का माध्यम है। अपनी प्रेमिका और रॉक बैंड के प्रति वफादारी उसे हीरो बना देती है। कल्पेश देसाई या केडी अपने को किल्लर ड्रमर कहलाना पसंद करता है। ऐसा लगता है कि जैसे केडी ड्रम बजाते हुए अपने बाप से बदला ले रहा है। चुपचाप रहने वाला राब नैसी दूसरों के झगड़े निपटाने में आगे रहता है। वह की बोर्ड को उंगलियों से सहलाकर आदित्य के गीतों में लय भर देता है। चार युवाओं का यह बैंड देश का अनूठा रॉक बैंड बन जाता है। बैंड के बिखरने के दस साल बाद उसे फिर से खड़ा करने की कोशिशें होती हैं।



## ROCK ON!!

Hindi/145 min/35mm/Colour

**Producer:** Farhan Akhtar and Ritesh Sidhwani **Direction:** Abhishek Kapoor **Screenplay:** Abhishek Kapoor and Pubali Chaudhari **Cinematography:** Jason West **Editing:** Deepa Bhatia **Music:** Shankar Ehsaan Loy **Cast:** Farhan Akhtar, Prachi Desai, Arjun Rampal, Shahana Goswami

The film is about 4 young boys—Aditya Shroff, Joe Masceranous, Kalpesh Desai and Rob Nancy who put together the greatest rock band this country had ever seen

but never made it big. Ten years hence fate conspires to bring them together again and sets them on a journey back to where they left off. Rock On is a film on rock music but as much about friendships lost and found. The film essentially focuses on the human angle—how a rock group wins a competition, signs a deal and then falls apart due to ego hassles, only to reunite ten years later for a last concert together. The characters, their relationships, the bonding and companionship—all of it the audience can identify with and feel for.

## शोब चरित्रो काल्पोनिक

बांगला/101 मिनट 34 सैकंड/  
35एमएम/ रंगीन

निर्माता : रिलायंस बिग पिक्चर्स निर्देशन  
और पटकथा: रितुपर्णो घोष संपादन:  
अर्घ्यकमल मित्र छायांकन : सौमिक  
हालदार कलाकार : प्रसेनजित चटर्जी,  
बिपाशा बसु, जीशु सेनगुप्ता

फिल्म एक महिला की अपनी शादी की स्मृतियों तथा अपने स्वर्गीय कवि पति इंद्रनील के बारे में परस्पर विरोधी भावनाओं को लेकर आगे बढ़ती है। जब प्रकाशक राधिका से अपने मृत पति की पुस्तक पूरी करने का अनुरोध करते हैं तो उसे उनकी रचनाएं पढ़नी पड़ती हैं। उसे लगता है कि अपनी रचनाओं में इंद्रनील मामूली सी घटनाओं को भी रोमांटिक शैली में प्रस्तुत करता है जबकि वास्तविक जीवन में वह उसके प्रति उदासीन और शुष्क था, अपनी वैवाहिक जिम्मेदारियों के प्रति पूरी तरह लापरवाह था और बूढ़ी नौकरानी तक से निर्दयता से पेश आता था। अपने पति का ऐसा दोहरा रूप देखकर वह स्तब्ध रह गई। कोई कवि कैसे अपनी रोजमर्रा की वास्तविकताओं से उदासीन रहकर उन्हें अपनी कला में इतनी संवेदना और भावुकता के साथ प्रस्तुत कर सकता है? क्या कला सचमुच कृत्रिम है ?



## SHOB CHARITRO KALPONIK

*Bengali/101 min 34 min/35mm/  
Colour*

**Producer:** Reliance Big Pictures  
**Direction and Screenplay:**  
Rituparno Ghosh **Editing:**  
Arghyakamal Mitra  
**Cinematography:** Saumik Halder  
**Cast:** Prosenjit Chatterjee,  
Bipasha Basu, Jishu Sengupta

The narrative follows a woman's recollection of her marriage and her contradictory feelings towards her late poet husband

Indraneel. When publishers ask Radhika to complete his works, she is compelled to study them. She realises how much he romanticised their mundane, everyday life. Yet, in reality, he was often insensitive towards her, negligent in his marital duties and apathetic towards their elderly maid. She wonders about his dual identity: how can a poet be unaware of his day-to-day realities, yet highlight moments from them in his art? Is art essentially an artifice?

## थैंक्स मां

हिंदी / 123 मिनट / 35एमएम / रंगीन

**निर्माता :** क्वांटम फिल्मस लि0 (गगन खेमका) **निर्देशन:** इरफान कमाल  
**पटकथा :** इरफान कमाल और विशाल विजय कुमार **छायांकन :** अजयन विसेंट  
**संपादन :** फिरोज खान **संगीत:** रंजीत बारोट **कलाकार :** शम्स पटेल, सलमान, फरयाज़, जाफर, अल्मस

12 साल का एक बेसहारा बालक म्युनिसिपैलिटी बाल सुधार गृह से निकल भागता है और रास्ते पर पड़े दो दिन के एक बच्चे को एक खूंखार कुत्ते से बचा लेता है। म्युनिसिपैलिटी सबसे पूछता है किंतु कोई भी उस बच्चे को अपना नहीं बताता। वह उस बच्चे की मां को खोजने का फैसला करता है। अपने चार अनाथ दोस्तों सोडा, सुरसुरी, कटिंग और देड़शाना को साथ लेकर वह मुम्बई शहर की खाक छानता है लेकिन हर किसी से उसे विरोध ही मिलता है। अपने पक्के इरादे के चलते म्युनिसिपैलिटी को आखिर सफलता मिल ही जाती है। वह बच्चे की मां को ढूँढ निकालता है लेकिन उसके बाद उसके मन में बसी मां की वो निर्मल और स्नेहमयी छवि तिरोहित हो जाती है जिसे वह अपने सपनों में देखा करता था।



## THANKS MAA

Hindi/123 min/35mm/Colour

**Producer:** Quantum Films Ltd (Gagan Khemka) **Director:** Irfan Kamal **Screenplay:** Irfan Kamal and Vishal Vijay Kumar **Cinematography:** Ajayan Vincent **Editing:** Firoz Khan **Music:** Ranjit Barot **Cast:** Shams Patel, Salman, Fayyaz, Jaffer, Almas

A 12 year old street kid named Municipality, while on the run from the reformatory, finds and saves a two day old abandoned baby from becoming the prey to a ferocious street dog. Failing to find any takers among the people whom he deemed responsible and respectable, Municipality takes up the onus of finding the

mother of that abandoned baby himself. He struggles in the urban jungle of Mumbai with just four of his friends from the street, Soda, Sursuri, Cutting, and Dhedshana on his side and seemingly the whole world against him. Municipality's rock steady determination ultimately helps him emerge a winner. He is able to reach that baby's mother but in the bargain he loses his most precious possession, ie, the flawless and god like image of a mother he used to see in dreams. He also loses the hope that his own mother will come searching for him at the hospital where he was found abandoned 12 years ago.

## थिरक्कदा

मलयालम/135 मिनट/रंगीन

**निर्माता :** कैपीटल थिएटर और वर्णचित्र  
**बिग स्क्रीन निर्देशन और पटकथा :**  
रंजित छायांकन : एम.जे राधाकृष्णन  
**संपादन :** विजय शंकर **संगीत:** शरत  
**कलाकार :** अनूप मेनन, प्रियमणि, रंजित

अकबर अहमद युवा फिल्म निर्माता है जो सिनेमा को एक व्यवसाय नहीं बल्कि जूनून मानता है। उसकी पहली फिल्म पर हॉलीवुड की एक फिल्म की नकल करने का आरोप लगता है इसलिए वह अपनी दूसरी फिल्म नए ढंग से बनाना चाहता है। वह अपनी फिल्म पुरानी अभिनेत्री मालविका की जीवनी पर बनाने की योजना बनाना है जो अब गुमनामी का जीवन जी रही है। अकबर अपनी खोज में सबसे पहले उस समय के लोकप्रिय अभिनेता अजयचंद्रन से मिलता है। वह बताता है कि किस तरह उनके और मालविका के बीच मतभेदों के कारण वे अलग हो गए थे। बाद में पता चलता है कि मालविका किसी आश्रम में रह रही है। अकबर अजयचंद्रन से मिलकर दोनों के बीच मुलाकात कराने का फैसला करता है ताकि उनके वो मतभेद दूर हो जाएं। यह दोनों प्रेमियों के बीच अंतिम मुलाकात हो सकती है।



## THIRAKKADHA

Malayalam/135 min/Colour

**Producer:** Capitol Theatre and Varnachithra Big Screen **Direction and Screenplay:** Ranjith **Cinematography:** M.J. Radhakrishnan **Editing:** Vijay Shanker **Music:** Sharreth **Cast:** Anup Menon, Priyamani, Ranjith

Akbar Ahmed is a young, rebellious filmmaker for whom cinema is not a job but a passion. His first film is alleged to have been copied from a Hollywood film so he decides to take a new turn with his second film. He decides to base it on the life of

yesteryear actress Malavika whose present whereabouts are not known. How can an artiste disappear? Where could they go? Akbar starts on his search which leads him to Ajayachandran, the reigning star. The film dwells on how differences between him and Malavika led to a break up and affected their careers. Malavika is eventually traced to a forlorn asylum. Akbar decides to approach Ajayachandran for a meeting between the two to narrow the differences which marred their lives. The meeting could be the last and final one for the lovers.

## वारणम आयिरम

तमिल/155 मिनट/रंगीन

निर्माता : आस्कर फिल्मस प्रा० लि०  
निर्देशन और पटकथा : गौतम वासुदेव  
मेनन छायांकन : आर.रत्नावेलु संपादन:  
एल एंथनी गॉसाल्वेज़ संगीत: हैरिस  
जयराज कलाकार : सूर्या, दिव्या,  
स्पंतन, पृथ्वीराज, समीरा रेड्डी

मेजर के. सूरिया जब घने जंगलों में आतंकवादियों से जूझ रहा होता है तो उसे अपने पिता की मौत की खबर मिलती है। यहीं से शुरू होता है उसके जीवन के विभिन्न पड़ावों की स्मृतियों का सिलसिला। पिता की मौत की खबर उसे बाप-बेटे के रिश्तों की यादों के गलियारे में ले जाती है क्योंकि बेटे ने अपने जीवन को पिता द्वारा कायम की गई मिसाल के आधार पर ही आगे बढ़ाया है। वह अपनी प्रेम यात्रा पर चेन्नई से कैलीफोर्निया जाता है जहां कुछ महीने पहले एक ट्रेन में मिली लड़की से अपने प्रेम को अभिव्यक्त करता है। लड़की अपनी नौकरी के सिलसिले में ओकलाहोम चली जाती है जहां वह बम विस्फोट की शिकार हो जाती है। इससे मेजर सूरिया हताशा, क्रोध, कटुता और अवसाद में डूब जाता है। अपने पिता और परिवार का सहारा पाकर वह फिर से जिंदगी शुरू करता है और अपने जीवन में आए खालीपन को भरने की कोशिश करता है। वह भारतीय सेना में कमांडो बन जाता है।



## VERANAM AIRAM

Tamil/155 min/Colour

**Producer:** Aascar Film Pvt Ltd  
**Direction and Screenplay:**  
Gautham Vasudeva Menon  
**Cinematography:** R. Ratnavelu  
**Editing:** L. Anthony Gonsalvez  
**Music:** Harris Jeyaraj **Cast:** Surya,  
Divya Spanthana, Prithviraj,  
Sameera Reddy

Major K Suriya, battling terrorists in dense forests goes down the memory lane on hearing of his father's demise. What unfolds is a poignant memoir of the father-son relationship. The son learns about life and love by the example his father sets. He undertakes a journey for love, from Chennai to California, to admit his love to a

girl he had met a few months ago in a train. The girl travels to Oklahoma on work and falls victim to a bomb blast. What follows is anger, frustration, bitterness and depression. With the help of his father and family Suriya tries to move on in life and seek ways to avenge his loss. He becomes a commando in the Indian army. Is the memory of a lost love enough to live the rest of the life? Does the graceful acceptance of death help in living on? Can avenging a loss be the sole purpose of one's life? And will love beckon Suriya again? An inspiring tale of a young man, who takes challenges head on, and of the loving father who moulds him.

## विमुक्ति

कन्नड/130 मिनट/रंगीन

निर्माता : नव्यचित्र क्रिएशन्स निर्देशन  
और पटकथा : पी.शेषाद्री छायांकन :  
एस रामचंद्र इथाल संपादन : केंपराज  
बी एस संगीत: प्रवीण गोडखिंदी  
कलाकार : रामकृष्ण, भावना, नागरकर,  
होदा बलौटी

बहुत से रूढ़िवादी हिंदुओं का विश्वास है कि वाराणसी में मरने और वहां गंगा के तट पर दाह संस्कार से मुक्ति मिलती है। इसके लिए मुक्ति भवन एक विशेष स्थान है जहां मृत्यु की कामना करते लोग ठहर सकते हैं।

माधवी केशवराव की इकलौती बेटा है। बचपन में ही मां के प्यार से वंचित हो जाने के कारण माधवी को अपने पिता से विचित्र प्रकार का गहरा लगाव हो जाता है। यह लगाव रोग उसके वैवाहिक जीवन में अड़चनें पैदा करता है। केशव राव के पास चित्रकला सीखने के लिए एक विदेशी लड़की नावा के आ जाने पर माधवी की मानसिक दशा और खराब हो जाती है। इस झंझट से तंग आकर केशव राव बिना किसी को बताए घर से निकल जाता है। किसी परिचित की मदद से माधवी का मनोवैज्ञानिक चिकित्सा के फलस्वरूप माधवी ठीक हो जाती है।

माधवी काशी में अपने पिता से मिलने मुक्ति भवन पहुंचती है। जहां उसका जीवनभर का भ्रम टूट जाता है।



## VIMUKTHI

Kannada/130 min/35mm/Colour

**Producer:** Navyachitra Creations  
**Direction and Screenplay:** P. Sheshadri  
**Cinematography:** S. Ramachandra Ithal  
**Editing:** Kemparaj BS  
**Music:** Praveen Godkhindi  
**Cast:** Ramakrishna, Bhavana, Nagarkar, Hoda Balouti

Madhavi is the only daughter of Keshava Rao, an exponent of the traditional Mysore paintings. Denied of motherly love very early in life, Madhavi develops a strange obsessive feeling for her father during her formative years. Well-known psychoanalyst Sigmund Freud defines such a state of mind as Electra complex, a daughter's unresolved attraction

towards her father.

This obsession has its problematic reflections in her married life. The arrival of Nava, a foreign girl, to learn painting from Keshava Rao creates even more problems. Disturbed by the turn of events, Keshava Rao leaves home for good. With the intervention of the family friend, a doctor, Madhavi manages to get over her Electra complex.

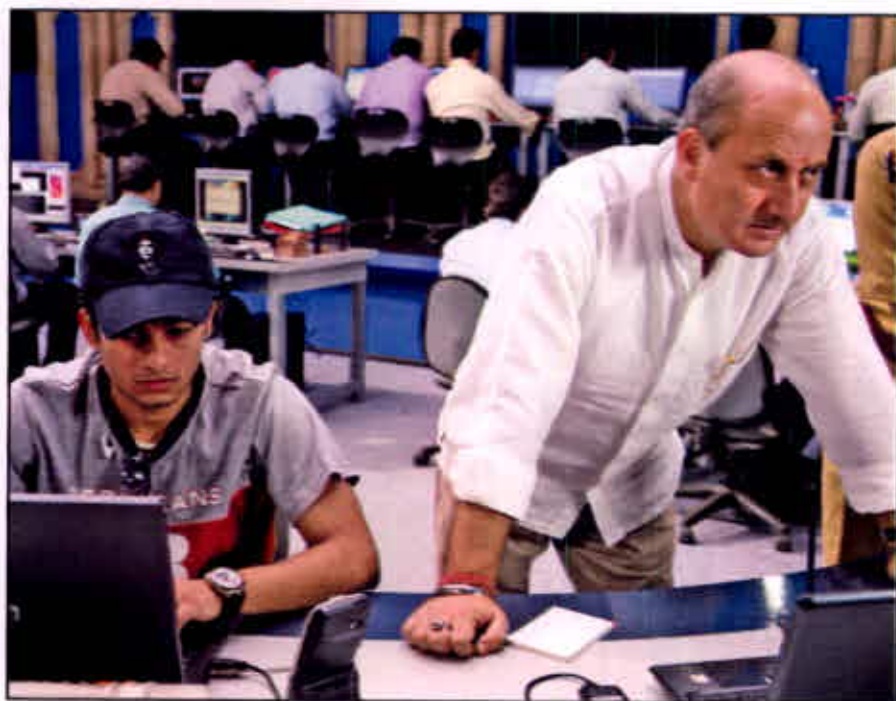
A few years later, she gets a hint that her father lives in distant Kashi and goes searching for him. In this process, she is exposed to the eerie life of Kashi, the mysterious happenings around people longing for death in Mukthibhavan.

## ए वेडनेसडे

हिंदी/102 मिनट/रंगीन

निर्माता: यूटीवी मोशन पिक्चर्स निर्देशन  
और पटकथा : नीरज पांडेय  
छायांकन: फुवाद खान संपादन :  
नारायण सिंह संगीत : संजय चौधरी  
कलाकार : नसीरुद्दीन शाह, अनुपम  
खेर

यह रोचक और सुगठित रोमांचक फिल्म है जो दर्शकों को बांधे रखती है। इसका घटना केंद्र देश की आर्थिक राजधानी मुंबई है। इसमें एक बुधवार को दोपहर 2 बजे से शाम 6 बजे के समय के बीच घटी ऐसी घटनाओं का चित्रण है जिनका कहीं कोई रिकॉर्ड तो नहीं है लेकिन उनसे जुड़े लोगों के जीवन पर उनका गहरा असर पड़ता है। फिल्म एक तथाकथित आतंकवादी पर केंद्रित है जो व्यंग्यकार लक्ष्मण का प्रसिद्ध पात्र आम आदमी भी हो सकता है। वह निश्चिंत होकर सैंडविच खाता है, पत्नी के लिए टमाटर खरीदता है और यह भी दावा करता है कि उसने मुंबई के कुछ स्थानों पर बम रखे हैं। पुलिस को बहुत कम समय दिया गया है और उसी के भीतर उसे तथाकथित आतंकवादी को पकड़ने की सारी तैयारी करनी है। फिल्म शहरी मध्यवर्ग के मन के भीतर पैठ चुकी हिंसा और हताशा पर बहुत गहरी और सशक्त टिप्पणी है।



## A WEDNESDAY

Hindi/102 min/Colour

**Producer:** UTV Motion Pictures  
**Direction and Screenplay:** Neeraj Pandey  
**Editing:** Narayan Singh  
**Cinematography:** Fuwad Khan  
**Music:** Sanjoy Chowdhury  
**Cast:** Naseeruddin Shah, Anupam Kher

The film is a gripping, terse and well-crafted thriller with a twist that throws you off kilter. The setting is Mumbai, the financial capital of India. It tells of certain events that unfold between 2 and 6pm on a Wednesday, events

which do not exist in any records but deeply affected the lives of those involved. The film is all about a terrorist who could well be Laxman's common man. He eats regular sandwiches, shops for tomatoes for his wife and also claims to have planted bombs at various locations in Mumbai. The police has to get its act together to nab him in the few hours they have in hand. The film is a powerful articulation of the frustration and violence that have become deep-seated in the urban, middle-class psyche.

## यारवंग

कोकबोरोक/95 मिनट/रंगीन

निर्माता : संपारी पिक्चर्स निर्देशन

और पटकथा : जोसेफ पुलिंथनाथ

छायांकन : कन्नन कार्तिक 'सृपदमन'

संपादन : शशि मेनन संगीत : विकाश

राय देवबर्मा कलाकार : मीना देवबर्मा,

निर्मल जमातिया

त्रिपुरा के एक गांव बोलोंगतावसा के लोगों के लिए अपना गांव छोड़ने की नौबत आ जाती है क्योंकि राइमा और साइमा नदियों पर बांध के निर्माण के कारण उनका गांव डूबने वाला है। कमाली और उसके मंगेतर वाखीराई के लिए यह विशेष रूप से कष्टकर है क्योंकि उनकी शादी होने वाली है। लेकिन सरकारी अमले के लिए ऐसी बातें बेमानी हैं और वे गांव खाली करा देते हैं। गांव से उजड़ कर वे इधर-उधर चले जाते हैं। करमाती और वाखीराई के परिवार अलग-अलग जगहों पर जा बसते हैं और नया जीवन शुरू करते हैं। करमाती की कहीं और शादी हो जाती है। कुछ महीने बाद एक दिन उसे पता चलता है कि वाखीराई वहां आया है तो अपने पति और पुराने मंगेतर को साथ-साथ पाकर उसके लिए अजीब सी स्थिति बन आती है। करमाती को नए सिरे से चुनाव करना होता है और वह उसके परिणाम भुगतने को भी तैयार है।



## YARWNG

Kokborok/95 min 4 sec/35mm/Colour

**Producer:** Sampari Pictures

**Direction and Screenplay:** Joseph

Pulinthanath **Cinematography:**

Kannan Karthika "Sreepadmam"

**Editing:** Sasi Menon **Music:**

Bikash Roy Debbarma **Cast:**

Meera Debbarma, Nirmal Jamatia

The inhabitants of Bolongbwsa, a hamlet in Tripura, must leave their village because a dam on twin rivers, Raima and Saima, is nearing completion and they have been warned that their village would be submerged. It's

particularly hard for young Karmati and her fiancé Wakhirai who are about to marry. But such concerns don't interest the authorities and they evict the rural folks. Flushed out of their homes they disperse in different directions. The families of Karmati and Wakhirai too go their separate ways and settle down to new ways of living. Months later, Karmati, now married, comes to know that Wakhirai is round the corner. It is a trying situation for the threesome. Karmati has to make a choice and decides to follow its consequences.



सारांश गैर फीचर फिल्म

---

**Synoposes Non-Feature Films**



## ए एफ एस पी ए –1958

मणिपुरी/75 मिनट/वीडियो/रंगीन

निर्माता : बाचस्पतिमायुम सुंजु निर्देशन  
और पटकथा: हाओबन पबन कुमार  
छायांकन : साइखोम रतन संपादन :  
शंख

मणिपुर देश का धुर पूर्वी राज्य है जिसकी सीमा म्यांमार से लगती है। भारत में विलय से पहले यह एक स्वतंत्र देश था और यहां की आबादी के एक बड़े हिस्से ने इसके विलय को 'गैर-कानूनी और अनुचित' कहकर इसका विरोध किया था। इस अलगाववादी आंदोलन को दबाने के लिए सशस्त्र सेना विशेष अधिकार कानून (ए.एफ.एस.पी.ए) 1958 बनाया गया। इस कानून से सशस्त्र बलों को कई विशेष शक्तियां मिल गई हैं और ऐसे आरोप हैं कि सशस्त्र बल इस कानून की आड़ में संवैधानिक प्रक्रियाओं, जीवन के अधिकार की गारंटी और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का उल्लंघन करते रहे हैं। यहां तक कि उसमें हत्या एवं बलात्कार भी शामिल हैं।



### AFSPA 1958

*Manipuri/75 min/Video/Colour*

**Producer:** Bachaspatimayum  
**Sunzu Direction and Screenplay:**  
Haobam Paban Kumar  
**Cinematography:** Saikhom Ratan  
**Editing:** Sankha

Manipur is the easternmost Indian state bordering Myanmar. It was an independent country before its merger with India and a large section of population resisted the merger calling it "illegal and illegitimate annexation". The Armed Forces Special Power Act, 1958 (AFSPA) is one of the acts imposed in Manipur to curb separatist movement. It gives extra power to the forces and there have been

allegations that the armed forces operating under the act have regularly flouted constitutional procedures that guarantee the right to life and personal liberty. Manorama Devi, a separatist suspect was picked up by the forces from her home on July 11, 2004. Her body was later found on a hillock under suspicious circumstances. People believe that she was raped and shot. From then on people have started holding protests against the excesses of the forces and the AFSPA. The film is a diary of events, from the day Manorama died till a youth immolated himself as a sign of protest against the AFSPA.

## अप्पुविन नायगन-स्पॉट्टी (माई हीरो)

तमिल / 18मिनट / 35एमएम / रंगीन

निर्माता: ए.वी. अनूप निर्देशक:

माधवन पटकथा: इंदिरा पार्थसारथी

संपादन: कवि विश्वनाथन छायांकन:

राजशेखर

फ़िल्म में एक बच्ची अपु उसके खिलौना कुत्ते स्पाटी और उसके दादा के संबंधों का चित्रण है। अपु अपने खिलौना कुत्ते से बेहद प्यार करती है और अपने दिल की सारी बातें उसे बताती हैं। एक दिन वह स्कूल जाते हुए खिलौना अपने दादा के पास छोड़ जाती है। दादा से खिलौना गुम हो जाता है और वह अपु के लिए वैसा ही दूसरा खिलौना ले आता है। लेकिन बच्ची समझ जाती है कि वह कुत्ता नहीं है क्योंकि वह उससे बात नहीं कर रहा है। इससे उसका दिल टूट जाता है।



### APPUVIN NAYAGAN SPOTTY (MY HERO)

Tamil/18 min/35mm/Colour

**Producer:** A.V. Anoop **Director:** Madhavan **Screenplay:** Indira Parthasarathy **Editing:** Kavi Viswanathan **Cinematography:** Rajasekhar

The film is about the close relationship between child Apu,

her toy dog Spotty and her grandfather. Apu almost treats the toy dog as her alter ego and shares all her secrets with it. One day she leaves the toy in her grandfather's care and goes to school. He misplaces it and tries to replace it with a replica hoping the child will not be able to make out the difference. But the child is heart-broken. It's not her toy dog because it doesn't talk to her.

## दि असेसिनेशन आफ राजीव गांधी— ए रिकंस्ट्रक्शन

अंग्रेजी / 49 मिनट / 35एमएम / संगीन

निर्माता : फिल्म प्रभाग निर्देशक :  
आर.के. कृष्णमोहन छायांकन : एन.  
स्टैनले अनिल रानाडे, वी.सुकुमारन  
संपादन : एम.ए.भोसले, एन.डी.नाइक,  
सुरेश दंडवते ध्वनि आलेखन: टी.ए.  
मंजुनाथ

फिल्म में राजीव गांधी की हत्या के मामले का चित्रण है जिसमें मामले की जांच और मुकदमे की बारीकियों को समझाया गया है।



### **THE ASSASSINATION OF RAJIV GANDHI— A RECONSTRUCTION**

*English/49min/35mm/Colour*

**Producer:** Films Division  
**Director:** R. Krishna Mohan  
**Cinematography:** N. Stanley, Anil

**Ranade, V. Sukumaran Editing:**  
M.A. Bhosle, N.D. Naique, Suresh  
Dandavate **Audiography:** T.A.  
Manjunath

The film follows the Rajiv Gandhi assassination case, attempting to offer an insight into the investigations and the trial.

## बोलीआए पिताएर सोहोकी सूतल

असमिया और बोडो/125  
मिनट/वीडियो/रंगीन

**निर्माता :** अननोन फिल्मस और सुशांत राय **निर्देशन और पटकथा:** अलताफ मज़ीद **छायांकन :** जान खटोला, देवव्रत चालिहा, जानसन दास, सूरज दुआरा, **संपादन :** अरिदम घटक **ध्वनि आलेखन:** शुभादीप सेनगुप्ता

असम में पगलाडिया नदी के दक्षिण में बसे 126 गांवों के साढ़े छह लाख लोगों तथा सोरेन बोरो के लिए यह नदी भगवान की तरह है जिसे वे 'पगला बाबा' कहते हैं। ये लोग साल भर नदी की धारा को दक्षिण की ओर धकेलने में लगे रहते हैं। इसके लिए वे 1920 के दशक से अब तक स्थानीय सामग्री—शहतीर, पत्थर, रेत, पेड़, घास—फूस, तिरपाल, प्लास्टिक आदि के इस्तेमाल से 13 तटबंध बना चुके हैं। इस समूचे काम को चलाने का काम 1954 से एक सोसायटी कर रही है।

तटबंध की मरम्मत के दौरान सोरेन को अपनी पत्नी की बीमारी की खबर मिलती है। वह घर पहुंचता है तो उसकी पत्नी प्रसव पीड़ा में होती है। वह बेटे को जन्म देती है। तब तक गांव वाले तटबंध का काम पूरा कर लेते हैं और पानी छोड़ने की तैयारी कर रहे होते हैं। अगली सुबह जब पानी सोरेन के घर तक पहुंचता है तो उसकी पत्नी अपने नवजात शिशु का प्रथम स्नान पगला बाबा के जल से करती है।



## BOLLY PITAIER SOHOKI SOOTAL

*Assamese and Bodo/125 min/video/  
colour*

**Producer:** Unknown Films and Susanta Roy **Director:** Altaf Mazid **Screenplay:** Altaf Mazid **Cinematography:** Jaan Khatola, Debobrot Chaliha, Johnson Dass, Suraj Duara **Editing:** Arindam Ghatak **Audiography:** Subhadeep Sengupta

For Soren Boro and 6,50,000 people living in the 126 villages in the southern side of River Pagladia of Assam, the river is a living God called "Pagla Baba". Round the year they remain engaged in pushing the river

down south. Since the 1920s they have constructed 13 embankments with local materials. This entire arrangement has been getting maintained and regulated by a society since 1954.

During the repair of bund, Suren gets the news that his wife has fallen sick. He returns home to find his wife in labour. She gives birth to a son. Meanwhile, the villagers have nearly completed repairing the bund and are preparing to flow the water. Next morning, when the water reaches the channel near Suren's house, his wife performs ablutions of the new born baby with the water of Pagla Baba.

## बुरु गारा

हिंदी / 29 मिनट 29 सैकेंड / वीडियो /  
रंगीन

**निर्माता :** पब्लिक सर्विस ब्राडकास्टिंग ट्रस्ट **निर्देशक :** श्री प्रकाश छायांकन: संजय कुमार **संपादन :** विक्रम, श्री प्रकाश **ध्वनि आलेखन :** अरुण शर्मा

फिल्म में झारखंड की दो आदिवासी युवतियों दयामणि बारला और निर्मला पुतुल के संघर्ष और सफलता की कहानी चित्रित की गई है। ये युवतियां आदिवासी समाज को पेश आने वाले अन्याय व भेदभाव पर विजय प्राप्त करती हैं। यह लड़ाई वे कलम के माध्यम से जीतती हैं। दयामणि निपट गरीबी के माहौल से निकलकर मुंदड़ी में पहली स्वतंत्र महिला पत्रकार बनती है। वह घरेलू नौकरानी के तौर पर काम करते हुए अपनी एम.ए. की पढ़ाई पूरी करने के लिए हटिया रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म की रोशनी में पढ़ती है। उसने राज्य में कोएल कारो बांध के विरोध में चलाए गए आंदोलन में भी हिस्सा लिया। निर्मला संथाली भाषा की लेखिका है जो साहित्य अकादमी का पुरस्कार प्राप्त कर चुकी है। अमरीका के मेरीलैंड विश्वविद्यालय के छात्रों ने उनकी कविताओं को अंग्रेजी में अनुवाद करके एक पुस्तक का संपादन किया है।



## BURU GAARA

*Hindi/29 min 29 sec/Video/Colour*

**Producer:** PSBT **Director:** Shriprakash **Cinematography:** Sanjay Kumar **Editing:** Vikram, Shriprakash **Audiography:** Arun Sharma

The film explores the struggles and success stories of two "daughters of the soil" — Dayamani Barla and Nirmala Putul — from the tribal backyards of Jharkhand. It is about their triumph over the various forms of injustice meted out to the tribal community. They assert themselves through the all powerful pen. Dayamani rose

above acute poverty and forced migration to become the first independent woman journalist in Mundari. She earned her living as a domestic help, spent nights at the Hatia railway station to study in the light of the platform to acquire a Master's degree. She was also an active participant against the construction of Koel Karo dam in the state. Nirmala is a Santhali writer honoured by the Sahitya Academy. Her bold, stark and earthy poems tug at the heart-strings. Her poems have been translated and compiled in a book by students of Maryland University, USA.

## चिल्ड्रन आफ द पायर

हिंदी / 73 मिनट / 35एमएम / रंगीन

निर्माण, निर्देशन और छायांकन :

राजेश एस जाला संपादन : शीतल

कौल ध्वनि आलेखन: मतीन अहमद

संगीत : राय मेनेजेस

फिल्म में वाराणसी में मणिकर्णिका घाट पर जलती हुई चिताओं से अपना पेट पालने वाले 7 बच्चों के जीवन व संघर्ष की गाथा का मार्मिक चित्रण है। ये बच्चे लाशों के कफन इकट्ठा करके, चुराकर या छीन-झपट कर उन्हें बेचते हैं और घर का खर्च चलाते हैं। चिता की आग के ताप से ये बच्चे पक्के हो जाते हैं और विपरीत स्थितियों को झेलकर उनमें दृढ़ता आती है। जिंदा रहने की इस लड़ाई में वे हंसते, रोते, चिल्लाते और लड़ते-झगड़ते हुए हर दिन नई चुनौती से जूझते हैं और विजय प्राप्त करते हैं।



## CHILDREN OF THE PYRE

*Hindi/73 min/Digital Video/Colour*

**Producer, Direction and Cinematography:** Rajesh S. Jala  
**Editing:** Sheetal Koul  
**Audiography:** Mateen Ahmad  
**Music:** Roy Menezes

Children of Pyre is a compelling narrative by seven children on their life and their struggles to

make a living out of the dead on the Manikarnika Ghat in Varanasi. They gather, snatch and steal used coffin shrouds and sell them for petty amounts to ensure their own and their family's survival. These imps are tempered by the heat of the pyre and strengthened in the face of adversities. Laughing, weeping, fighting, shouting, they run a race for survival, and win it again and again, day after day.

## डिस्टैंट रंबलिंग्स

अंग्रेजी, /22 मिनट/वीडियो/रंगीन  
तथा आंशिक रूप से श्वेत श्याम

निर्माता, रोंगसेनकला निर्देशन : बानी  
प्रकाश दास पटकथा : प्रदीप गोगोई  
छायांकन : सचिन दास तथा प्रदीप  
सेनगुप्ता संपादन : मानस अधिकारी  
संगीत: शेर चौधरी कथन : स्वप्ननील  
बरुआ

द्वितीय विश्व युद्ध दुनिया के विभिन्न हिस्सों में लड़ा गया था। भारत-म्यांमार सीमा पर पूर्वोत्तर भारत भी एक युद्ध क्षेत्र था जहां बलशाली और संगठित संयुक्त सेनाओं के साथ जापान की जोरदार झड़प हुई। इस लड़ाई की कई निशानियां इस क्षेत्र में अभी तक फैली हुई हैं और लड़ाई के 60 वर्ष बाद इस बारे में जांच करने के लिए एक मिशन यहां आया। इसका मुख्य उद्देश्य पूर्वोत्तर के जंगलों में बिखरे युद्ध के मलबे का पता लगाना था, किंतु इस मिशन को हथियारों, तोपों आदि के टुकड़ों के साथ-साथ लोगों में एक तरह की पराजय और विषाद के रूप में मानसिक टूटन भी देखने को मिली। फिल्म अतीत की गलतियों से सीख लेने और शांति के लिए काम करने का संकल्प लेने का संदेश देती है।



## DISTANT RUMBLINGS

*English/22min/Video/Colour and partly Black and White*

**Producer:** Rongsenkala **Director:** Bani Prakash Das **Screenplay:** Pradeep Gogoi **Cinematography:** Sachin Das, Pradip Sengupta **Editing:** Manas Adhikari **Music:** Sher Choudhury **Narration:** Swapnaneel Baruah

World War II, the most destructive episode in human history, was fought on multiple fronts. North East India became a crucial battle

ground on the Indo-Burma front where the Japanese faced the tough and unwavering Allied Forces. The war left its indelible mark and, more than 60 years later, the same place was revisited by a fact finding mission. The primary objective was to find the war wreckage lying in the jungles of the North East. Ironically, they also found mental wreckage in the form of a lingering sense of loss and melancholia. The film emphasises the importance of learning from our past mistakes and of pledging ourselves to a peaceful world.



## फीमेल न्यूड

हिंदी / 26मिनट / वीडियो / रंगीन

निर्माता : पब्लिक सर्विस ब्रॉडकास्टिंग ट्रस्ट निर्देशक: हेम ज्योतिका और देवी प्रसाद मिश्र छायांकन : मोहम्मद तारिक, नरेंद्र रवि भारती संपादन : प्रवीण चंदेल कथन : कृष्णा देवी ध्वनि आलेखन : विवेक प्रियदर्शन, प्रवीण चंदेल

फ़िल्म में दर्शना उर्फ कृष्णा की कहानी का चित्रण है जो चित्रकारों तथा मूर्तिकारों के लिए मॉडल के रूप में नग्नतावस्था में पेश होकर अपनी आजीविका चलाती हैं। उसे बहुत कम मेहनताना मिलता है और इन कलाओं की प्रदर्शनियों में उसे कभी नहीं बुलाया जाता। फिल्म में पुरुष के दृष्टिकोण का भी चित्रण है क्योंकि दर्शना पुरुषों की मिथ्य कल्पनाओं का भी माध्यम बनती है। उसे पति ने छोड़ दिया है और अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करते हुए उसे आवारा मर्दों से भी खुद को बचाना होता है।



### THE FEMALE NUDE

*Hindi/26 min/Video/Colour*

**Producer:** Public Service Broadcasting Trust **Director:** Hemjyotika and Devi Prasad Mishra **Cinematography:** Md Tariq, Narendra, Ravi Bharti **Editing:** Praveen Chandel **Narration:** Krishna Devi **Audiography:** Vivek Priyadarshan, Praveen Chandel

The film is about Darshana, alias Krishna, who lives in a slum and earns a living by posing nude for painters and sculptors. Her wages are ridiculously low and she has never been invited to any of the exhibitions. The film is also about attitudes, how she is an easy object of male fantasies. She has been abandoned by her husband and has to protect herself from stalkers in her struggle for survival.

## कर्ण मोचम

तमिल / 13 मिनट / 35एमएम / रंगीन

निर्माता : एम जी आर फिल्म एवं टेलीविज़न इंस्टीट्यूट निर्देशन और पटकथा : एस. मुरली मनोहर छायांकन: जी. शिवरामन संपादन : वी.गोपी ध्वनि आलेखन : जी. मुथुरामन

गोविंदन तमिलनाडु में गली-मोहल्लों में खेले जाने वाले लोक नाटक थेरु कोचू का कलाकार है जो महाभारत के पात्र दानवीर कर्ण की भूमिका निभाने में पारंगत हो गया है। उसे नाटकों में काम करने का मामूली सा मेहनताना मिलता है लेकिन कलाकार के रूप में उसके मन में गर्व का भाव है। फिल्म में देश में परंपरागत कला शैलियों में लगातार आ रही गिरावट को दर्शाया गया है। फिल्म में गोविंदन और उसके द्वारा निभाए जाने वाले पात्र कर्ण के स्वभाव की तुलना भी की गई है।



## KARNA MOTCHAM

Tamil/13 min/35mm/Colour

**Producer:** MGR Film and TV Institute **Direction and Screenplay:** S. Murali Manohar **Cinematography:** G. Sivaraman **Editing:** V. Gopi **Audiography:** G. Muthuraman

Govindhan a theru koothu (a folk theatre art form in Tamil Nadu

which is used to perform on the streets) artist, specializes in the role of Karna – The Donor. He happens to receive a meager amount as guru dhakshana, but gets the sense of gratification as an artist. This theme establishes the declining era of the traditional art form in the country. It also helps establish parallels between the nature of Govindhan and the character he plays, ie Karna .

## लैंड आफ रुपशुपाज

अंग्रेजी / 34 मिनट / वीडियो / रंगीन

निर्माता : फिल्म प्रभाग निर्देशन और  
छायांकन : ए.के. सिद्धपुरी संपादन :  
डी.डी. मोरे ध्वनि आलेखन: एफ.ए.  
वारिस, प्रमोद कुमार

रुपशुपाज लद्दाख की बर्फीली रुपशु  
घाटी में बसी जाति है। फिल्म में इस  
जाति के इतिहास, उसके संघर्षपूर्ण  
जीवन और पशुधन पर गहराई से प्रकाश  
डाला गया है।



## THE LAND OF RUPSHUPAS

*English/34min/Video/Colour*

**Producer:** Films Division **Director  
and Cinematography:** A.K.  
Sidhpuri **Editing:** D.D. More  
**Audiography:** F.A. Waris, Pramod  
Kumar

Rupshupas is a rapidly dwindling nomadic community that inhabits the isolated, intensely cold desert mountain region of Rupshu Valley in Ladakh. The land of Rupshupas is an ethnographic film about the community and their "livestock of Gods".

## लॉस्ट एंड फाऊंड

मराठी, हिंदी और अंग्रेजी/30

मिनट/वीडियो/रंगीन तथा

श्वेत-श्याम

निर्माता : टेलरमेड फिल्मस निर्देशन

और पटकथा : हर्षवर्धन जी कुलकर्णी,

छायांकन : नवनीत मिस्सर संपादन :

कीर्ति नखवा ध्वनि आलेखन : परीक्षित

ललवानी, संगीत : विक्रम घोष

यह फिल्म मूलतः एक यात्रा वृत्तान्त है जिसमें महाराष्ट्र के खूबसूरत समुद्रतटों और मनोरम घाटों की झलक मिलती है। इसमें स्थानीय लोगों के जीवन, संस्कृति और समाज के दर्शन होते हैं। यह सारी जानकारी एक बोतल के माध्यम से दी गई है। बोतल विभिन्न प्रकार के चरित्रों से संपर्क के ज़रिए यह संदेश देती है कि लोभ, लालच, वासना के बीच भी आशा, और प्यार ज़िंदा रहता है तथा असंख्य बाधाओं के बावजूद जीवन आगे बढ़ता जाता है।



## LOST AND FOUND

*Marathi, Hindi and English/30 min/  
Video/Colour and Black & white*

**Producer:** Tailormade Films

**Direction and Screenplay:**

Harshavardhan G. Kulkarni

**Cinematography:** Navneet

Misser **Editing:** Kirti Nakhwa

**Audiography:** Parikshit Lalvani

**Music:** Bickram Ghosh

*Lost And Found* is essentially a travelogue through the pristine

beaches and beautiful coasts of Maharashtra. It showcases the local culture and society and also makes us take a peek into the lives of the residents. The means of this interaction with the common people is a bottle. Through the various characters it meets this bottle experiences hope in the midst of greed, love in spite of lust, life in all its disruptions and continuities.

## नरमीन

हिंदी और पंजाबी / 18मिनट /  
35एमएम / रंगीन

**निर्माता :** भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान **निर्देशन और पटकथा :** दीप्ति गोगन **छायांकन :** गोगीनेनी रंगनाथ **बाबू संपादन :** अंतरा लाहिड़ी **ध्वनि आलेखन :** माणिक बतरा

फिल्म में विभाजन के कठिन दौर में व्यक्ति की पहचान और मानवता के नष्ट हो जाने की कहानी चित्रित की गई है। इसमें गहरे लगाव और स्मृतियों को दर्शाया गया है। विभाजन की घड़ी करीब है। एक युवा महिला नूर अपनी बेटी की मौत से दुखी है और वास्तविकता से बेखबर बेहोशी जैसी हालत में है। एक सिक्ख अपने जवान बेटे के साथ उसके पड़ोस में आकर रहने लगता है। पाकिस्तान से लौटते हुए एक नरसंहार में उसकी पत्नी की हत्या कर दी गई। नूर सिक्ख के बेटे के प्रति आकर्षित होती है लेकिन उसका बाप इस दोस्ती को नाकाम कर देता है। क्या सामूहिक पागलपन के इस दौर में मानवता की विजय होगी ?



## NARMEEN

*Hindi and Punjabi/18 min/35mm/  
Colour*

**Producer:** FTII **Direction and Screenplay:** Dipti Gogna **Cinematography:** Gogineni Ranganath Babu **Editing:** Antara Lahiri **Audiography:** Manik Batra

The story is about the loss of identity and humanity in the trying times of the Partition. It is about memories and attachments.

The partition is drawing close. Noor is a young woman grieving the death of her daughter, living in a trance like state, removed from the reality. A Sikh man shifts in the neighbourhood with his young son. He has lost his wife in one of the massacres while migrating from Pakistan. Noor takes a liking for the son but her attempts to befriend him are thwarted by the father. Will humanity prevail in the times of collective madness?

## पोलियो वर्सिस पोलियो विकिटम्स

अंग्रेजी, हिंदी, मराठी/8 मिनट 30  
सैकंड/वीडियो/ रंगीन

निर्माता : गुलशन सचदेवा निर्देशन,  
संपादन, कथन : अमन सचदेवा  
पटकथा : अमन सचदेवा, जेनोबिया  
सम्राट छायांकन : संदीप घोषाल  
ध्वनि आलेखन : संतोष मोरे संगीत :  
डेरिक गोम्स

पोलियो से पीड़ित कुछ लोग स्लम  
बस्तियों में पोलियो की दवा पिलाने  
और आने वाले पल्स पोलियो दिवस के  
बारे में जागरूकता पैदा करने का बीड़ा  
उठाते हैं। वे 8,83,184 बच्चों को पोलियो  
बूथों में पहुंचाने में सफल होते हैं और  
खुद विकलांग होते हुए भी इस अभियान  
में शामिल होने पर गर्व महसूस करते  
हैं। इन उत्साही लोगों के प्रयास से 9  
नवम्बर 2008 को पोलियो की दवा  
पीने वाले बच्चों की संख्या सबसे अधि-  
क थी।



### POLIO VS POLIO VICTIMS

*English, Hindi and Marathi/8min 30  
sec/Video/Colour*

**Producer:** Gulshan Sachdeva  
**Direction, Editing and Narration:**  
Aman Sachdeva **Screenplay:**  
Aman Sachdeva, Zenobia, Samrat  
**Cinematography:** Sandip  
Ghoshal **Audiography:** Santosh  
More **Music:** Derrick Gomes

An enthusiastic team of polio victims volunteers to spread awareness in the slums about polio immunization and the approaching Pulse Polio Day. Struggling with their own handicap they feel proud of having participated in the campaign that helped get 883184 children to the booths. On November 9, 2008 the turnout for the immunization was at a record high.

## प्रिंस एंड दि क्राउन आफ स्टोन्स

अंग्रेज़ी/29 मिनट/वीडियो/ संगीन

निर्माता : बाल चित्र समिति, भारत  
निर्देशक और कार्टूनकार : गौतम  
बेनेगल छायांकन : सिनेमैजिक  
संपादन: असीम सिन्हा संगीत : राजेश  
राय

हीरोकपुर राज्य का राजकुमार हिरोण्मय अपने पिता और शक्तिशाली राजा रुद्रप्रताप को छोड़कर घर से निकल जाता है। अपने गुरु से आदर्श कहानियां सुनकर राजकुमार को अच्छा बनने की प्रेरणा मिलती है और वह आम लोगों को न्याय दिलाने के लिए महल से भाग निकलता है। लेकिन उसे आम लड़का समझकर राज्य के कर्मचारी पकड़ लेते हैं और हीरों की खानों में ले जाया जाता है जिनका मालिक उसका जालिम पिता राजा रुद्रप्रताप ही है। वहां उसे दूसरे कैदियों की तरह कड़ी मशक्कत करनी पड़ती है। राजकुमार का गुरु भी उसी खान में बंद है। वह राजकुमार को बचाता है और साथ ही अन्यायी और अत्याचारी राजा की आंखें खोलता है।



## PRINCE AND THE CROWN OF STONES

English/61min/35mm/Colour

**Producer:** Children's Film Society,  
India **Director and Animator:**  
Gautam Benegal  
**Cinematography:** Cinemagic  
**Editing:** Aseem Sinha **Music:**  
Rajesh Roy

Spoilt prince Hironmoy of Hirokpur has run away from his father, the powerful King Rudrapratap. A wise teacher's

stories about good kinship inspire the little prince and he leaves his palace determined to dispense justice among his people. But things take an ominous turn when he is captured and mistaken for an ordinary boy, taken down to diamond mines owned by none other than his own cruel father and put to work there with the other helpless subjects. Now the teacher, who is himself enslaved in the mines, must save the little prince and, in the process, open the pitiless King's eyes to reality.

## साना कीथेल

अंग्रेजी/19 मिनट/वीडियो/रंगीन

निर्माता : इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला  
केन्द्र निर्देशन : बाचस्पतिमायुम सुंजु  
छायांकन : साइखोम रतन; संपादन :  
चाओबा थियम

मणिपुर में लगने वाला कीथेल या बाजार सिर्फ एक बाजार नहीं है। यह महिलाओं के लिए एक विशेष स्थान है जहां उनमें बहनापा बढ़ता है और एकता मजबूत होती है। यहीं से वे राज्य के सामाजिक व राजनीतिक जीवन में अपना प्रभाव बढ़ाती हैं। इस तरह पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं की भूमिका तय करने में कीथेल का विशिष्ट योगदान है। फिल्म में मणिपुर में महिलाओं के इस प्रसिद्ध बाजार के इतिहास का चित्रण किया गया है। इसमें 2005 में मणिपुर आवास और शहरी विकास बोर्ड द्वारा उसे गिराए जाने तक की घटनाओं को दर्शाया गया है।



## SANAKEITHEL

English/19min/Video/Colour

**Producer:** IGNC A **Director:**  
Bachaspatimayum Sunzu  
**Cinematography:** Saikhom Ratan  
**Editing:** Chaoba Thiyam

Keithel or a market in Manipur is much more than a market. It is an exclusive space for women where the solidarity of their group is

strengthened. From here women assert their influence in the socio-political affairs of the state. A Keithel, then, is a remarkable testimony of women's role in a patriarchal society. The documentary traces the evolution of the famous women's market of Manipur till its demolition by Manipur Housing and Urban Development Authority in 2005.



## शिंगनाबा

मणिपुरी / 27 मिनट / वीडियो / रंगीन

निर्माता और निर्देशक :  
बाचस्पतिमायुम सुंजु; छायांकन :  
साइखोम रतन संपादन : चाओबा थियम

फिल्म में एड्स/एच.आई.वी से जुड़े बहुत से भ्रम और गलत फहमियाँ दूर करने की कोशिश की गई है। इसमें एड्स से पीड़ित एक व्यक्ति के मशहूर बाडी बिल्डर बनने की कहानी चित्रित की गई है। एच.आई.वी से ग्रस्त खुद्राकपम प्रदीपकुमार मौत की घड़ियाँ गिन रहा था लेकिन वह ठीक हो गया और बाडी बिल्डिंग की कोशिश में लग गया। मानवीय चेतना में उसकी गहरी आस्था है। वह मानता है कि इस बीमारी के कलंक और भेदभाव से लड़ना सचमुच एक चुनौती है जिसका सामना व्यक्तिगत स्तर से अधिक सामूहिक स्तर पर किया जाना चाहिए।



## SHINGNABA

Manipuri/27 min/Video/Colour

**Producer and Direction:**  
Bachaspatimayum Sunzu  
**Cinematography:** Saikhom Ratan  
**Editing:** Chaoba Thiyam

Shingnaba challenges the many misperceptions and preconceptions regarding HIV/AIDS. It's about a HIV positive

person's inspiring success at body-building. Death was only a matter of time for HIV positive Khundrakpam Pradipkumar but he recovered and took to body-building. He believes in the power of human spirit but admits that overcoming stigma and discrimination is a challenge that has to be confronted collectively than individually.

## स्टेशन्स

हिंदी, मराठी, अंग्रेजी/18 मिनट/35 एम एम/रंगीन

निर्माता : भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान निर्देशन और पटकथा : इमेन्युएल पालो छायांकन : कौशिक मंडल संपादन : मनोज कन्नोथ ध्वनि आलेखन : दारासिंह संगीत : बापी तुतुल

फिल्म में मानव जीवन के अनेक पड़ावों यानी स्टेशनों का चित्रण किया गया है जिनसे गुजर कर उसे आगे बढ़ना होता है। ये हैं जीवन और मृत्यु, संबंध, विवाह, विस्थापन, पलायन, घर वापसी आदि। इसमें ऐसे लोगों की कहानी चित्रित की गई जिनके रिश्तों में दरारें रहती हैं और भावनात्मक दृष्टि से उदासीन हो जाने के कारण वे अपने आप को आसपास की दुनिया के अनुकूल नहीं मानते। इसमें शहरी जीवन में पनप रहे एकीकीपन, अलगाव और मेल-मिलाप के साथ-साथ उन लोगों का चित्रण है जो नए ठिकानों और नए जीवन की तलाश में रहते हैं। यह चरित्रप्रधान फिल्म तीन पात्रों पर केन्द्रित है जिनका जीवन शहर में एक दूसरे से टकरा जाता है। उनका यह साथ क्षणिक लेकिन बहुत ही भावपूर्ण होता है।



## STATIONS

Hindi, Marathi and English/18 min/  
35mm/Colour

**Producer:** Film and Television Institute of India **Direction and Screenplay:** Emmanuel Palo **Cinematography:** Kaushik Mandal **Editing:** Manoj Kannoth **Audiography:** Dara Singh **Music:** Bapi-Tutul

The film is about the various stations in life that people go through—birth and death, rites of passage, relationships, marriage,

dislocation, migration and homecoming. It is the story of dysfunctional relationships, of emotionally detached people who are unable to fit in the world around them. It is about urban alienation, isolation and assimilation, of characters moving to new settings and new life. The character-centred narrative focuses on three people whose lives intersect one day in the city. The connections between them might be fleeting but passionate.

## थ्री आफ अस

मूक / 14 मिनट / 35 एम एम / रंगीन

निर्माता : भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान निर्देशन और पटकथा : उमेश विनायक कुलकर्णी; छायांकन : शरीका बदर खान संपादन : अभिजीत देशपांडे ध्वनि आलेखन और संगीत : अनमोल भावे

40 वर्षीय योगेंद्र गंभीर रूप से विकलांग है और चारपाई पर ही पड़ा रहता है। उसके बूढ़े मां-बाप उससे बेहद प्यार करते हैं लेकिन उन्हें यही चिंता सताए रहती है कि उनके मरने के बाद उनके बेटे का क्या होगा। एक कमरे के मकान में वे सब मिलकर जिंदगी का खेल खेलते रहते हैं। फिल्म में छोटे से परिवार की दृढ़ आस्था और जिजीविषा का मार्मिक चित्रण है।



### THREE OF US

*Silent/14 min/35mm/Colour*

**Producer:** Film and Television Institute of India, Pune **Direction and Screenplay:** Umesh Vinayak Kulkarni **Cinematography:** Shariqua Badar Khan **Editing:** Abhijeet Deshpande **Audiography and Music:** Anmol Bhave

Forty-year-old Yogendra is severely disabled and confined to his metal cot. His aging parents love him infinitely but are afraid of what would happen to him after they are gone. Together they play the game of survival in a single room where they live. The film is a touching tale of the indomitable spirit of the Thakar family.

## ट्रिप

अंग्रेजी / 9 मिनट / वीडियो / रंगीन

निर्माता : भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान निर्देशन और पटकथा : इमेन्युएल पालो छायांकन : कौशिक मंडल संपादन : मनोज कन्नोथ ध्वनि आलेखन : अनिल आर

भारतीय रेलवे विश्व का सबसे बड़ा रेल नेटवर्क है जिससे हर रोज लाखों लोग यात्रा करते हैं। फिल्म में इस बात की ओर ध्यान दिलाया गया है कि इसी प्रणाली की रेल लाइनों के आसपास एल्युमीनियम और प्लास्टिक जैसे न गलने वाली वस्तुओं का लाखों टन मलबा जमा होता है जो हमारे पर्यावरण को दूषित बनाता है।



## TRIP

English/9min /Video/Colour

**Producer:** Film and Television Institute of India **Direction and Screenplay:** Emmanuel Palo **Cinematography:** Kaushik Mandal **Editing:** Manoj K **Audiography:** Anil R.

The Indian Railway is the most extensive railway system in the world with millions of passengers commuting by train everyday. But tons of aluminium, plastic and other non-biodegradable waste is also dumped along rail tracks and the beauty of the Indian landscape scarred.

## विठ्ठल

मराठी / 24 मिनट / वीडियो / रंगीन

निर्माता : न्यू मून फिल्म्स और मनु पुष्पेंद्रन निर्देशन, पटकथा और संपादन : वीनू चोलीपरंबिल छायांकन: नवनीत मिस्सर ध्वनि आलेखन : तपस नायक संगीत : गोपी सुंदर

विठ्ठल बहुत गुस्से में है, क्योंकि हिंदू विधि के अनुसार उसके दादा की मृत्यु होने पर उसके मां-बाप ने उसके सिर के बाल कटवा दिए हैं। इससे विठ्ठल के दिल पर गहरी चोट लगी है। 12 साल के इस बच्चे की उदासी और क्रोध को शांत करने के सारे प्रयास विफल हो जाते हैं। फिल्म में एक बालक के मनोभावों के माध्यम से यह दर्शाया गया है कि किस तरह कभी-कभी मां-बाप बच्चों की जरूरतों को न समझकर उन पर अपनी इच्छाएं थोप देते हैं।



## VITTHAL

Marathi/24min/Video/Colour

**Producer:** New Moon Films and Manu Pushpendran **Direction, Screenplay and Editing:** Vinoo Choliparambil **Cinematography:** Navneet Misser **Audiography:** Tapas Nayak **Music:** Gopi Sundar

Vitthal is very angry. Following the death of his grandfather, according to the Hindu death

rituals, Vitthal's parents have shaved off his head. For Vitthal, his world has shattered. Nothing can pacify the mind of this 12-year-old and stop him from feeling humiliated, isolated and angry. The director explores the world through the point of view of a child and portrays the lack of sensitivity shown at times by parents towards the need of a child.

## वेन दिस मैन डाईज

अंग्रेजी और हिंदी/22 मिनट/35 एम  
एम /रंगीन

निर्माता : भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन  
संस्थान निर्देशन और पटकथा : अरुण  
सुकुमार छायांकन : जयकृष्ण गुम्मादी  
संपादन : दीपिका कालड़ा ध्वनि  
आलेखन : अनिल आर संगीत :  
जॉन पी वर्की

एक दफ्तर में काम करने वाले व्यक्ति  
के जीवन में तब भूचाल आ जाता है  
जब उसे किसी मृत व्यक्ति का पत्र  
मिलता है जो उसके नाम काफी धन  
छोड़ गया है। उसे नियमित रूप से  
धन मिलने लगता है तो उसका रोजमर्रा  
का जीवन बदलने लगता है और देखते  
ही देखते उसकी पूरी जिन्दगी बदल  
जाती है।



## WHEN THIS MAN DIES

*English and Hindi/22 min/35mm/  
Colour*

**Producer:** Film and Television  
Institute of India, Pune **Direction  
and Screenplay:** Arun Sukumar  
**Cinematography:** Jayakrishna  
Gummadi **Editing:** Dipika Kalra  
**Audiography:** Anil R **Music:** John  
P. Varkey

The monotony of an office worker's life is disrupted when he receives a letter offering him the money bequeathed to him by a dead man. As these letters and the promised money get delivered regularly, his daily life patterns start to alter and so does his lifestyle.

## ACKNOWLEDGEMENTS

- (1) Editorial research and inputs (English) .... *Namrata Joshi*
- (2) Translation (Hindi)...*Subhash Setia*
- (3) Cover Design....*Sanket Communications Pvt Ltd*
- (4) Dadasaheb Phalke sketch..... *Sanjeev Kulshrestha, National Highways Authority of India*
- (5) Pictures of V K Murthy.... *Uma Rao (Bisilu-Kolu), Srinivasa Murthy (Kanthi Photos), B.R. Vishwanath and G.S.Bhaskar*
- (6) Pictures of past Dadasaheb Phalke Awardees.... *Vijay Jadhav, National Film Archives of India, Pune*

